हिन्दी दैनिक

अमर ख्याल

जुनून सच का

(महमूदाबाद) सीतापुर से प्रकाशित

सूर्योदय : 06.26 बजे

सूर्यास्त : 05.34 बजे

रविवार, 27 नवम्बर 2022

वर्ष-2-अंक 329

मूल्य 2 पृष्ठ 8

e-mail: aknewstv2@gmail.com

RNI TITLE CODE : UPHIN49345

ख़ास ख़बर

न्यायपालिका में महिलाओं को अधिक प्रतिनिधित्व मिले

नई दिल्ली। कानून मंत्री किरेन रीजीजू ने शनिवार कहा कि पिछले 70 वर्षों में न्यायपालिका में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है, लेकिन उच्चतर न्यायपालिका में विविधता लाने के लिए अभी काफी दूरी तय की जानी बाकी है। उच्चतम न्यायालय में संविधान दिवस समारोहों के समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने महिलाओं एवं बच्चों से जुड़े अपराधों से निपटने के लिए कई त्वरित (फास्ट ट्रैक) विशेष अदालतें गठित करने की जरूरत पर भी जोर दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ राज्य इस मुद्दे पर आगे नहीं बढ़े हैं।

दिग्गज अभिनेता विक्रम गोखले का निधन

पुणे। दिग्गज अभिनेता विक्रम गोखले का शनिवार को शहर के एक अस्पताल में निधन हो गया। अस्पताल के अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

गोखले 77 साल के थे और स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों के बाद उन्हें यहां दो सप्ताह पहले दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अस्पताल ने एक बयान में कहा, हमें यह घोषणा करते हुए बेहद दुख हो रहा है कि प्रसिद्ध अभिनेता विक्रम गोखले का आज दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल में निधन हो गया। उनके कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया था।

गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि हो सकते हैं मिस्र के राष्ट्रपति

नई दिल्ली। मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फत्ताह अल-सिसी अगले साल भारत के गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हो सकते हैं। ऐसा समझा जाता है कि विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पिछले महीने काहिरा की अपनी आधिकारिक यात्रा के दौरान अल-सिसी को औपचारिक निमंत्रण दिया था। यह पहली बार होगा जब मिस्र का कोई राष्ट्रपति गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल होगा।

विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका को एक सोच रखने की जरूरत : मुर्मू

एजेंसी ■ नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शनिवार को कहा कि विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को देश और देशवासियों के लिए समान सोच रखने की आवश्यकता है। उच्चतम न्यायालय द्वारा यहां संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के समापन समारोह को संबोधित करते हुए मुर्मू ने मामूली अपराधों के लिए वर्षों से जेलों में बंद गरीब लोगों की मदद करके वहां कैदियों की संख्या कम करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा, कहा जाता है कि जेलों में कैदियों की भीड़ बढ़ती जा रही है और और जेलों की स्थापना की जरूरत है। क्या हम विकास की ओर बढ़ रहे हैं? और जेल बनाने की क्या जरूरत है? हमें उनकी संख्या कम करने की जरूरत है। मुर्मू ने कहा कि जेलों में बंद इन गरीब लोगों के लिए कुछ करने की जरूरत है। उन्होंने कहा, आपको इन लोगों के लिए कुछ करने की जरूरत है। कौन हैं ए लोग जो जेल में हैं? वे मौलिक अधिकारों, प्रस्तावना या मौलिक कर्त्तव्यों को नहीं जानते हैं। देश के प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़ और केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री किरेन रीजीजू भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। राष्ट्रपति ने कहा, सरकार के तीन अंगों - विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की देश और देशवासियों के वास्ते एक सोच होनी चाहिए। मुर्मू ने कहा, हमारा काम लोगों (जेल में बंद गरीब विचाराधीन कैदियों) के बारे में सोचना है। हम सभी को सोचना होगा और कोई न कोई रास्ता निकालना होगा... मैं यह सब आप पर छोड़ रही हूं। उन्होंने कहा कि ए लोग किसी को थप्पड़ मारने या इसी तरह के छोटे-मोटे अपराधों के लिए जेलों में बंद हैं और इनमें से कुछ प्रावधान ऐसे मामलों में लागू नहीं होते हैं। राष्ट्रपति ने कहा, मैं एक बहुत छोटे से गांव से आती हूं। जहां मैं पैदा हुई थी, वहां के लोग तीन लोगों को भगवान मानते थे - शिक्षक, डॉक्टर और वकील। मुर्मू ने कहा कि लोग अपने परिवार के सदस्यों को जेलों से मुक्त नहीं करवा पाते क्योंकि उन्हें लगता है कि इसके लिए उन्हें अपनी संपत्ति और घर के बर्तन बेचने होंगे। उन्होंने कहा कि वही कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बहुत कुछ करते हैं, यहां तक कि दूसरों को मार भी देते हैं, लेकिन वे खुलेआम घूम रहे हैं।

नागरिकों की पहली प्राथमिकता मौलिक कर्तव्यों का पालन होना चाहिए: मोदी

एजेंसी ■ नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि ऐसे में जबकि देश अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर बढ़ रहा है, राष्ट्र को और अधिक ऊंचाई पर ले जाने के लिए मौलिक कर्तव्यों का पालन करना नागरिकों की पहली प्राथमिकता होना चाहिए। उच्चतम न्यायालय में संविधान दिवस समारोह को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है जो तेजी से विकास और आर्थिक वृद्धि हासिल कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि देश अगले हफ्ते जी-20 की अध्यक्षता ग्रहण करने वाला है और यह भारत के लिए दुनिया के समक्ष अपना योगदान पेश करने का एक बड़ा अवसर है।

मोदी ने कहा, टीम इंडिया के रूप में, हमें विश्व मंच पर भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने की दिशा में काम करना चाहिए और दुनिया में देश के योगदान को उजागर करना चाहिए। यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि उन्हें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि लोकतंत्र की जननी के रूप में देश अपने प्राचीन आदर्शों और संविधान की भावना को मजबूत कर रहा है और जनहितकारी नीतियां देश के गरीबों और महिलाओं को सशक्त बना रही हैं।

मोदी ने कहा, संविधान की प्रस्तावना के पहले तीन शब्द - वी द पीपल (हम लोग) - एक आह्वान, विश्वास और शपथ हैं।

संविधान की यह भावना भारत की आत्मा है जो दुनिया में लोकतंत्र की जननी है। आधुनिक समय में, संविधान ने राष्ट्र की सभी सांस्कृतिक और नैतिक भावनाओं को अपनाया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत अपनी स्थिरता को लेकर शुरुआती आशंकाओं को दरकिनार करते हुए पूरी ताकत से आगे बढ़ रहा है और अपनी विविधता पर गर्व कर रहा है।मोदी ने महात्मा गांधी का उल्लेख करते हुए कहा कि मौलिक अधिकार वे जिम्मेदारियां हैं जिन्हें नागरिकों को अत्यंत समर्पण और सच्ची ईमानदारी के साथ पूरा करना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने कहा, आजादी का अमृत काल देश के प्रति कर्तव्य का समय है। लोग हों या संस्थान, हमारे कर्तव्य हमारी पहली प्राथमिकता हैं।

उन्होंने कहा कि कर्तव्य के पथ पर चलकर देश विकास की नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकता है।

मोदी ने समानता और सशक्तिकरण जैसे विषयों की बेहतर समझ के लिए युवाओं में संविधान के बारे में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

संविधान सभा की महिला सदस्यों के योगदान पर शायद ही कभी चर्चा हुई : प्रधानमंत्री मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को अफसोस जताया कि संविधान सभा में महिला सदस्यों के योगदान पर शायद ही कभी चर्चा होती है वहीं उन्होंने युवाओं के संविधान को बेहतर ढंग से समझने की जरूरत पर जोर दिया। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और अन्य न्यायाधीशों की उपस्थिति में शीर्ष अदालत में संविधान दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भारत के संविधान और संस्थानों का भविष्य युवाओं के कंधों पर टिका है। मोदी ने कहा कि संविधान सभा में 15 महिला सदस्य थी, जिनमें से एक दक्षायिनी वेलायुधन वंचित समाज की थीं। प्रधानमंत्री ने कहा कि वेलायुधन ने दलितों और मजदूरों से संबंधित कई विषयों पर महत्वपूर्ण हस्तक्षेप किया।

मुकदमेबाजी प्रक्रिया को नागरिक केंद्रित बनाना आवश्यक, तकनीक को बढ़ाया जाना चाहिए

एजेंसी ■ नई दिल्ली

देश के प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़ ने शनिवार को कहा कि न्याय हासिल करने से संबंधित मुद्दों को हल करने के लिए संस्थागत सुधारों के साथ तकनीक का दायरा बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा कि मुकदमेबाजी प्रक्रिया को सरल बनाना और इसे नागरिक केंद्रित बनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि न्यायपालिका अदालतों के कामकाज में सुधार के लिए तकनीक को अपना रही है। उन्होंने कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि न्याय हासिल करने के वास्ते अदालतों तक पहुंचने के बजाय नागरिकों तक पहुंचने के लिए अदालतों को फिर से तैयार किया गया है। उच्चतम न्यायालय में संविधान दिवस समारोह को संबोधित करते हुए प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि देशभर के न्यायाधीशों को न्याय, समानता और स्वतंत्रता हासिल करने के संवैधानिक दृष्टिकोण पर विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि कानूनी पेशे और न्यायपालिका में हाशिए पर रहने वाले समुदायों और महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाया जाए।न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने समारोह के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई पहलों वर्चुअल जस्टिस क्लॉक , जस्टआईएस मोबाइल ऐप 2.0, डिजिटल कोर्ट और एस3डब्ल्यूएएस वेबसाइट के बारे में भी बात की। भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में एक संस्था के रूप में न्यायपालिका के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि न्याय वितरण प्रणाली सभी के लिए सुलभ हो।

ममता ने लोगों से संविधान की रक्षा करने की अपील की

कोलकाता। प. बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने शनिवार को लोगों से संविधान की प्रस्तावना में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्शों की रक्षा करने का आग्रह किया। संविधान के मुख्य वास्तुकार डॉ. भीम राव आंबेडकर को भी श्रद्धांजलि अर्पित की। बनर्जी ने ट्वीट किया, संविधान दिवस पर मैं अपने राष्ट्र को आगे ले जाने के सिद्धांतों को निर्धारित करने के लिए डॉ. आंबेडकर और संविधान सभा को नमन करती हूं। हम अपने संविधान की प्रस्तावना में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्शों की दृढ़ता से रक्षा करने के लिए फिर से प्रतिबद्ध हों।

जब तक संविधान के हर शब्द का पालन नहीं किया जाता, एकता की राह पर चलता रहूंगा

एजेंसी ■ नई दिल्ली

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शनिवार को कहा कि जब तक संविधान के हर शब्द का पालन नहीं किया जाता, वह एकता की राह पर चलते रहेंगे। वहीं पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि संविधान जीने का एक जरिया है और इसकी भावना हमेशा समान रहती है। संविधान सभा ने 1949 में आज ही के दिन भारत का संविधान अपनाया था, इसलिए 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। गांधी ने ट्वीट किया, जब तक हमारे संविधान के हर शब्द का पालन नहीं किया जाता और हर नागरिक की निष्पक्षता एवं न्याय के जरिए रक्षा नहीं की जाती, मैं इस मार्ग पर चलता रहूंगा।

खरगे ने बाबासाहेब आंबेडकर के शब्दों को याद करते हुए कहा, संविधान केवल वकीलों का कोई दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह जीने का एक साधन है और इसकी भावना सदैव समान रहती है। कांग्रेस प्रमुख ने ट्वीट किया, संविधान सभा के सभी महान नेताओं के बहुमूल्य योगदान को हम याद करते हैं। सभी देशवासियों को संविधान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। देश में 2015 से 26 नवंबर को संविधान दिवस के तौर पर मनाया जाता है। इससे पहले इस दिन को कानून दिवस के तौर पर मनाया जाता था।

जरा हट के... बग्गा

नौकरशाही फेरबदल : मनोज कुमार साहू को उपचुनाव आयुक्त नियुक्त किया

एजेंसी ■ नई दिल्ली

केंद्र द्वारा शनिवार को वरिष्ठ स्तर पर नौकरशाही में फेरबदल के तहत वरिष्ठ अधिकारी मनोज कुमार साहू को उप चुनाव आयुक्त नियुक्त किया गया है। कार्मिक मंत्रालय द्वारा जारी एक आदेश में यह जानकारी दी गई है।साहू अरुणाचल प्रदेश, गोवा, मिजोरम और केंद्र शासित प्रदेश (एजीएमयूटी) कैडर के 2006 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारी हैं। कार्मिक मंत्रालय के आदेश के मुताबिक मनोज कुमार साहू को सात वर्षों के लिए 16 दिसंबर 2023 तक उप चुनाव आयुक्त के पद पर नियुक्त किया गया है। सोलोमन अरोकियाराज को आर्थिक मामलों के विभाग के संयुक्त सचिव बनाया गया है। अंकिता मिश्रा बुंदेला स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की संयुक्त सचिव होंगी जबकि संजीत को आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय में संयुक्त सचिव और वित्तीय सलाहकार के रूप में नामित किया गया है।

आरएसएस प्रमुख ने शाहजहां के समय के जजिया कर और उसकी वापसी की चर्चा की

■ बक्सर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने शनिवार को दावा किया कि मुगल शहजादा दारा शिकोह को अपने पिता सम्राट शाहजहां के दरबार में शास्त्रार्थ के दौरान काशी के विद्वानों से पराजय का सामना करना पड़ा जिसके बाद उसकी हिंदू ग्रंथों में दिलचस्पी जागी। सरसंघचालक बिहार के बक्सर जिले में एक धार्मिक समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने दावा किया कि शाहजहां ने बाद में जजिया कर वापस ले लिया था। हालांकि, बादशाह के छोटे बेटे औरंगजेब के सिंहासन पर बैठने पर हिंदुओं पर जजिया कर फिर से लगाया गया।जब शाहजहां ने फैसला किया कि तीर्थ यात्रा करने वाले या किसी भी प्रकार की सभा आयोजित करने वाले सभी हिंदुओं को जजिया देना होगा, तो काशी के एक विद्वान, जिनका नाम मुझे याद नहीं है, ने समान विचारधारा वाले लोगों को इस कदम को चुनौती देने के लिए एकत्रित किया था।

कांग्रेस ने वोट बैंक की राजनीति के कारण आतंकी हमलों की कभी निंदा नहीं की : अमित शाह

■ अहमदाबाद

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि कांग्रेस के सत्ता में रहने के दौरान अक्सर आतंकी हमले होते थे और पाकिस्तानी आतंकवादी भारतीय सैनिकों की हत्या किया करते थे, लेकिन तत्कालीन सत्तारूढ़ दल ने वोट बैंक की राजनीति के चलते कभी इसकी निंदा नहीं की।

मुंबई में 26 नवंबर 2008 को हुए आतंकी हमले में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शाह ने कहा कि केंद्र में नरेंद्र मोदी सरकार रहने के दौरान इस तरह के हमले होना असंभव है।

उन्होंने भावनगर जिले के तालजा कस्बे में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक उम्मीदवार के पक्ष में चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा, आज 26/11 हमले की बरसी है। इस दिन (2008 में) पाकिस्तानी आतंकवादियों ने मुंबई में 164 लोगों की हत्या कर दी थी। इस तरह के हमले कांग्रेस के शासन के दौरान अक्सर हुआ करते थे, लेकिन आज के समय में 26।11 जैसा आतंकी हमला होना संभव नहीं है क्योंकि नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री हैं।

गुजरात में दो चरणों में हो रहे विधानसभा चुनाव के तहत प्रथम चरण में एक दिसंबर को तालजा और 88 अन्य सीट पर वोट डाले जाएंगे। शाह ने कहा, सोनिया (गांधी) और (पूर्व प्रधानमंत्री) मनमोहन सिंह 2004 से 2014 तक 10 वर्ष सत्ता में थे। उनके शासन के दौरान पाकिस्तानी आतंकवादी अक्सर भारत में प्रवेश किया करते थे और हमारे सैनिकों की हत्या करते थे तथा उनके सिर काट देते थे। इसके बावजूद भी कांग्रेस ने एक शब्द तक नहीं कहा। क्यों?

इसका कारण वोट बैंक है। मैं उम्मीद करता हूं कि आप जानते होंगे कि कांग्रेस का वोट बैंक कौन है।

कोश्यारी ने 26/11 के शहीदों को श्रद्धांजलि देने के दौरान चप्पल नहीं उतारी, कांग्रेस ने की आलोचना

मुंबई। महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी पर 26/11 के मुंबई आतंकवादी हमलों के शहीदों को श्रद्धांजलि देने के दौरान अपनी चप्पल नहीं उतारने को लेकर निशाना साधा। कोश्यारी और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने दक्षिण मुंबई में पुलिस आयुक्त कार्यालय के परिसर में शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस बीच राजभवन ने कहा कि एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने राज्यपाल से कहा था कि ऐसी जगहों पर चप्पल या जूते उतारना जरूरी नहीं है। यह कहना शरारतपूर्ण और दुर्भावनापूर्ण है कि राज्यपाल ने सैंडल पहनकर पुष्पांजलि अर्पित कर पुलिस शहीदों का अपमान किया।

अधिवेशन नागरिकों, विभिन्न समूहों, सांस्कृतिक व सामाजिक संगठनों ने पुष्प वर्षा से स्वागत किया

विद्यार्थी परिषद ने जयपुर में शोभायात्रा निकाली

■ जयपुर

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के जयपुर में चल रहे राष्ट्रीय अधिवेशन में शनिवार को शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधियों ने अपनी पारंपरिक वेशभूषा में भाग लिया।

जयपुर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का 68 वां राष्ट्रीय अधिवेशन शुक्रवार को शुरू हुआ था। अधिवेशन के दूसरे दिन शनिवार को शोभा यात्रा निकाली गई जो अग्रवाल महाविद्यालय से सिटी चहारदीवारी होते हुए अल्बर्ट हॉल पहुंची।

जगह-जगह शहर के नागरिकों, विभिन्न समूहों, व्यापार मंडल तथा सांस्कृतिक व सामाजिक संगठनों ने पुष्प वर्षा करके इसका स्वागत किया। अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि शोभायात्रा में अभाविप का अखिल भारतीय स्वरूप समाज के सामने दिखा। इसके माध्यम से भारत के एकात्मवादी रूप का अद्भुत दृश्य प्रस्तुत हुआ। इस तीन दिवसीय अधिवेशन का समापन रविवार को होगा। समापन सत्र में मुख्य अतिथि केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान होंगे।

ईरानी महिलाओं का पर्दा फीफा में हुआ बेपर्दा

फीफा फुटबॉल वर्ल्ड कप में एक मैच के दौरान ईरानी खिलाड़ियों ने अपना राष्ट्रगान गाने से इनकार करके अपने देश में जारी महिला अधिकारों के आंदोलन की ओर दुनिया का ध्यान खींचा है। इस इस्लामिक गणतंत्र में सख्त ड्रेस कोड के मामूली उल्लंघन के चलते एक युवती को दी गई यातना से हुई मौत के बाद पूरा ईरान आंदोलनों से उबल रहा है। लोग सड़कों पर उतर रहे हैं और 'वुमन, लाइफ, फ्रीडम' के नारे लगा रहे हैं। मानवाधिकार कार्यकर्ता आरोप लगा रहे हैं कि आंदोलन के दमन के लिये शासन-प्रशासन निर्दोष लोगों को मार रहा है। आरोप है कि इस आंदोलन में अब तक बड़ी संख्या में लोग मारे जा चुके हैं, जिसमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। पूरी दुनिया में ईरानी महिलाएं और उनके समर्थन में जुटे लोग ईरान की निरंकुशता का पुरजोर विरोध कर रहे हैं। वे पिछले दो महीनों में हिजाब विरोधी प्रदर्शनों के दमन के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दबाव बनाने का प्रयास कर रहे हैं। ईरान में फुटबॉल बेहद लोकप्रिय खेल है, लेकिन उसका राजनीतिक पक्ष भी है। एशिया का माराडोना कहे जाने वाले अली करीमी इस्लामिक गणतंत्र के कटु आलोचक रहे हैं। दरअसल, ईरान में महिला अधिकारों के समर्थक विश्वकप से पहले फुटबॉल टीम के खिलाड़ियों के ईरानी राष्ट्रपति से मिलने की आलोचना करते रहे हैं। वे चाहते थे कि इस अंतर्राष्ट्रीय आयोजन के बहाने दुनिया में ईरान के हालात को उजागर किया जाये। आंदोलन के दौरान मारे गये लोगों की तस्वीरें लिए ये लोग ईरानी शासकों के खिलाफ प्रतिरोध के सुर मुखर कर रहे हैं। यही वजह है कि इंग्लैंड से हुए मुकाबले से पूर्व ईरानी फुटबॉल टीम के कप्तान ने कहा था कि खिलाड़ी ईरान के उन लोगों के समर्थन में खड़े हैं, जिन्होंने आंदोलन के दौरान जीवन गंवाया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि विषम हालात से लोग नाखुश हैं। हम आंदोलन के प्रति संवेदना जताते हुए विरोध करने वाले लोगों के पक्ष में खड़े हैं। यही वजह है ईरानी खेलप्रेमी अपने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाने के लिये जोर-शोर से जुटे हैं।

> **आंदोलन के दौरान मारे गए लोगों की तस्वीरें लिए ये लोग ईरानी शासकों के खिलाफ प्रतिरोध के सुर मुखर कर रहे हैं। यही वजह है कि इंग्लैंड से हुए मुकाबले से पूर्व ईरानी फुटबॉल टीम के कप्तान ने कहा था कि खिलाड़ी ईरान के उन लोगों के समर्थन में खड़े हैं, जिन्होंने आंदोलन के दौरान जीवन गंवाया है।**

वैदिक विचार स्वामी विद्यानंद 'विदेह'

यमराज्य के निवासी पिता

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये।
तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्। य 19.45

पितर शब्द पिता का बहुवचन है। पिता शब्द में पा (रक्षणे) धातु का संस्कार है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और संसार की जो रक्षा करते हैं पाप से, दुरित से, अनिष्ट से, क्षति से, हानि से, दुराचार से, अधर्म से, विनाश से, अभाव से, मृत्यु से, बंधन से, दु:ख से, वे पिता हैं। पिता शब्द का प्रयोग यहां इसी अर्थ में हुआ है। माता, पिता, आचार्य, उपदेष्टा और नेता, इन पांचों की 'पिता' संज्ञा है। यम शब्द में यमन एवं शमन का भाव अंतर्निहित है। यम से पूर्व नि लगाने से नियम शब्द है। यम से पूर्व सं लगाने से संयम बनता है। यम पांच हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। नियम पांच हैं, शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान। संयम तीन हैं- धारणा, ध्यान, समाधि। जो पिता पांच यमों, पांच नियमों और तीन संयमों का पालन करते हैं वे यम के राज्य में निवास करनेवाले पिता हैं। यम के राज्य में निवास करनेवाले पिता ही स-मान होते हैं, मान के योग्य होते हैं, परम आदरणीय होते हैं, सत्करणीय होते हैं। सचमुच, ऐसे पिता ही माननीय और सम्मानास्पद होने चाहिए। जो पिता यम के राज्य में निवास नहीं करते हैं, जो यम, नियम और संयम का पालन नहीं करते हैं वैसे अयमी, अनियमी और असंयमी पिता तो अमान होते हैं, अमाननीय होते हैं।

आज का विचार –डॉ. विनोद दीक्षित

सत्संग की महत्ता

सत्संग के द्वारा मनुष्य का लक्ष्य बदल जाता है, दिशा बदल जाती है, चित्तवृत्ति भी ईश्वर की ओर मुड़ जाती है और शनै- शनै- जीवन में प्रबल परिवर्तन परिलक्षित होने लग जाता है । जिसे लोक चर्चा में अब तक आनंद का अनुभव होता था अब उससे घृणा होने लग जाती है, यह सब अब अच्छा नहीं लगता, अब उसमें आनंद आना बंद हो गया, अब तो भगवत कथा, भगवत स्मरण में ही मन रमने लग जाता है। यह सत्संग के प्रभाव से ही सब कुछ परिवर्तन होता है।आज का दिन आपके लिए मंगलमय एवं कल्याणकारी हो।जय श्री राधे।

पत्र मिला

असाधारण खिलाड़ी थे पेले और माराडोना

फीफा वर्ल्ड कप शुरू होते ही फुटबॉल के जानकारों तथा प्रेमियों में बहस छिड़ चुकी है कि महानतम फुटबॉलर पेले थे या माराडोना। इस पर कभी कोई एक राय बनने की संभावना कम है। ब्राजील के पेले के चाहने वाले कहते हैं कि वे ही महानतम हैं क्योंकि वे तीन बार वर्ल्ड कप जीतने वाली ब्राजील टीम के सदस्य रहे। उन्हें साल 2000 में फीफा फ्लेयर आफ द सेंचुरी का भी सम्मान मिला। माराडोना सिर्फ एक वर्ल्ड विजेता टीम में रहे. उन्हें 1986 वर्ल्ड कप का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी होने का गौरव भी मिला था। पर क्या पेले को मुख्य रूप से इसी आधार पर सर्वकालिक महानतम खिलाड़ी माना जाए क्योंकि वे तीन बार जीतने वाली टीम के सदस्य थे? वे 1958 में ब्राजील की टीम में थे। वे तब 17 साल के थे। वे 1962 और 1966 के वर्ल्ड कप में चोटिल होने के कारण खास जौहर नहीं दिखा सके थे, पर 1970 में अपने पीक पर थे। पर उस टीम के बारे में कहा जाता है कि वो वर्ल्ड कप में खेली महानतम टीम थी और पेले के बिना भी वर्ल्ड कप जीतने का दम रखती थी। माराडोना ने 1986 में विश्व कप अपने दम पर दिलवाया था। उनकी टीम औसत थी।माराडोना ने फाइनल में जर्मनी के खिलाफ भी मजे-मजे में गोल किया था।

संदीप महतो,नई दिल्ली

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली होगा। प्रकाशित सामग्री या विज्ञापन से संपादक/प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। इससे संबंधित किसी भी प्रकार की कार्रवाई या पूछताछ प्रकाशन तिथि से तीन माह के अंदर की जा सकती है।

मिली-जुली सरकार की संभावना नेपाल में

नेपाली संसद की 265 और सात प्रांतों की 330 विधानसभा सीटों के वास्ते एक करोड़ 80 लाख मतदाताओं में से 61 फीसद ने मतपत्रों के ज़रिये वोट डाले। मतपत्र के चार हिस्से थे। एक संसदीय सीट, दूसरा विधानसभा, तीसरा समानुपातिक संसदीय सीट, और चौथी समानुपातिक विधानसभा सीट। 110 संसदीय और 220 प्रांतीय विधानसभाओं के उम्मीदवारों को समानुपातिक प्रणाली के तहत चुना जाना है।

पुष्परंजन

लेखक वरिष्ठ टिप्पणीकार हैं।

आप नेपाल में आम चुनाव से क्या संदेश लेना चाहेंगे? पहला, चुनाव मतपत्र के ज़रिये होता रहे। उन्हें इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन पर भरोसा नहीं है। दूसरा, पुरानी पीढ़ी के राजनेताओं से लोग पकने लगे हैं। मगर, इसका मतलब यह न निकालें कि कांग्रेस या कम्युनिस्टों को मतदाताओं ने खारिज़ कर दिया है। परिणाम-पूर्व विश्लेषणों को पढ़ने से लगता था कि नेपाल राजनीतिक बदलाव की ओर अग्रसर है। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के रबि लामिछाने को इस तरह प्रस्तुत किया गया, गोया नेपाल की सूरत अब बदल जाएगी। रबि लामिछाने के साथ काठमांडो उपत्यका के चर्चित नेता बालेन्द्र शाह के बगलगीर होने का मतलब यही निकाला गया था। मगर, सवाल यह है कि किसी नई-नवेली पार्टी को पांच-सात सीटें मिल भी जाती हैं, उसे हम धमाल कैसे मान लें?

नेपाली संसद की 265 और सात प्रांतों की 330 विधानसभा सीटों के वास्ते एक करोड़ 80 लाख मतदाताओं में से 61 फीसद ने मतपत्रों के ज़रिये वोट डाले। मतपत्र के चार हिस्से थे। एक संसदीय सीट, दूसरा विधानसभा, तीसरा समानुपातिक संसदीय सीट, और चौथी समानुपातिक विधानसभा सीट। 110 संसदीय और 220 प्रांतीय विधानसभाओं के उम्मीदवारों को समानुपातिक प्रणाली के तहत चुना जाना है। बीस सितंबर, 2015 को संविधान संशोधन के ज़रिये नेपाल में द्वि-सदनात्मक व्यवस्था तय की गई थी। उसके तहत ऊपरी सदन 'राष्ट्रीय सभा' के 59 सदस्य छह वर्षों के लिए चुने जाते हैं।

इनमें से तीन राष्ट्रपति द्वारा नामित होते हैं, बाक़ी 56 सदस्य सात राज्यों से आठ-आठ की संख्या में चुने जाते हैं। प्रांतों से आये इन आठ सभासदों में तीन महिलाएं, एक दलित और एक अन्य 'योग्य वर्ग' से होगा, बाक़ी तीन सामान्य श्रेणी से। संसद का जो निचला सदन है, उसे 'प्रतिनिधि सभा' बोलते हैं, जिस वास्ते 20 नवंबर 2022 को मतदान हुआ था। निचले सदन में कुल जमा 275 सीटें हैं, जिनमें से 165 सदस्य प्रत्यक्ष निर्वाचन के ज़रिये चुने जाते हैं, 110 सदस्य समानुपातिक व्यवस्था के आधार पर सभासद बनते हैं।

निर्वाचन आयोग नेपाल की वेबसाइट को देखें तो शुक्रवार देर रात तक नेपाली कांग्रेस 45 सीटों पर जीत हासिल कर चुकी थी, 9 पर नेका उम्मीदवार आगे चल रहे थे। नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एमाले), जिसके अध्यक्ष केपी शर्मा ओली हैं, 35 सीटों के साथ दूसरे नंबर पर हैं, 9 सीटों पर ओली के उम्मीदवार आगे चल रहे हैं। पुष्पकमल दाहाल की नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी केंद्र) 12 पर विजयी और 7 पर बढ़त लेकर इस परिणाम में गोते खा रही है। नेकपा (एकीकृत समाजवादी) के नेता हैं माधव कुमार नेपाल, इन्हें 10 सीटें मिली हैं। माधव नेपाल 2021 तक देउबा सरकार में कनिष्ठ सहयोगी थे।

'समाज सेवा मेरा धर्म हो' का नारा देने वाले रबि लामिछाने की नई नवेली 'राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी' के 7 प्रत्याशी विजयी हुए हैं, एक पर बढ़त बनाये हैं। सूर्य बहादुर थापा और लोकेन्द्र बहादुर चंद कभी दरबार की राजनीति करते थे। चुनाव से पहले राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी (राप्रपा) थापा और चंद गुट एक हुए। राजेन्द्र लिंगदेन के नेतृत्व में हल चुनाव चिह्न के साथ 'राप्रपा' के पांच प्रत्याशी विजयी हुए हैं, दो सीटों पर 'राप्रपा' आगे है। मतलब यह कि राजा की वापसी को एजेंडा बनाने वाली 'राप्रपा' छठे नंबर पर है। पांच निर्दलीय जीते हैं। जनता समाजवादी पार्टी नेपाल के तीन विजयी हुए व 2 प्रत्याशी आगे हैं, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी नेपाल के तीन, और नागरिक उन्मुक्ति पार्टी के दो उम्मीदवार भी जीते हैं।

22 अप्रैल 2020 को तराई के नेता अशोक राई और उपेन्द्र यादव ने मिलकर जनता समाजबादी पार्टी नेपाल का गठन किया था। इनके दो लोगों ने जीत हासिल की है, तीन उजीत की ओर अग्रसर हैं। स्वयं उपेन्द्र यादव चुनाव हार चुके हैं, उनकी लकीर सीके राउत ने छोटी कर दी, जो 2019 में बनी जनमत पार्टी के नेता हैं। तराई के एक और नेता हैं महन्थ ठाकुर, इन्होंने 18 अगस्त 2021 को लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी नेपाल का गठन किया था, साइकिल चुनाव चिन्ह प्राप्त इस पार्टी के चार उम्मीदवार जीते हैं। चित्र बहादुर केसी की पार्टी है, 'राष्ट्रीय जनमोर्चा', नारायण मान बिजुक्छे की 'नेपाल मज़दूर किसान पार्टी' के एक-एक उम्मीदवार जीते हैं। राजनीति का एपीसेंटर रहे काठमांडो की दस संसदीय सीटों में से पांच पर नेपाली कांग्रेस और चार सीटों पर रबि लामिछाने की राष्ट्रय स्वतंत्र पार्टी की जीत देखकर विश्लेषकों को लगा कि देश में परिवर्तन अवश्यंभावी है। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी की इस फतह में काठमांडो के युवा मेयर बालेन्द्र शाह की भूमिका को देखकर भी टिप्पणीकार इतने भावुक हो गये, मानो नेपाल की नई पीढ़ी, राजनीति के पुराने खिलाड़ियों से निजात दिला देगी।

कभी तराई के नाम पर अपनी राजनीति चमकाने वाले हृदयेश त्रिपाठी, महन्थ ठाकुर, उपेंद्र यादव को इस परिणाम से नुकसान यही होगा कि उनकी पूछ दिल्ली दरबार में कम हो जाएगी। राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के हिंदूवादी और राजा समर्थक एजेंडे को भी इस परिणाम से कुछ ख़ास प्राप्त नहीं हुआ है। मगर, मिली-जुली सरकार में इनके नेता आना चाहेंगे, इसकी संभावना बनती दिखती है। नेपाल के इस आम चुनाव में हिंदूवादी राजनीति की गर्माइश नहीं दिखी, यह नागपुर के लिए चिंतन और दिल्ली के वास्ते विश्लेषण का विषय है।

भारत की तरफ़ से 200 गाड़ियों का तोहफा नेपाल चुनाव के वास्ते गया था। चीन ने इस बार चुनाव के नाम पर नेपाल को कोई तोहफा नहीं दिया, अलबत्ता बीआरआई प्रोजेक्ट के लिए 118 मिलीयन डॉलर नेपाली वित्त मंत्रालय को भेजा है।एक ख़बर कूटनीतिक हलके से मिल रही है कि केपी शर्मा ओली की कामयाबी में चीनी दूतावास ने चुपचाप काम किया है। पूर्व प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ताइवान के इश्यू चीन के साथ अनहद खड़े रहे, चुनांचे उनकी नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एमाले) ने बेहतर परिणाम हासिल किया है। आप मानकर चलें कि अंतिम परिणाम के बाद मिली-जुली पार्टियों की ही सरकार शायद बने। राज्यों का लगभग वही सूरतेहाल होगा।

प्रदेश-1 और मधेस प्रदेश में ओली की नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एमाले) लीड रोल में दिखने लगी है। वागमती, गंडकी, लुंबिनी, कर्णाली, सुदूर पश्चिम सूबों में नेपाली कांग्रेस फ्रंट लाइन पर है। गंडकी और लुंबिनी में ओली की नेकपा (एमाले) दूसरे नंबर पर दिख रही है। पुष्पकमल दाहाल की नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी केंद्र) वागमती, सुदूर पश्चिम प्रदेश, कर्णाली में सूबे की सरकारों में सहभागी हो सकती है। यह सब देखकर लगता है कि नेपाल एक बार फिर अस्थिरता के दौर से गुज़रेगा। वहां राजनीतिक स्थायित्व का प्रयास असफल हुआ है। जो ख़तरनाक है, वो यह कि ओली की पार्टी यदि सत्ता में सहभागी बनेगी, लिपुलेख दर्रे का सवाल फिर से दरपेश होगा।

किसने क्या कहा...

"

केरल में कुछ घटनाएं हो रही हैं लेकिन हमें उन्हें नजरअंदाज करना सीखना चाहिए: आरिफ मो. खान

भाजपा के वैचारिक प्रमुखों का संविधान के निर्माण से कोई लेना-देना नहीं है: जयराम रमेश

भारतीय संविधान विश्व भर के लोकतंत्रों की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या: कलराज मिश्र

राहुल गांधी मेहनत से अच्छा काम कर रहे हैं और उनकी भारत जोड़ो यात्रा सांप्रदायिकता के खिलाफ है :जयंत चौधरी

"

कार्टून...

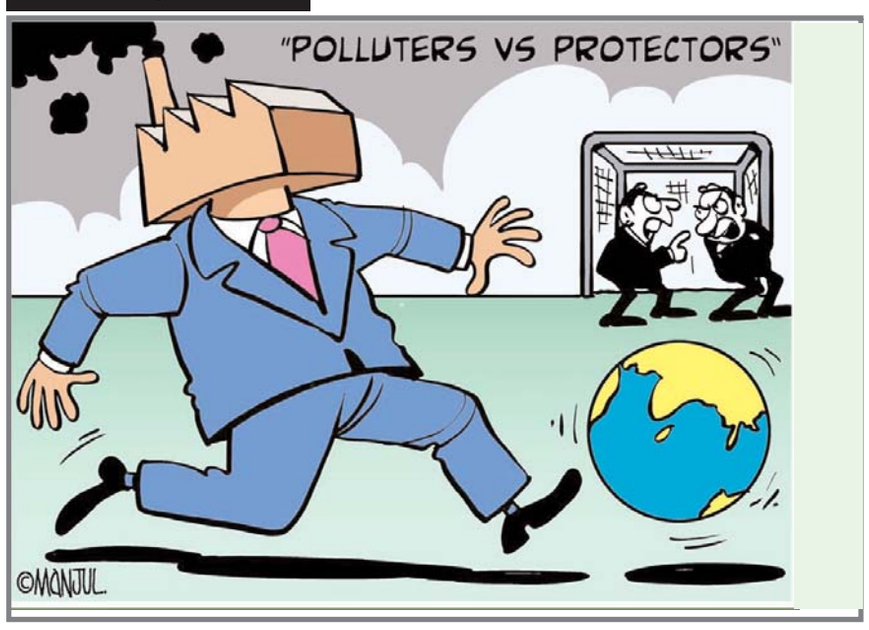

चूहे खा गए गांजा

व्यंग्य

सतपाल

गांजे में भरपूर नशा होता है और नशेड़ी इंसान गांजे का सेवन करने को आतुर रहते हैं। वे चुपके- चुपके, चोरी-चोरी बेतहाशा दाम में गांजा खरीदते हैं और इसके नशे में चूर होकर झूमने की अल्टीमेट श्रेणी में पहुंच कर, दीन दुनिया को भुला कर, नशे की अद्भुत स्थिति का आनंद लेते हैं। क्या कोई सोच सकता है कि चूहे भी गांजे के नशे में चूर- चूर हो कर मस्ती की दुनिया में पहुंच कर मज़े लेते हैं? चूहों का शरीर भले ही इंसानों और पशुओं से छोटा होता है लेकिन वे अपने कुतर-कुतर के तरीके और जीभ से हर खट्टी मीठी, शीरे जैसी रसीले मिष्ठान की थोक मात्रा तथा इंसान की त्वचा यानी अंगुलियों और अंगूठों को काट कर चबाते हुए एक अलग क़िस्म की मौज- मस्ती में लीन रहते हैं। वे यानी चूहों की सेना जलेबी के शीरे को मिल कर चाट जाती है और उन्हें इंसानों की तरह शुगर नुक़सान नहीं पहुंचा सकती। इसका अर्थ है कि चूहों को सब कुछ यानी लकड़ हज़म और पत्थर हज़म हो जाता हैं।

ख़बर है, अनगिनत चूहे मिलकर पुलिस थाने में ज़ब्त कर के रखी गई गांजे की बड़ी खेप को कुतर कर खा गए और उन्हें न किसी तरह का नशा पकड़ पाया और न ही उनकी तबीयत बिगड़ी बल्कि वे नाचते, उछलते, कूदते और मस्ती करते दिखाई दिए। दरअसल, यह कमाल वे अपनी कुतर- कुतर की बेमिसाल कला से करने में क़ामयाब रहे। उत्तर प्रदेश के मथुरा ज़िले में दो पुलिस थानों में रखी गांजे की खेप के साथ खिलवाड़ करते -करते चूहों ने 581 किलो गांजे को चाट कर हज़म कर लिया। ये बेहद मंहगा गांजा ज़िले के दो थाना- हाईवे और शेरगढ़ में सहेज कर रखा गया था। थाने में रखी ज़ब्त वस्तुओं और माल तक थाने के कर्मचारियों और अधिकारियों की पहुंच आसान होती है, तभी तो वे अक्सर नशे में झूमते दिखाई दिए लेकिन उन्हें कोई डर- खौफ महसूस नहीं होता हालांकि पकड़े गए गांजे का मामला अदालत में विचाराधीन है। एक किलो गांजे का दाम तीन हज़ार रुपए होता है। चूहों की सेना मिल कर एक करोड़ रुपए के गांजे को चट कर गई और उन्होंने इसका कोई सबूत और निशान नहीं छोड़ा। अदालत अगर चूहों की हाज़िरी मांगे तो उन्हें पकड़ कर, जकड़ कर न्यायाधीश के पास लेजाना बहुत कठिन होगा।

अदालत अब गांजे के बारे में बार- बार पूछताछ कर रही है। पुलिस वालों के तरह- तरह के जवाब से अदालत को कंफयूज़ किया जा रहा है। पुलिस का एक जवान जवाब में कहता है– साहब चूहें सारा का सारा गांजा चट कर गए, हमारे होंठों तक एक ग्राम गांजा भी नहीं पहुंचा। हमारा वश चले तो हम चूहों के निष्कासन द्वार सील कर देंगे। एक पुलिस अधिकारी ने जवाब में कहा - अब गांजे का चूरा बन गया है,ये किस काम का? एक अन्य पुलिस जवान ने कहा– साहब आप को सही नहीं बताया जा रहा, गांजा सुरक्षित है। अदालत ने इस जवान से सुरक्षित गांजे का सैंपल एक पोलीपैक में लेकर लाने को कहा। वह जवान तीन हफ्ते के बाद अदालत आकर बताता है कि साहब अभी दो सप्ताह मूसलाधार बारिश आई थी, सारा गांजा बारिश के पानी में घुल कर यमुना नदी में बह गया, सर इसे अब निकाला नहीं जा सकता। ये सुन कर न्यायाधीशों ने पुलिस से लिखित जवाब देने को कहा तो पुलिस ने उत्तर में कहा कि हमारा काम काज़ जुबानी चलता है। जब चूहों को यह पता चला तो उन्होंने दिल्ली के रामलीला मैदान के नीचे, उनके द्वारा बनाए अंडरग्राउंड मैदान में जश्न मनाने का एलान कर दिया। यहां एक साथ दो लाख चूहे डांस कर सकते हैं।

उपदेश

हनुमानजी श्रीराम के परम भक्त हैं और हर पल अपने आराध्य की सेवा में रहते हैं। हनुमानजी की पूजा के साथ ही उनके स्वभाव की बातों को अपनाने से भी हमारी कई समस्याएं खत्म हो सकती हैं। उनका शरीर वज्र के समान है। वे तेज चलने में गरुड़ के समान हैं। बुद्धिमान और बलवान हैं। हनुमानजी का वज्र समान शरीर हमें संदेश देता है कि हमारा शरीर भी स्वस्थ और ताकतवर होना चाहिए। उनकी तेज चाल हमें तेज चलने की प्रेरणा देती है। हनुमानजी का बुद्धिमान स्वरूप हमें ज्ञान और बुद्धि बढ़ाने का संकेत देता है। हनुमानजी श्रीराम की सेवा में तत्पर रहते हैं। सुंदराकांड में जब हनुमानजी सीता की खोज में लंका जा रहे थे, तब मैनाक पर्वत ने उन्हें विश्राम करने के लिए कहा था, लेकिन हनुमानजी ने कहा कि मैं श्रीराम का काम पूरा होने तक विश्राम नहीं कर सकता। लंका में रावण के सैनिकों ने हनुमानजी को बंधक बना लिया और उनकी पूंछ में आग लगा दी थी। इसके बाद हनुमानजी साहस दिखाते हुए पूरी लंका को आग लगा दी। रावण के विरुद्ध युद्ध में हनुमानजी हमेशा श्रीराम के साथ रहे। मेघनाद के बाण से श्रीराम और लक्ष्मण घायल हो गए थे, तब हनुमानजी संजीवनी बूटी लेकर आए। हनुमानजी ने धैर्य और बुद्धि का उपयोग करते हुए ही देवी सीता की खोज की थी उन्होंने देवी सीता को कभी देखा नहीं था, वे सिर्फ देवी के गुणों को जानते थे। लंका में एक बार के प्रयास में देवी सीता को खोज नहीं सके थे। तब उन्होंने धैर्य बनाए रखा और फिर कोशिश की। इसके बाद गुणों के आधार पर उन्होंने माता को सीता खोज लिया।

> ***सुंदराकांड में जब हनुमानजी सीता की खोज में लंका जा रहे थे, तब मैनाक पर्वत ने उन्हें विश्राम करने के लिए कहा था, लेकिन हनुमानजी ने कहा कि मैं श्रीराम का काम पूरा होने तक विश्राम नहीं कर सकता। लंका में रावण के सैनिकों ने हनुमानजी को बंधक बना लिया और उनकी पूंछ में आग लगा दी थी। इसके बाद हनुमानजी साहस दिखाते हुए पूरी लंका को आग लगा दी।***

अवैध शस्त्र सहित अभियुक्त गिरफ्तार

विपिन तिवारी

सीतापुर। पुलिस अधीक्षक घुले सुशील चंद्रभान द्वारा जनपद में सघन चेकिंग एवम् अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये है। उक्त दिये गये निर्देश के क्रम में क्षेत्राधिकारी बिसवां के निकट पर्यवेक्षण में थाना रेउसा पुलिस टीम द्वारा चेकिंग के दौरान अभियुक्त अंकित यादव पुत्र अंबिका निवासी दूल्हा मथाना रेउसा सीतापुर को 01 अदद अवैध तमंचा मय 01 अदद जिंदा कारतूस 12 बोर के साथ गिरफ्तार किया गया है। बरामद अवैध शस्त्र के संबंध में मु0अ0सं0 439/22 धारा 25(1-बी) आर्म्स एक्ट पंजीकृत कर अभियुक्त उपरोक्त का चालान मा0 न्यायालय किया गया है। पंजीकृत अभियोगः- मु0अ0सं0 439/22 धारा 25(1बी) आर्म्स एक्ट थाना रेउसा जनपद सीतापुर।

बरामदगीः- 01अदद अवैध तमंचा व 01अदद जिन्दा कारतूस 12 बोर ।

अभियुक्त का नाम/पताः- अंकित यादव पुत्र अंबिका निवासी दूल्हा मथाना रेउसा सीतापुर।

पुलिस टीम थाना रेउसा-

1.उ0नि0 अमित दूबे

2.का0 राजवीर सिंह

3.का0 रवि पाठक

डीएम व एसपी ने सदर कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत रानी लक्ष्मीबाई पार्क का किया उद्घाटन फोटो

संवाददाता चमन अली

हमीरपुर। जिलाधिकारी डॉ चंद्र भूषण व पुलिस अधीक्षक शुभम पटेल द्वारा कोतवाली सदर क्षेत्र अंतर्गत लक्ष्मी बाई तिराहे पर रानी लक्ष्मी बाई की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पार्क का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई के योगदान पर प्रकाश डाला गया तथा सभी को उनके जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने व देश सेवा करने के लिए प्रेरित किया गया साथ ही आमजन से पार्क को स्वच्छ व हरा-भरा बनाये रखने की अपील की।

डीएम व एसपी ने सदर कोतवाली मे समाधान दिवस पर फरियादियों की समस्याओं को किया निस्तारण

संवाददाता चमन अली

हमीरपुर । सदर कोतवाली में समाधान दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी डॉ चंद्र भूषण एवं पुलिस अधीक्षक शुभम पटेल द्वारा आये हुये फरियादियों की समस्याओं को सुनकर निस्तारण किया गया व शेष शिकायतों के त्वरित निस्तारण हेतु संबन्धित को निर्देशित किया गया तथा जमीनी विवादों को पुलिस एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर शीघ्र निस्तारण करने हेतु निर्देश दिए गए

एक दिवसीय कार्यशाला एवं समीक्षा बैठक का आयोजन किया

विपिन तिवारी

लहरपुर (सीतापुर) ब्लॉक संसाधन केंद्र में एक दिवसीय कार्यशाला एवं समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सभी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों ने प्रतिभाग किया। बैठक को संबोधित करते हुए खंड शिक्षा अधिकारी शाहीन अंसारी ने डीबीटी के माध्यम से छात्रों से संबंधित कल्याणकारी योजनाओं का धन अभिभावकों के खाते में भेजने तथा उसका उचित मद में अभिभावकों के द्वारा उपभोग किए जाने के बारे में समीक्षा की तथा छात्रों की उपस्थिति को बेहतर बनाने, शिक्षकों के द्वारा ब्लॉक संसाधन केंद्र पर प्राप्त प्रशिक्षण की विधियों को कक्षा शिक्षण में प्रयोग करने तथा विद्यालय प्रबंध समिति की बैठकों को प्रभावी बनाने पर चर्चा की। इस अवसर पर ए आर पी ,संकुल शिक्षक उपस्थित थे। कंप्यूटर ऑपरेटर सौरभ शुक्ला ने विद्यालय प्रबंध समिति के नवीन बैंक खाते से धन आहरण करने की ऑनलाइन प्रक्रिया और नियमावली के बारे में विस्तार से जानकारी दी

बच्चों के साथ भाजपा कार्यकताओं ने संविधान दिवस के अवसर पर निकाली रैली

संवाददाता चमन अली

हमीरपुर । कुरारा कस्बे के आरएन गुरुकुलम के बच्चों व भाजपा कार्य कर्ताओ द्वारा संबिधान दिवस के अवसर पर भौली रोड स्थित अम्बेडकर पार्क में भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। तथा कस्बे में रैली निकाली गई। कस्बे में संविधानदिवस के अवसर पर गुरुकुलम विद्यालय के बच्चो ने रैली निकाली। तथा संविधान के निमार्ता डॉ भीमराव अंबेडकर के प्रतिमा में माल्यर्पण कर कस्बे में भ्रमण किया। वही रैली में कस्बा व ग्रामीण क्षेत्रों के भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे। जिलाक्ष भाजपा ब्रज किशोर गुप्ता ने बच्चों को संविधान दिवस के सम्बंध में व अम्बेडकर के जीवन ब्रतान्त व उनके व्यक्तित्व के सम्बंध में बिस्तृत जानकारी दी। कस्बा भ्रमण के बाद रैली का समापन विद्यालय में हुआ

गुरू तेग बहादुर शहीद दिवस के अवसर पर जनपद प्रयागराज में 28 नवम्बर को अवकाश घोषित

मनोज त्रिपाठी

प्रयागराज। अपर जिलाधिकारी नगर मदन कुमार ने बताया है कि सामान्य प्रशासन अनुभाग, उत्तर प्रदेश शासन की विज्ञप्ति के द्वारा वर्ष 2022 हेतु घोषित अवकाशों में दिनांक 24 नवंबर 2022 को गुरू तेग बहादुर शहीद दिवस के अवसर पर कार्यकारी आदेशों के अन्तर्गत अवकाश घोषित किया गया है। इस सम्बन्ध में शासन में ऐतिहासिक गुरूद्वारा, श्री गुरू तेग बहादुर साहिब जी, सिंघा वाली गली, यहियागंज, लखनऊ से प्राप्त प्रत्यावेदन/संस्तुति के आधार पर शासन द्वारा सम्यक विचारोपरांत गुरू तेग बहादुर शहीद दिवस के अवसर पर 28 नवंबर 2022 को कार्यकारी आदेशों के अन्तर्गत अवकाश घोषित किया गया है। उन्होंने बताया कि उक्त के क्रम में 28 नवम्बर 2022 को कार्यकारी आदेशों के अन्तर्गत जनपद प्रयागराज में अवकाश घोषित किया जाता है।

अभावों के बावजूद गांवों के बच्चे जीत रहे पदक

संवाददाता चमन अली

हमीरपुर । ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। इनकी नैसर्गिक प्रतिभा को अवसर दिये जाने की जरूरत है। गांव कि गलियों में एक से बढ़कर एक प्रतिभा है बस जरूरत है उस प्रतिभा को पहचानने की और उसमें निखार लाने की। शिक्षा हो या खेलकूद या हो संस्कार बनाने की गांव से ही बेहतर सीखा जा सकता है। अभी बीते कुछ दिनों पहले सरीला विकासखंड में 36 वीं ब्लॉक स्तरीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता आयोजित हुई थीं

जिसमें चंडौत के उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया था। विद्यालय मे अध्ययनरत ऋषभ ने 200 मीटर की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया था और बालिका वर्ग में 400 मीटर दौड़ विद्यालय की अनुरता ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया था, गोला फेंक मे रचना में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया जूनियर स्तर पर हो रही

कबड्डी प्रतियोगिता में उच्च प्राथमिक विद्यालय चंडौत के बालिका वर्ग ने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। इसी तरह विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्कूल के बच्चों ने श्रेष्ठ प्रदर्शन किया, स्कूल के अध्यापक नारायण सिंह ने कहा कि गांवों के स्कूलों में कई ऐसे बच्चे भी होते हैं, जिनमें योग्यता और प्रतिभा कूट-कूट कर भरी है, लेकिन आगे बढ़ने के लिए उनके पास कोई संसाधन नहीं है। ऐसे बच्चों को यदि सही संसाधन उपल्ब्ध कराए जाएं तो वहीं बच्चे किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने का माद्दा रखते हैं, विद्यालय में कार्यरत सभी शिक्षकों ने बच्चों का हौसला बढ़ाया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की

कंपोजिट विद्यालय करनैलगंज का डीएम ने किया औचक निरीक्षण

अमर ख्याल संवाददाता

गोण्डा। जिलाधिकारी डॉ० उज्ज्वल कुमार ने तहसील करनैलगंज अंतर्गत कंपोजिट विद्यालय करनैलगंज का औचक निरीक्षण कर ली जानकारी। उन्होंने विद्यालय में पहुंचकर अध्यापक उपस्थिति रजिस्टर एवं छात्रवृत्ति उपस्थिति रजिस्टर तथा क्लास रूम में जाकर छात्रा अंजलि कक्षा पांच से किताब पढ़वाये इसके साथ ही बच्चों को पढ़ाया भी और उन बच्चों से वहां पर हो रही पढ़ाई के संबंध में जानकारी ली। इसके साथ ही उन्होंने वहां पर उपस्थित सभी प्रधानाध्यापक से जानकारी लेते हुए निर्देश दिए कि विद्यालय में आने वाले सभी बच्चों को अच्छी पढ़ाई दी जाए तथा इनको अन्य जानकारियां भी दी जाए। उन्होंने विद्यालय के अध्यापकों को को निर्देश देते हुए कहा कि विद्यालय में बच्चों के उपस्थिति पर विशेष ध्यान दिया जाए और वहां पर मिड डे मील में बन रहे खाना की गुणवत्ता को चेक किया और कहा कि बच्चों के पढ़ाई एवं खान-पान सहित अन्य सभी व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान दिया जाए।

थाना समाधान दिवस में फरियादियों की सुनी समस्याएं

अमर ख्याल संवाददाता

गोण्डा। समाधान दिवस के अवसर पर आज दिनांक 26.11.2022 को पुलिस अधीक्षक गोण्डा आकाश तोमर के निर्देशन में जनपद गोण्डा के सभी थानों पर समाधान दिवस का आयोजन किया गया । जिसमें आने वाले फरियादियों की शिकायतों को सुनकर उनके गुणवत्तापूर्ण व त्वरित निस्तारण हेतु सम्बन्धित को आवश्यक आदेश-निर्देश दिए गए।अपर पुलिस अधीक्षक शिवराज द्वारा थाना कोतवाली नगर में समाधान दिवस पर आने वाले फरियादियों की शिकायतों को सुनकर उनके गुणवत्तापूर्ण व त्वरित निस्तारण कराया गया। समस्त क्षेत्राधिकारी व प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्ष द्वारा थाना समाधान दिवस पर आने वाले फरियादियों की शिकायतों को सुनकर उनके गुणवत्तापूर्ण व त्वरित निस्तारण कराया गया। जनपद के समस्त थानों से कुल- 179 प्रार्थना प्राप्त हुए जिसमें 21 प्रार्थना पत्रों का मौके पर ही निस्तारण किया गया। वही दूसरी तरफ थाना कटरा बाजार के थाना प्रभारी निरीक्षक चितवन कुमार ने पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में क्षेत्राधिकारी कर्नलगंज विनय कुमार सिंह व तहसीलदार के नेतृत्व में थाना समाधान दिवस के दौरान फरियादियों की सुनी गई समस्याएं,शेष राजस्व संबंधित प्रकरण में राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को निस्तारण हेतु मौके पर रवाना किया गया ' इस दौरान राजस्व एवं पुलिस के अधि0/कर्मचारीगण उपस्थित रहे

रैली निकाल छात्रों ने यातायात के नियमों की दी जानकारी

अमर ख्याल

बिलारी। बहोरनपुर नरौली स्थित प्रेम शांति इंटर कॉलेज में वंदना के बाद छात्र छात्राओं ने रैली निकालकर यातायात के नियमों की जानकारी दी। प्रधानाचार्य विजय पाल सिंह राघव ने छात्रों को बताया कि हमेशा अपने वाई ओर चले तथा सड़क पार करते समय दाएं बाएं देख कर ही क्रॉस करें।नियमों का पालन करने से यातायात दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है। यातायात नियमों का यदि सही से पालन किया जाए तो दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है। सड़क पर चलते समय यह आवश्यक है कि हम यातायात

के साधनों को धीमी गति से चलाएं।

शनिवार को यातायात के नियमों की जानकारी देते हुए प्रधानाचार्य विजय पाल सिंह राघव ने कहा कि वाहन चलाते समय कभी भी धूम्रपान, मद्यपान व बातचीत नहीं करनी चाहिए। दो पहिया वाहन चलाते समय सदैव हेलमेट का प्रयोग करें। बडे शहरों में रेड लाइट के संकेत को समझें। किसी भी परेशानी से बचने के लिए वाहन के वैध कागज व ड्राइविंग लाइसेंस हमेशा साथ रखें तथा दुर्घटना की स्थिति में 112 नंबर तत्काल डायल करें। रैली में सजल राघव, गुड़िया, मगन, सलोनी, रश्मि सागर, हरबती, आकांक्षा, गुनगुन, फैजुल, रुखसार,रेशमा, अनिकेत, चमन कश्यप, वीरेश कुमार, शिवम, समीर, अजय कुमार, सिनटू बाबू ,अंकित कुमार, श्याम , आदि अन्य छात्र-छात्राओं के अलावा अनिल चौहान, प्रदीप कुमार, मनोज सागर, जूली चौहान, सुषमा राघव, संगीता, ज्योति आदि स्टाफ उपस्थित रहा

चोरी के सामान सहित 05 चोर गिरफ्तार

विपिन तिवारी

सीतापुर । जनपद मे पुलिस अधीक्षक सीतापुर घुले सुशील चंद्रभान द्वारा जनपद में चोरी/नकबजनी की घटनाओं को गम्भीरता से लेते हुए उन्हें रोकनें व अपराधियों के विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये है। उक्त दिये गये निर्देश के क्रम में थाना मिश्रित पुलिस टीम द्वारा चेकिंग के दौरान मु0अ0सं0 572/22 धारा 379/411 भा0द0वि0 में प्रकाश में आये अभियुक्तों 1.शान मोहम्मद उर्फ शानू पुत्र मो0 नईम 2.कलामुद्दीन पुत्र शर्फुद्दीन 3.शमीम पुत्र अशरफ अली 4.शमसुद्दीन उर्फ मन्ना पुत्र मुनऊ निवासीगण ग्राम आंट थाना मिश्रित सीतापुर 5.महेन्द्र पुत्र रामखेलावन निवासी अमजदपुर मजरा सहादतनगर

थाना मिश्रित सीतापुर को चोरी गये खम्भों के 10 अदद लोहे के टुकड़े व 01 अदद बैट्री रिक्शा (34इळ0590) के साथ गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार अभियुक्तों का चालान मा0 न्यायालय किया गया है। जनपद में अपराधियों के विरूद्ध निरन्तर कार्यवाही इसी प्रकार प्रचलित रहेगी।

अभियुक्तों का नाम/पता-

1. शान मोहम्मद उर्फ शानू पुत्र मो0 नईम निवासी ग्राम आंट थाना मिश्रित सीतापुर

2. कलामुद्दीन पुत्र शर्फुद्दीन निवासी ग्राम आंट थाना मिश्रित सीतापुर

3. शमीम पुत्र अशरफ अली निवासी ग्राम आंट थाना मिश्रित सीतापुर

4. शमसुद्दीन उर्फ मन्ना पुत्र मुनऊ निवासी ग्राम आंट थाना मिश्रित सीतापुर

5. महेन्द्र पुत्र रामखेलावन निवासी अमजदपुर मजरा सहादतनगर थाना मिश्रित सीतापुर

अभियोगः- मु0अ0सं0 572/22 धारा 379/411 भा0द0वि0 थाना मिश्रित सीतापुर

बरामदगीः-

1.चोरी के खम्भों के 10 अदद लोहे के टुकड़े

2.01 अदद बैट्री रिक्सा (34इळ0590)

पुलिस टीम थाना मिश्रित-

1. उ0नि0 त्रिभुवन कुमार
2. हे0का0 राजकुमार सिंह
3. हे0का0 अशर्फीलाल गुप्ता
4. का0 परविन्दर कुमार
5. का0 छोटेलाल मीणा

निकाय चुनाव के मद्देनजर न्यूरिया हुसैनपुर में सम्पन्न हुआ आम आदमी पार्टी का कार्यकर्ता सम्मेलन

अमर ख्याल

पीलीभीत। निकाय चुनाव के मद्देनजर आम आदमी पार्टी जिले की सभी नगरपंचायत, नगरपालिका में सन्गठन को मजबूत कर रही है। आज न्यूरिया हुसैनपुर में एक निजी मैदान में आम आदमी पार्टी का नगर कार्यकर्ता सम्मेलन हुआ। जिसमें न्यूरिया नगर के समस्त कार्यकर्ता, चेयरमैन/सभासद के आवेदक/प्रत्याशी अपने अपने समर्थकों के साथ सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में जोन उपाध्यक्ष एवं जिला प्रभारी एड० सुनिता गंगवार ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें इस निकाय चुनाव में दिल्ली के

काम को देखते हुये ईमानदार पार्टी को वोट करना है और कहा भाजपा सरकार ने हिन्दू मुसलमानों के बीच धर्म और जात-पात की खाई खोदने का काम किया है, जिससे खत्म करने का काम सिर्फ और सिर्फ आम आदमी पार्टी कर रही है?। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जिलाध्यक्ष अमित मिश्रा ने कहा कि जिले में समस्त नगरपालिका, नगरपंचायत में आम आदमी पार्टी के अभियान चल रहे हैं , सभी जगहों से अच्छे अच्छे ईमानदार प्रत्याशी को आम आदमी पार्टी चुनाव में उतारेगी। संचालन कर रहे पूरनपुर विधानसभा प्रभारी बनबारी लाल भारती ने कहा देश मे तमाम पाटीर्यां है लेकिन आज जनमानस के मुद्दों और अधिकारों के लिए सिर्फ और सिर्फ आम आदमी पार्टी लड़ रही है न्यूरिया से चेयरमैन पद के सम्भावित प्रत्याशी शकील अहमद ने कहा अन्य पाटीर्यां सिर्फ और सिर्फ वोटों की राजनीति करती है। आम आदमी पार्टी काम की राजनीति करती है, पार्टी अगर मुझे प्रत्याशी बनाती है तो मैं दिल्ली की तरह यहाँ भी विकास कार्य करूंगा।

खाद्यान्न वितरण में कटौती कर कोटेदार द्वारा खेला जा रहा भ्रष्टाचार का खेल

भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा विकासखंड कटरा बाजार, जिम्मेदार कर्मचारी दिखे बेपरवाह

अमर ख्याल संवाददाता

कटरा बाजार (गोण्डा) जहाँ एक तरफ उत्तर प्रदेश सरकार ने खाद्यान्न प्रति यूनिट के दर पर पांच किलोग्राम वितरण करने हेतु लाखों दावे कर ढिंढोरा पीट रहे खाद्यान्न वितरण के दौरान घटतौली करने के मामले में समस्त जनपद जिलाधिकारी व जिला पूर्ति अधिकारी को कड़े निर्देश दिए, वही दूसरी तरफ जनपद गोण्डा के जिलाधिकारी व जिलापूर्ति अधिकारी और समस्त अधिकारी के साथ गोष्ठी कर खाद्यान्न वितरण के दौरान धांधली व घटतौली करने के मामले में कड़े निर्देश देते हुए कहा कि अगर खाद्यान्न वितरण के दौरान गड़बड़ी करने व शिकायत मिलने पर कोटा निलंबित करके सख्त कार्यवाही की जाएगी।वही दूसरी तरफ विकासखंड कटरा बाजार अक्सर भ्रष्टाचार के सुर्खियों में रहा बोलबाला, वही दूसरी विकास खंड कटरा बाजार के अंतर्गत ग्राम पंचायत नकहा में कोटेदार द्वारा गरीबों के खाद्यान्न हक पर एक किलो प्रति यूनिट के दर पर कटौती करके धांधली कर भ्रष्टाचार के दलदल में समाकर एक बार फिर भ्रष्टाचार के सुर्खियों में हुआ बोलबाला। ग्रामीणों ने कोटेदार के विरुद्ध घटतौली करने के मामले में गंभीर आरोप लगाते हुए व्यापक स्तर पर जताया रोष व्याप्त, जब इस प्रकरण में जिला पूर्ति अधिकारी से दूरभाष के जरिए संपर्क किया गया तो उन्होंने बताया कि जांच कराकर विधिक कार्रवाई की जाएगी और उक्त मामले में जब जिला अधिकारी से दूरभाष के जरिए संपर्क स्थापित किया गया तो उन्होंने बताया कि जिला पूर्ति अधिकारी को आवश्यक कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया। विकासखंड कटरा बाजार क्षेत्रों में व्यापक स्तर से बड़े पैमाने पर कोटेदारों द्वारा 1 किलो यूनिट कटौती करके धांधली कर स्थानीय जिम्मेदार कर्मचारियों की जेब भर कर धड़ल्ले से फल-फूल रहे, बेखौफ कोटेदारों को उत्तर प्रदेश सरकार व जनपद के जिलाधिकारी के आदेशों को ताक पर रखकर खाद्यान्न वितरण में धांधली करके जमकर धज्जियां उड़ाते हुए मंसूबों पर कोटेदार द्वारा लगाया जा रहा पलीता। अब यह देखना है कि बेखौफ कोटेदार द्वारा खाद्यान्न वितरण के दौरान जमकर कर धांधली व कटौती के मामले में जिलाधिकारी व जिला पूर्ति अधिकारी बेखौफ कोटेदार के रवैया के विरुद्ध क्या एक्शन लेते हैं , कोटेदार द्वारा खाद्यान्न वितरण के दौरान कटौती करने के मामले में क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर ग्रामीणों के बीच जमकर चल रहा चर्चा का माहौल

तंबौर क्षेत्र में झोलाछाप डॉक्टरों का फैला मकड़जाल जिम्मेदार मौन

आखिर अवैध क्लीनिक संचालकों पर कौन कर रहा मेहरबानी जांच का विषय

लापरवाही कि वजह से महीनों में जाती है कई जाने जिम्मेदार कौन

विपिन तिवारी

तंबौर (सीतापुर)। जनपद से दूर 55 किलोमीटर थाना तंबौर क्षेत्र के कस्बा से लेकर ग्रामीण इलाकों में झोलाछाप डॉक्टरों का मकड़जाल फैला हुआ है दबी जुबान से ग्रामीणों द्वारा बताया गया जेनेरिक दवाओं का कारोबार कर अधिक धन वसूली करने का काला कारोबार झोलाछाप डॉक्टरों द्वारा किया जा रहा है जिससे छोटी सी छोटी बीमारी में सैकड़ों रुपयों का बिल बनाकर पकड़ा दिया जाता है अभी हाल

ही में मीडिया कर्मियों द्वारा क्षेत्र का भ्रमण किया गया जिसमें तंबौर, बिसवां खुर्द,मोगलापुर, छतागुर,बासतापुर, बानवापुर,मोहम्मदपुर उसिया,देवपालपुर,दुबई,पतरासा,खानपुर, उंचगांव,बेहटा, राय मडोर, रतनगंज, अबई पुर,काशीपुर,इच्छा आदि कई गांवों में ग्रामीणों ने दबी जुबान से मीडिया को अपनी बात बताई जेनेरिक दवाओं से व नशीली गोलियों से बीमारी को रोका जाता है जिसमें झोलाछाप डॉक्टरों द्वारा बड़ी सी बड़ी गंभीर बीमारियों का तुरंत इलाज करने का ठेका ले लिया जाता है। इस सन्दर्भ में जब तंबौर सी एच सी अधीक्षक अनन्त मिश्रा से बात की गई तो उन्होंने बताया कि सभी अवैध क्लीनिक संचालकों पर कठोरतम कार्यवाही की जाएगी

अब देखना यह है की स्वास्थ्य विभाग इन झोलाछाप डॉक्टरों पर कार्यवाही करता है या फिर मेहरबानी

प्राइवेट बस अड्डा बना , अव्यवस्थाओं अड्डा

सरकार के सख्त आदेश के बावसजूद अधिकारी नही लेते है संज्ञान

अमर ख्याल

रुपईडीहा (बहराइच) कस्बा रुपईडीहा व बाबागंज में स्थित प्राइवेट बस अड्डा अव्यवस्थाओं का अड्डा बन गया है। एक ओर जहां रुपईडीहा से बहराइच व कस्बा बाबागंज से मल्हीपुर जाने के लिए सिर्फ डग्गामार वाहनों का संचालन हो रहा है। वहीं दूसरी ओर बस अड्डे पर आने वाले सवारियों के लिए कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। रुपईडीहा बस अड्डे के अंदर साल का साल पानी भरा रहता है। कीचड़ में लोग उतर कर अपने गंतव्य तक जाने को मजबूर होते हैं। वहीं बाबागंज मल्हीपुर रोड की बसें सड़कों पर खड़ी होती हैं। पैसेंजर कड़ी धूप में बैठने के लिए मजबूर रहते हैं कोई प्रतीक्षालय की व्यवस्था नहीं है। यहां तक की आए हुए सवारियों के लिए शौचालय और पेयजल की व्यवस्था भी इन बस अड्डों पर ब्यस्था नहीं है वहीं बद से बदतर स्थिति की बसें इन बस स्टैंड से संचालित हो रही है। साथ ही इन बसों में सवारियों को ठूंस कर भरा जाता है। ज्ञात हो कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्राइवेट बस अड्डों के लिए एक गाइडलाइन जारी किया था। उस पर सख्ती से पालन करने के आदेश भी दिए थे। इस पर कार्यवही भी हुआ बहुत से बस अड्डो पर ब्यवस्थाऐं ठीक भी हुए वहां पर हर तरह की सुविधाएं भी मुहैया कराई गई परंतु यहाँ के प्राइवेट बस अड्डे ज्यों का त्यों हैं। जिले के परिवहन विभाग का कोई अधिकारी इस ओर ध्यान नहीं दे रहा है।

इन बस अड्डों पर अव्यवस्थाओं का बोलबाला है। इन प्राइवेट बस स्टैंड बस के ड्राइवर और कंडक्टरों के द्वारा टिकट भी गंतव्य स्थान के लिये नही दिए जाते हैं और मनमानी किराया वसूल किया जाता है अक्सर सवारियो के साथ गाली गलौज व मारपीट की घटना सुनाई देती है। उत्तर प्रदेश में इतनी सख्त सरकार होते हुए भी न जाने क्यों इस प्राइवेट बस अड्डे पर कार्यवाही नही हो रही हैं

गड्ढा मुक्त अभियान में लीपा पोती उखड़ रही सड़क की गिट्टी,राहगीर परेशान

मनोज त्रिपाठी

लालापुर, प्रयागराज। सरकार ने सभी सड़को को 15 नवम्बर तक गड्ढा मुक्त करने का दिशा निर्देश दिया है ।जिस पर विभाग ने सक्रियता थोड़े समय के लिए दिखाया सड़क पर सिर्फ लीपा पोती करते हुए अंत कर दिया ।जहाँ पर ज्यादा गड्ढा था वहाँ पर सिर्फ जीएसबी गिट्टी बिछाकर छोड़ दिया ।सरकार के आदेश का भरपूर पालन भी हो गया और सड़क गड्ढा मुक्त भी नही हुआ ।लालापुर क्षेत्र के इछौरा गांव से जोधी तक जाने वाली तीन किलोमीटर की पीडब्लूडी लोक निर्माण विभाग ब्लाक शंकरगढ़ सी डी 2 के आधीन रिपेरिंग कार्य शुरू किया,जहाँ पर बड़ा गड्ढा था वहाँ पर सिर्फ बड़ी गिट्टी बिछाकर अपना काम समाप्त कर दिया है ।छोटे गड्ढो में मरम्मती करण किया और करते ही सड़क पर गिट्टी बिखर गयी है ।सवाल ये उठता है कि जब गिट्टी पड़ते ही सड़क उखड़ना शुरू हो जाती है तो कमी कही न कही जरूर है ।वही सूत्रों की माने तो ठेकेदार ने प्लांट से बनी बनायी तारकोल मिक्स सहित पचासों किलोमीटर दूर से ट्रैक्टर या अपने गाड़ी से गिट्टी भरकर लाते है,साइड तक पहुचते पहुचते पूरी गिट्टी ठंढी पड़ जाती है

जिससे उसका पकड़ कमजोर हो जाता है इसी वजह से लगते ही गिट्टी उखड़ना शुरू हो जाती है। साइड पर नही होती गिट्टी तारकोल के साथ गरम ठण्ड गिट्टी की पकड़ कमजोर की वजह से चंद घन्टो में उखड़ जाती है सड़क ।इछौरा गांव में लवकुश पाल के घर के सामने बड़ा गड्ढा कई महीनों से हो गया है,राहगीरों से लेकर ग्रामीणों ने सोचा गड्ढा मुक्त अभियान में ये गड्ढा मुक्त हो जायेगा लेकिन ऐसा नही हुआ। ठेकेदार ने छोटे गड्ढे को लीपा पोती कर दिया लेकिन इस गड्ढे में सिर्फ गिट्टी डालकर छोड़ दिया आज भी गड्ढा बरकरार है।

अपर जिलाधिकारी नगर ने संविधान दिवस के अवसर पर भारतीय संविधान की उद्देशिका की दिलायी शपथ

प्रयागराज। अपर जिलाधिकारी नगर मदन कुमार ने संविधान दिवस (26 नवम्बर) के अवसर पर संगम सभागार में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भारतीय संविधान की उद्देशिका की शपथ दिलायी- हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को: सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949, ई0(मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं। संवैधानिक आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज व राष्ट्रीय प्रतीकों का आदर करेंगे। देश की संप्रभुता अखण्डता की रक्षा करेंगे। महिलाओं का सम्मान करेंगे। हिंसा से दूर रहकर बंधुता बढ़ाएंगे। सामाजिक संस्कृति का संवर्द्धन व पर्यावरण का संरक्षण करेंगे। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करेंगे। सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करेंगे। व्यक्तिगत व सामूहिक गतिविधि में उत्कृष्टता बढ़ाएंगे। सबको शिक्षा के अवसर प्रदान करेंगे एवं स्वतंत्रता के आदर्शो को बढ़ावा देंगे।

सर्वोदय इण्टर कालेज में संविधान दिवस मनाया

अमर ख्याल/राजेश कुमार

मथुरा। जनपद में सर्वोदय इण्टर कालेज में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के चित्रपट पर प्रधानाचार्या श्रीमती रूमा द्वारा माल्यार्पण किया गया। इतिहास प्रवक्ता अजय कुमार द्वारा छात्र छात्राओं को भारतीय संविधान के प्रमुख तथ्यों के बारे में बताया गया । भारतीय संविधान से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी करायी गयी तथा छात्र- छात्राओं के द्वारा भारतीय संविधान पर विचार व्यक्त किए गए । सभी छात्र- छात्राओं, शिक्षकों सहित प्रधानाचार्य द्वारा संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक गिरीश चन्द शर्मा द्वारा किया गया। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय की प्रधानाचार्या रूमा एवं अजय कुमार द्वारा मतदान का महत्व तथा 18 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के छात्रों को अपना वोट बनवाने के लिए तथा अपने अपने अभिभावकों व गांव के लोगों को मतदाता सूची में नाम अंकित कराने हेतु प्रेरित किया ।

इस अवसर पर बृजेश कुमार, रोशन सिंह ,कृष्ण पाल सिंह, आशीष कुमार, हरिओम सिंह, यतींद्र कुमार ,जयंत कुमार, अवधेश कुमार पटेल, सुरेंद्र सिंह, राहुल कुमार शर्मा ,खेम चंद शर्मा एवं समस्त छात्र-छात्राएं आदि उपस्थित रहे।

संविधान दिवस पर रैली निकालकर जिला प्रशासन को सौंपा ज्ञापन

अमर ख्याल/राजेश कुमार

मथुरा। महात्मा ज्योतिराव फुले विकास समिति एवं अखिल भारतीय समता फाउंडेशन जनपद मथुरा के संयुक्त तत्वाधान में भारतीय संविधान के 73 वे संविधान अंगीकार दिवस पर भारत में समाजिक न्याय आर्थिक न्याय राजनीतिक न्याय एवं चहुमुखी न्याय हेतु प्रदर्शन कर 3 सूत्रीय ज्ञापन महामहिम राष्ट्रपति महोदया जी, माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार एवं मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार के नाम नगर मजिस्ट्रेट श्री सौरभ दुबे जी को जिला मुख्यालय पहुंचकर गगनभेदी नारे लगाते हुए सौंपा। उक्त ज्ञापन के दौरान रमेश सैनी रमेश सैनी लुकेश कुमार राही ने संयुक्त रूप से कहा भारत में जातिवाद भेदभाव समाप्त करने हेतु समान शिक्षा कानून व्यवस्था तत्काल लागू होनी चाहिए साथ ही पाठ्यक्रम में संविधान के पठन-पाठन का कार्य तत्काल हो एवं भारत के प्रत्येक विद्यालय में प्रार्थना उपरांत संविधान की प्रस्तावना का वाचन प्रतिदिन हो तभी भारत से से सभी प्रकार की असमानता समाप्त होगी और एक मजबूत भारत का निर्माण होगा इसी कदम से भारत में आर्थिक न्याय आर्थिक न्याय सामाजिक न्याय राजनीतिक न्याय का सपना साकार होगा। ज्ञापन के दौरान रमेश सैनी,लुकेश कुमार राही, चित्रसेन मौर्य,संजय बीडीसी, नत्थी लाल सैनी, एड रवि कुमार, डॉ राजकुमार सैनी, विवेक कुमार, आकाश बाबू ,विजय कुमार, प्रताप कुमार,लक्ष्य चौहान,फतेह सिंह ,बबलू कुमार , नाहर सिंह,तरुण कनौजिया, संतोष मौर्य,डॉ सुरेंद्र ,अब्दुल मलिक, प्रदीप सागर, योगेश कुमार, प्रमोद यादव ,उदय सिंह कोटा, रविंद्र कुमार कोटा, प्रदीप सिंह ,कुमारपाल ,एड अरविंद कुमार ,एड देवेंद्र कुमार ,नीरज पिसावा, रवि कुमार आदि ने आदि ने गगनभेदी नारे लगाते हुए उक्त तीनों मांगों को तत्काल लागू कराने की मांग की।

पैदल फ्लैग रूट मार्च निकालकर क्षेत्रवासियों को कराया सुरक्षा का एहसास

यातायात नियमों का उल्लंघन व उपद्रव उत्पन्न वाले का कतई खैर नहीं,प्रभारी निरीक्षक

अमर ख्याल संवाददाता

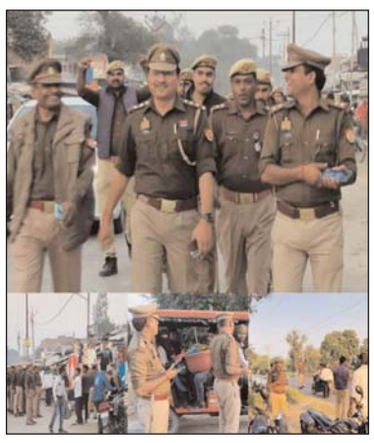

कटरा बाजार(गोण्डा) जनपद के तेजतर्रार पुलिस अधीक्षक आकाश तोमर ने यातायात व साइबर अपराध और कानून एवं शांति व्यवस्था कायम रखने हेतु समस्त थाना प्रभारी निरीक्षक व थाना अध्यक्ष को कड़े निर्देश दिए ,वही दूसरी तरफ थाना कटरा बाजार के थाना प्रभारी निरीक्षक चितवन कुमार ने पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन पर पहाड़ापुर में पुलिस बल के साथ यातायात माह नवंबर 2022 के दृष्टिगत यातायात नियमों का पालन कराने के लिए ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ तकनीक के आधार पर यानी ऑनलाइन और मोबाइल एप से ई चालान किया गया, 302वाहन चेक किया जिसमें 107वाहन से 98000का ई चालान की गई। थाना प्रभारी निरीक्षक चितवन कुमार ने कानून एवं शांति-व्यवस्था बनाये रखने के दृष्टिगत, कस्बा पहाड़ापुर में संदिग्ध व्यक्तियों/वाहनों की सघन चेकिंग व अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध कार्यवाही हेतु तथा आमजन में पुलिस के प्रति विश्वास एवं सुरक्षा के भाव को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से थाना कटरा बाजार पुलिस द्वारा क्षेत्र में पैदल गश्त किया गया। इस पैदल फ्लैग रूट मार्च के दौरान थाना प्रभारी चितवन कुमार ने समस्त आम जनमानस से कानून एवं शांति व्यवस्था कायम रखने हेतु अपील करते हुए कहा कि अगर कोई भी व्यकित कानून एवं शांति भंग व उपद्रव उत्पन्न करने और यातायात नियमों का उल्लंघन करता हो पाया गया,

तो तत्काल प्रभाव से शीघ्र गिरफ्तारी करके सख्त से सख्त कठोर दंडात्मक त्वरित कार्यवाही की जाएगी। इस पैदल फ्लैग रूट मार्च के दौरान थाना प्रभारी निरीक्षक चितवन कुमार,उप निरीक्षक साहेब कुमार ,चौकी प्रभारी अभिषेक मिश्रा, आरक्षी अविनाश उपाध्याय, सुरेश यादव व महिला आरक्षी आरती शुक्ला ,सोनम सहित मौजूद रहे।

एक तमंचा व दो चाकू के साथ तीन आरोपी गिरफ्तार

अमर ख्याल। राहुल कुमार

रामपुर। शनिवार को थाना भोट, रामपुर पुलिस द्वारा ग्राम सनैया को जाने वाले रास्ते से नाजिम पुत्र तसलीम निवासी ग्राम रम्पुरा थाना भोट, रामपुर को एक अद्द नाजायज तमंचा 12 बोर मय 02 कारतूस जिन्दा 12 बोर तथा मोबीन पुत्र स्व0 शगीर अहमद निवासी मौहल्ला मठ बाला कब्रिस्तान थाना कोतवाली, रामपुर व शाहमुराद पुत्र नन्हें खां निवासी घेर दरिया खां थाना कोतवाली, रामपुर को एक-एक अद्द नाजायज चाकू के साथ गिरफ्तार किया गया।

महिला थाना रामपुर में परिवार परामर्श केन्द्र का आयोजन

अमर ख़्याल। राहुल कुमार

रामपुर। एसपी रामपुर के निर्देशन में महिला थाना में परिवार परामर्श समिति द्वारा आज दिनांक शनिवार को महिला संबंधी मामलों में दोनों पक्षों को आमने-सामने बैठाकर काउंसलिंग कराई गई। परिवार परामर्श समीति द्वारा 27 प्रकरणों को सुना गया, जिनमें से 02 प्रार्थना पत्र पर समझौता कराया गया, 05 प्रार्थना पत्र निस्तारित, 03 प्रार्थना पत्र पर एफ.आई.आर. की संस्तुति तथा अन्य 17 प्रार्थना पत्रों में अग्रिम तिथि नियत कर सुलह समझौते का प्रयास किया जा रहा है ।इस दौरान प्रभारी महिला परामर्श प्रकोष्ठ उ0नि0 संध्या रावत, व काउंसलर अवतार सिंह, कृपाल सिंह, किश्वर सुल्ताना काउंसलिंग में उपस्थित रहे।

पीपली वन की 27 नग खैर प्रकाष्ठ प्रतिबंधित लकडी के साथ तमंचा के साथ आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया

अमर ख़्याल। राहुल कुमार

रामपुर। एसपी रामपुर द्वारा अपराध एवं अपराधियों की गिरफ्तारी के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक रामपुर के कुशल निर्देशन में व क्षेत्राधिकारी बिलासपुर के पर्यवेक्षण में एंव थानाध्?क्ष के नेतृत्व में थाना मिलक खानम पुलिस द्वारा 02 नफर अभियुक्त 1. इम्तियाज पुत्र नसरत खां निवासी ग्राम मल्हूपुरा थाना भगतपुर जनपद मुरादाबाद 2. कुलदीप पुत्र रंजीत सिंह निवासी गुलाब सिंह का मजरा थाना किलाखेडा जनपद उधमसिंहनगर(उत्तराखण्ड)को एक गाडी टाटा सुपर ऐस मिन्ट पिकअप रजि0 नं0 ल्फ्0८श्-8229 में लदीजंगल पीपली वन की प्रतिबंधित लकडी 27 नग खैर प्रकाष्ठ व 02 अदद तमंचे 12 बोर मय 02 अदद जिन्दा कारतूस के साथ अज्जूवाला तिराहे से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी/बरामदगी के आधार पर थाना हाजा पर धारा भारतीय वन अधिनियम व मु0अ0सं0 धारा अ. अउ0ळपंजीकृत किया गया। अभियुक्त को समय से सम्बन्धित मा0 न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा यातायात जागरूकता माह के अवसर पर स्कूलों में किया गया चित्रकला एवं निबध प्रतियोगिता का आयोजन

अमर ख़्याल। राहुल कुमार रामपुर। शनिवार 2022 को पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार शुक्ला के दिशा निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक डा0 संसार सिंह क्षेत्राधिकारी यातायात, रामपुर के मार्गदर्शन में सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा यातायात जागरूकता माह के अवसर पर दयावती मोदी एकेडमी स्कूल में यातायात प्रचार-प्रसार हेतु निबंध प्रतियोगिता और विद्या मंदिर कन्या इंटर कॉलेज राधा रोड में यातायात प्रचार प्रसार हेतु चित्रकला का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के दौरान दयावती मोदी एकेडमी की प्रधानाचार्य श्रीमती सुमन तोमर, अध्यापक आशुतोष सक्सैना, विद्या मंदिर कन्या इंटर कॉलेज में प्रधानाचार्य शरद सक्सेना, प्रभारी निरीक्षक यातायात सतीश कुमार एवं उप निरीक्षक सुमित कुमार मौजूद रहे।

धन उगाही व मारपीट करने का आरोपी अभियुक्त गिरफ्तार

अमर ख्याल संवाददाता

वजीरगंज (गोण्डा)पुलिस अधीक्षक आकाश तोमर ने अपराध एवं अपराधियों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के अन्तर्गत वांछित अभियुक्तो की शीघ्र गिरफ्तारी करने हेतु जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्षो को कड़े निर्देश दिए,वही दूसरी तरफ पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में थाना वजीरगंज पुलिस ने धन की उगाही व मारपीट करने के वांछित अभियुक्त-मन्नू सिंह उर्फ मनोज सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। उक्त अभियुक्त ने वादी दौलतराम वर्मा पुत्र मनीराम वर्मा नि0 बधवा चौराहा थाना वजीरगंज जनपद गोण्डा की बधवा चौराहा पर स्थित मिठाई की दुकान में जाकर धन की उगाई की थी न देने पर अभियुक्त द्वारा वादी को गाली-गुप्ता देते हुए मारा-पीटा भी था। जिसके सम्बन्ध मे वादी द्वारा थाना वजीरगंज मे अभियोग पंजीकृत कराया गया था। अभियुक्त के विरुद्ध थाना वजीरगंज पुलिस द्वारा विधिक कार्यवाही की गई।गिरफ्तार कर्ता उ0नि0 शरद कुमार मय टीम सहित मौजूद रहे।

डीएम ने मतदाता पुनरीक्षण बूथों का किया निरीक्षण

अमर ख्याल संवाददाता

कर्नलगंज (गोण्डा) जिलाधिकारी डॉक्टर उज्ज्वल कुमार ने तहसील करनैलगंज के अंतर्गत मतदाता पुनरीक्षण विशेष अभियान के अंतर्गत पूर्व मध्य विद्यालय बालपुर प्रथम एवं कम अपोजिट विद्यालय करनैलगंज का किया औचक निरीक्षण। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने वहां पर उपस्थित बीएलओ एवं अन्य कर्मचारियों को निर्देश देते हुए कहा है कि लवली संपर्क कर अधिक से अधिक फार्म तैयार करें ताकि समय से कार्य को पूर्ण कर लिया जाए ।इस अवसर पर उप जिलाधिकारी कर्नलगंज हीरालाल, नायब तहसीलदार करनैलगंज सहित अन्य संबंधित लोग उपस्थित रहे

डीएम ने की सड़कों के निर्माण कार्यों एवं प्रगति से संबंधित समीक्षा

सड़क निर्माण की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दें अधिकारी-डीएम

ख्याल संवाददाता

गोण्डा। कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी डॉ० उज्ज्वल कुमार की अध्यक्षता में जनपद में 50 लाख से ऊपर के चल रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा की गई। समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी ने सड़कों के निर्माण के संबंध में पीडब्ल्यूडी व अन्य सम्बन्धित विभागों को निर्देश दिये कि सभी सड़कें पूर्ण गुणवत्ता के साथ बनाई जाए। किसी भी सड़क के निर्माण में गुणवत्ता से कोई भी समझौता न किया जाए। यदि किसी सड़क के निर्माण में गुणवत्ता में लापरवाही बरती जाएगी तो संबंधित के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा जनपद को गड्ढा मुक्त बनाया जाए। जनपद में निमार्णाधीन सभी सड़कों का निर्माण समय के अंदर पूर्ण किया जाए। उन्होंने कहा कि यदि किसी सड़क के निर्माण में बजट के अभाव के कारण रुकावट आ रही है, तो शासन स्तर पर पत्र भेजकर बजट की मांग की जाए ।बैठक में जिलाधिकारी ने जनपद में हो रहे सड़क निर्माण के कार्यों के प्रगति के संबंध में समीक्षा करते हुए सीएचसी उमरिया, लेखपाल ट्रेनिंग सेंटर, कृषि महाविद्यालय, विधि विज्ञान प्रयोगशाला, अटल आवासीय विद्यालय सिसवा मनकापुर, राजकीय महाविद्यालय, इंजीनियरिंग कॉलेज, आईटीआई परसपुर, महिला छात्रावास, मिनी स्टेडियम नरेचा, स्वच्छ पेयजल, यूपीपीसीएल तथा निर्माण खंड डिवीजन बलरामपुर द्वारा किए जा रहे निर्माण 30वीं पीएसी, मेडिकल कॉलेज, तहसील सदर राजकीय आवास, पर्यटन विभाग सहित कई अन्य विभागों के निर्माण कार्यों के प्रगति की गहन समीक्षा की गई। इसके साथ ही मेडिकल कालेज के निर्माण की प्रगति समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान मेडिकल कॉलेज के निर्माण की स्थिति पीपीटी के माध्यम से देखा, और निर्देश दिये कि पूरी गुणवत्ता एवं मानक के अनुसार समय से निर्माण कार्य पूरा कराया जाए। वहीं बैठक के अंत में जिलाधिकारी ने सभी सड़क निर्माण से संबंधित अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए हैं कि सभी लोग अपने-अपने सड़कों के निर्माण की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दें अन्यथा संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होगी। इसके साथ ही

उन्होंने कहा कि सड़क निर्माण का कार्य पूरी गुणवत्ता के साथ समय से कराना सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, डीएसटीओ अरुण कुमार, एक्सईएन प्रांतीय खंड प्रमोद त्रिपाठी, एक्सईएन सीडी-1, सीडी-2, डीडी एजी, पशु चिकित्सा विभाग, जिला पंचायत, जिला विद्यालय निरीक्षक राकेश कुमार, यूपी सिडको, सीएनडीएस सहित सभी अधिकारी एवं कार्यदायी संस्था के अधिकारी उपस्थित रहे।

बोला विरमगाम, योगी को जय श्रीराम

■ अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुजरात विधानसभा के चुनाव प्रचार के दौरान शनिवार को विरमगाम विधानसभा क्षेत्र में रोड शो किया। यहां से भाजपा ने हार्दिक पटेल को मैदान में उतारा है। जनता ने केसरिया फहराकर योगी जी को जय श्रीराम किया। गगनचुंबी नारों, पुष्प वर्षा और ढोल नगाड़ों से उनका स्वागत व सम्मान किया गया तो योगी आदित्यनाथ ने भी हाथ हिलाकर गुजरात की जनता का अभिवादन किया। इस दौरान उन्होंने लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण भी किया। इस दौरान संवेदनशीलता का परिचय देते हुए योगी आदित्यनाथ ने खचाखच भीड़ में भी सामने से आ रही एम्बुलेंस को रास्ता दिया। रोड शो के दौरान योगी आदित्यनाथ की झलक पाने को लोग छतों, वाहनों और दीवारों पर खड़े रहे। पूरा विरमगाम सिर्फ योगी योगी की गूंज से गुंजायमान हो गया। रोड शो के दौरान कार्यकर्ताओं और स्थानीय जनता की जबरदस्त भीड़ रही। लोग योगी आदित्यनाथ की झलक अपने मोबाइल में कैद करते रहे। योगी ने भी उन्हें निराश नहीं किया, बल्कि मुस्कुरा कर सभी का अभिवादन किया। युवा सीएम योगी को हाथ जोड़कर प्रणाम करते भी दिखे तो महिलाएं भी उनकी झलक देखने रोड शो में आईं। लोगों के उत्साह को देखते हुए स्थानीय पुलिस को काफी मशक्कत करनी पड़ी। योगी आदित्यनाथ के रोड शो के दौरान खचाखच भीड़ रही। रास्ते में सामने से एम्बुलेंस आ रही थी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने हाथ से इशारा कर लोगों को किनारे होकर रास्ता देने को कहा। इससे सुगमता से एम्बुलेंस निकल सकी। रोड शो के दौरान गीत-संगीत भी खूब हुए। मुझे चढ़ गया भगवा रंग-रंग, जो राम को लाये हैं आदि गीत बजते रहे। गुजरात की जनता ने इन गीतों के जरिए भी गोरक्षपीठाधीश्वर का गुजरात की धरती पर स्वागत किया।

आतंकवाद का हितैषी है दिल्ली से आया 'आप' का नमूनाः मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

यूपी के सीएम के निशाने पर रहीं कांग्रेस और आम आदमी पार्टी

■ सोमनाथ/भावनगर

पीएम मोदी के गृह राज्य में उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ की धुआंधार रैली हो रही है। शनिवार को चौथे दिन भी उन्होंने तीन जनसभाएं कीं। रैली का आगाज उन्होंने भगवान सोमनाथ के मंदिर में दर्शन व पूजन-अर्चन से किया। इसके बाद तीनों विधानसभा (सोमनाथ, गरियाधार और सावरकुंडला) में जनसभा की। योगी आदित्यनाथ को गुजरात में देखने व सुनने काफी भीड़ उमड़ रही है। योगी आदित्यनाथ ने भी आस्था, पीएम की कार्यशैली, यूपी की कानून व्यवस्था, समृद्ध गुजरात के बलबूते भाजपा प्रत्याशियों को जिताने की अपील की। वे यहां कांग्रेस और आम आदमी पार्टी पर पूरी तरह से हमलावर रहे। हर रैली में गुजरात की जनता ने अपनी जमीं पर बुलडोजर बाबा की जय जयकार की और वायदा किया कि अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों में पहली और 5 दिसंबर को कमल का फूल खिलाएंगे। योगी आदित्यनाथ लखनऊ से सोमनाथ पहुंचे। यहां द्वादश ज्योतिर्लिंग में शामिल सोमनाथ मंदिर में दर्शन-पूजन किया। उन्होंने मंदिर में सभी के सुख-समृद्धि की कामना की। इसके बाद योगी आदित्यनाथ ने सोमनाथ से भाजपा प्रत्याशी मान सिंह भाई परमार के पक्ष में जनसभा की। यहां बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की, फिर गुजराती भाषा में जनमानस का अभिवादन किया। उन्होंने कहा कि आज भारत के संविधान का दिवस है। 26 नवंबर 1949 को संविधान बनकर तैयार हुआ था। 26 जनवरी 1950 को भारत ने इसे अंगीकार किया। भारतीय संविधान के शिल्पी बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने व पीएम के आह्वान पर हर भारतवासी नागरिक कर्तव्यों के प्रति शपथ लेकर एक भारत, श्रेष्ठ भारत की कल्पना को साकार करेगा। भगवान सोमनाथ का यह धाम भव्यता को प्राप्त कर रहा है। पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत की विरासत को नई ऊंचाई तक पहुंचाने का कार्य हो रहा है। विरासत के सम्मान के साथ आजादी के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले अमर शहीदों के प्रति देश कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा है। सीएम ने भगवान सोमनाथ के मंदिर की रक्षा करते हुए शहीद हुए शूरवीर हमीर गोहिल को याद किया। आम आदमी पार्टी भी योगी आदित्यनाथ के निशाने पर रही। बोले कि दिल्ली से आम आदमी पार्टी का नमूना यहां आया है, वह आतंकवाद का हितैषी है, राम मंदिर का विरोध करता है। जब भारतीय सेना पाकिस्तान में सर्जिकल स्ट्राइक करती है तो वह वीर जवानों से सबूत मांगता है। पाकिस्तान कहता था कि भारत के सैनिकों ने हमारी कमर तोड़ दी, फिर भी आम आदमी पार्टी को सबूत चाहिए होता है। आतंकवाद व भ्रष्टाचार इनके जींस का हिस्सा है। सीएम ने सरदार वल्लभ भाई पटेल व डॉ. भीमराव आंबेडकर को नमन किया। कहा कि सरदार पटेल की सबसे बड़ी प्रतिमा व डॉ. आंबेडकर के पंच तीर्थ को पीएम मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने संवारा। पटेल जी सोमनाथ मंदिर का पुनरोद्धार करना चाहते थे, लेकिन मुस्लिम वोटबैंक के कारण कांग्रेस आस्था को कभी सम्मान नहीं देना चाहती थी। कांग्रेस नहीं चाहती थी कि सोमनाथ मंदिर का पुनरोद्धार हो, लेकिन सरदार वल्लभ भाई पटेल की दृढ़ इच्छाशक्ति से यह संभव हुआ। कांग्रेस ने तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद को यहां कार्यक्रम में आने से रोकने का प्रयास किया था। कांग्रेस बाबा साहेब को चुनाव हराने का भरसक प्रयास करती थी। 1990 में भगवान सोमनाथ का आशीर्वाद लेकर अयोध्या तक की रथयात्रा शुरू की गई थी। जो संकल्प भगवान सोमनाथ के चरणों में लिया गया था, भव्य राम मंदिर का निर्माण उसकी परिणीति है। लोग बोलते थे कि राम मंदिर बनेगा तो खून की नदियां बहेंगी, मैं कहता था कि मच्छर भी नहीं मरेगा। सीएम ने कहा कि कांग्रेस के संरक्षण में पेशेवर दंगाई, गुंडे व अपराधी आमजन, व्यापारियों व गरीबों का शोषण करते थे। आज उत्तर प्रदेश का बुलडोजर उनकी छाती पर चढ़ रहा है। कोरोना के दौरान लोग दिल्ली से भागकर उपचार के लिए यूपी आ रहे थे। हमने व्यवस्था दी थी। अमित भाई को निकलकर दिल्ली में अतिरिक्त व्यवस्था करनी पड़ी, जो दिल्ली नहीं संभाल पा रहे, वह गुजरात में क्या कर लेंगे। उन्होंने बताया कि गरियाधार विधानसभा से भाजपा उम्मीदवार केशू भाई नकरानी के पक्ष में योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गुजरात की धरती महान है। यूपी में जन्मे भगवान कृष्ण कन्हैया यहां आकर द्वारकाधीश हो गए। अयोध्या के पास छपिया में जन्मे भगवान स्वामी नारायण गुजरात में आस्था के प्रतीक बनकर छा गए। दुश्मन अब भारत में निर्दोष नागरिकों को निशाना नहीं बना सकते है।

जिलाधिकारी उमेश मिश्रा ने धान क्रय केंद्र का किया विस्तृत निरीक्षण

■ बिजनौर

जिलाधिकारी उमेश मिश्रा द्वारा काल थाना दिवस के अवसर पर नहटौर थाने में आयोजित थाना समाधान दिवस की अध्यक्षता की गई तथा खाद्य एवं विपणन विभाग द्वारा संचालित मंडी समिति हल्दौर, स्थित धान क्रय केंद्र का विस्तृत निरीक्षण भी किया गया। जिलाधिकारी मिश्रा सर्वप्रथम थाना नहटौर पहुंचे, जहां उन्होंने आयोजित होने वाले थाना समाधान दिवस की अध्यक्षता करते हुए उपस्थित पुलिस एवं राजस्व अधिकारी को निर्देश दिए कि शिकायतकर्ता के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार करते हुए उनकी समस्याएं तथा शिकायतों को गंभीरता पूर्वक सुनते हुए उसका पूर्ण गुणवत्ता के साथ निस्तारण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि यदि भूमि से संबंधित कोई विवाद हो तो राजस्व अधिकारी पुलिस बल के साथ जाकर मौक़े का मुआयना करें और नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही अमल में लाएं, यदि मामला गंभीर पाया जाए तो उसके संबंध में उच्च अधिकारियों को संज्ञानित करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि बिना शिकायतकर्ता की संतुष्टि के किसी भी शिकायत का निराकरण स्वीकार्य नहीं होगा। इसलिए जो भी शिकायत निस्तारित करें उसमें संबंधित शिकायतकर्ता की संतुष्टि निश्चित रूप से प्राप्त कर लें। तदुपरांत जिलाधिकारी मिश्रा मंडी समिति, हल्दौर पहुंचे जहां उन्होंने खाद्य एवं विपरण विभाग द्वारा संचालित धान क्रय केंद्र का विस्तृत रूप से निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान केंद्र पर कोई किसान धान विक्रय करने के लिए मौजूद नहीं पाया गया। जिलाधिकारी द्वारा केंद्र प्रभारी कीर्तिराज से अब तक क्रय किए गए धान के बारे में जानकारी करने पर बताया गया कि अब तक 859 मेट्रिक टन धान की खरीद की जा चुकी है तथा और अधिक खरीदारी करने के लिए उनके द्वारा नियमित रूप से स्थानीय किसान बंधुओं से संपर्क किया जा रहा है। उन्होंने निरीक्षण के दौरान वज़न कांटा, नमी मापक यंत्र, बारदाना, धान साफ करने वाली मशीन सहित अन्य आवश्यक सामग्री एवं उपकरणों की भी जांच की, जो सब सही पाई गई। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक दिनेश सिंह, खाद्य एवं विपणन अधिकारी सहित अन्य संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद थे।

मेट्रो, रेल और रोड के जरिये दिल्ली से कनेक्ट होगा जेवर एयरपोर्ट

■ लखनऊ

यात्री सुविधाओं को सुगम बनाने के लिए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार लगातार नए-नए प्रयास कर रही है। इसी के तहत नोएडा के जेवर में बन रहा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट तक यात्रियों को लाने एवं ले जाने के लिए भी प्रदेश सरकार मेट्रो, रेल और सड़क कनेक्टिविटी प्रदान करने जा रही है। इन माध्यमों के जरिए राजधानी दिल्ली समेत प्रदेश या देश के किसी भी हिस्से से नोएडा एयरपोर्ट पहुंचना आसान हो जाएगा। यात्रियों की सुविधा के लिए उठाए जा रहे इस कदम को लेकर लगभग सभी औपचारिकताएं पूरी कर ली गई है। उन्होंने बताया कि मेट्रो लाइन को ग्रेटर नोएडा से नोएडा तक विस्तारित किया जाएगा। वहीं, दिल्ली से हाई स्पीड रेल लिंक के लिए डीपीआर भी अप्रूवल स्टेज पर है। इसके तहत नोएडा एयरपोर्ट के टर्मिनल पर एक रेलवे स्टेशन प्रस्तावित है, जिससे महज 21 मिनट में दिल्ली पहुंचा जा सकेगा। इसके अलावा एयरपोर्ट के नार्थ और ईस्ट एरिया को रोड कनेक्टिविटी भी प्रदान की जा रही है। उल्लेखनीय है कि ओइड के जेवर में बन रहे इस एयरपोर्ट को 4 चरण में पूरा किया जाना है। इन 4 चरणों मे 1334 हेक्टेयर पर एयरपोर्ट का विकास होगा। इसमें 2 रनवे बनाए जाने का प्रस्ताव है। उन्होंने बताया कि पहले चरण का काम 2024 में पूरा होने की संभावना है। पहले चरण की प्रस्तावित लागत 5730 करोड़ रुपए है। बीते दिनों मुख्य सचिव के समक्ष नोएडा एयरपोर्ट की प्रोग्रेस रिपोर्ट को साझा किया गया। रिपोर्ट में बताया गया कि नोएडा एयरपोर्ट के टर्मिनल स्टेशन को मेट्रो पैसेंजर टर्मिनल से लिंक किया जाएगा। उन्होंने बताया कि यीडा और डीएमआरसी ने डीपीआर और फीजिबिलिटी रिपोर्ट अगस्त 2022 में ही तैयार कर ली है। ग्रेटर नोएडा से ओइड एयरपोर्ट तक ट्रैफिक रिपोर्ट का अपडेट भी 16 जून को अप्रूवल को भेजा जा चुका है। वहीं, यहां रेलवे नेटवर्क बिछाए जाने की भी तैयारी जोरों से हो रही है। प्रदेश सरकार की मांग पर नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड इस पर काम कर रही है। इसके तहत नोएडा एयरपोर्ट पर रेलवे स्टेशन बनाया जाएगा। हालांकि इसका अप्रूवल अभी पेंडिंग है। रोड के जरिये एयरपोर्ट तक यात्री आसानी से पहुंच सकें इसकी भी तैयारी है। विभिन्न सर्विस रोड के अलावा विभिन्न दिशाओं से रोड के जरिये एयरपोर्ट को जोड़ा जाएगा। ईस्ट रोड के जरिये जहां ये जेवर खुर्जा रोड से कनेक्ट होगा तो वहीं ययमुना एक्सप्रेस वे से इसे जोड़ने के।लिए टेंडर पास ही चुका है और वर्क ऑर्डर भी जारी किया जा चुका है। बल्लभगढ़ के रास्ते इसे दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे से भी जोड़ने की तैयारी है। उन्होंने बताया कि इसके लिए प्रदेश सरकार जमीन के। अधिग्रहण पर 260 करोड़ रुपए खर्च करेगी। उन्होंने बताया कि साथ ही सरकार एनएचएआई को 8.5 किमी का लिंक रोड बनाने के लिए जमीन फ्री ऑफ कॉस्ट उपलब्ध कराएगी। एयर कार्गो व अन्य औद्योगिक ट्रैफिक के लिए पूर्व दिशा की ओर रोड का निर्माण हो चुका है।

यूपी को शीघ्रता से उर्वरक सप्लाई में रेलवे करेगा सहयोग

लखनऊ। प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही ने उत्तर प्रदेश में डीएपी उर्वरक की शीघ्रता से आपूर्ति कराने हेतु रेलवे बोर्ड भारत सरकार के चेयरमैन बीके त्रिपाठी के साथ बैठक की। रेलवे की ओर से प्रदेश के लिए उर्वरक आपूर्ति में यथासंभव सकारात्मक सहयोग का आश्वासन दिया गया है। बैठक में बताया गया कि पूर्वी पोर्ट पारादीप, काकीनाडा, गंगावरस, कृष्णा पट्टनम से रेक्स की उपलब्धतता बढ़ाई जाय। तथा उड़ीसा, झारखण्ड में उर्वरक रैक्स बहुत ज्यादा समय तक स्टेबल रहती है जिसकी वजह से उनको गन्तव्य तक पहुंचने में बिलम्ब होता है। वर्तमान में रबी फसलों की बुवाई का मुख्य समय चल रहा है, जिसके दृष्टिगत कृषकों के मध्य फास्फेटिक उर्वरकों डीएपी / एनपीके अत्यधिक माँग है। उर्वरकों की ससमय आपूर्ति करने में रेलवे का महत्वपूर्ण सहयोग रहता है। वर्तमान माह नवम्बर में डीएपी की धीमी आपूर्ति के कारण प्रदेश के कतिपय जनपदों में कृषकों को फसलों की बुवाई के समय सुगमतापूर्वक डीएपी की उपलब्धता कराने में कठिनाई हो रही है। माह नवम्बर में उत्तर प्रदेश को पूर्वी पोर्ट काकीनाडा, कृष्णापट्टनम, गंगावरम, बाईजैक एवं पारादीप से 149800 मी0टन डीएपी उर्वरक का आवंटन के सापेक्ष 24 नवंबर 2022 तक 67000 मी0टन की आपूर्ति हो सकी।

योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों तक पहुंचाने के निर्देश

■ लखनऊ

मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय डीबीटी एवं आधार एडवायजरी समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में आधार वैलिडेशन की प्रगति एवं परिवार आईडी योजना के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की गई। अपने संबोधन में मुख्य सचिव ने कहा कि जनपद में आधार सम्बन्धी गतिविधियों के अनुश्रवण एवं क्रियान्वयन के लिये जनपद स्तरीय आधार अनुश्रवण समिति का गठन किया गया है, इसकी नियमित बैठक आयोजित की जायें। प्रदेश के समस्त जनपदों में 10 वर्ष या उससे पहले बने आधार जिनमें एक बार भी अपडेशन नहीं हुआ है, निवासियों को प्रूफ ऑफ आइडेंटिटी (पीओआई) एवं प्रूफ ऑफ एड्रेस (पीओए) दस्तावेजों को अपडेट कराने हेतु जागरूकता कार्यक्रमों को आयोजित करें। उन्होंने कहा कि योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों तक पहुंचाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है, इसलिये लाभार्थीपरक योजनाओं में लाभार्थियों के आधार नम्बर की फीडिंग एवं वैलीडेशन का कार्य कराया जा रहा है। आधार सीडिंग से डुप्लीकेसी को खत्म करने और सही व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाने में मदद मिलेगी। जिन विभागों में आधार सीडिंग की प्रक्रिया अवशेष रह गई है, वह सघन अभियान चलाकर इस प्रक्रिया को 31 दिसम्बर तक अवश्य पूरा कर लें। किसी भी लाभार्थी के पास आधार न होने के कारण योजना के लाभ से वंचित न किया जाये, बल्कि विभागीय अधिकारियों द्वारा प्रयास कर उनके आधार नम्बर जारी करवाना सुनिश्चित किया जाये। बैठक में बताया गया कि प्रदेश के वयस्क निवासियों (18 वर्ष की आयु से अधिक) के आधार जनरेशन से पूर्व उनकी आवासीय स्थिति, जनसांख्यकीय जानकारी तथा प्रस्तुत दस्तावेजों के सत्यापन से सम्बन्धित स्टेट गवर्मेंट पोर्टल का निर्माण यूआईडीएआई द्वारा किया जा रहा है, पोर्टल डेवलपमेंट की प्रक्रिया गतिमान है, इस पर मुख्य सचिव ने कहा कि नियोजन विभाग सम्बन्धित विभाग से समन्वय स्थापित कर इस कार्य को शीघ्र पूर्ण कराये। बैठक में अपर मुख्य सचिव नियुक्ति देवेश चतुर्वेदी, प्रमुख सचिव समाज कल्याण डॉ. हरिओम, सचिव नियोजन आलोक कुमार सहित सम्बन्धित विभागों के वरिष्ठ अधिकारीगण आदि उपस्थित थे।

गंगा नदी में नौका पलटी, दो को मामूली चोट

■ वाराणसी

उत्तर प्रदेश के वाराणसी में शीतला घाट के सामने गंगा नदी में एक नौका के पलट जाने से उसमें सवार व्यक्तियों में से दो व्यक्ति चोटिल हो गए। नौका पर कुल 34 श्रद्धालु सवार थे। यह जानकारी पुलिस ने दी। पुलिस ने बताया कि इस हादसे के बाद आसपास के नाविकों और जल पुलिस ने तुरंत दुर्घटनास्थल पर पहुंचकर सभी व्यक्तियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। पुलिस ने बताया कि इस हादसे में सभी श्रद्धालु सुरक्षित हैं। पुलिस ने बताया कि दो श्रद्धालुओं को हल्की चोट लगी थी जिनका कबीरचौरा स्थित मंडलीय अस्पताल में इलाज कराया गया पुलिस उपायुक्त (दशाश्वमेध) अवधेश पांडेय ने बताया कि आंध्रप्रदेश के कुल 34 श्रद्धालु शनिवार सुबह गंगा नदी में नौका से केदार घाट से निकले थे। उन्होंने बताया कि नौका जब शीतला घाट के सामने पहुंची।

अधिकारों का महत्व तभी है जब हम अपने कर्तव्य को भलीभांति समझें और उसका पालन करें: खन्ना

■ लखनऊ

उत्तर प्रदेश के वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना की अध्यक्षता में संविधान दिवस के अवसर पर लोक भवन के सभागार में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में संविधान की आत्मा श्उद्देशिकाश् का पाठन किया गया। कार्यक्रम में नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए के शर्मा, राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार गुलाब देवी एवं राज्य मंत्री विजय लक्ष्मी गौतम, सतीश शर्मा, अनूप प्रधान बाल्मीकि, रजनी तिवारी, राकेश राठौर, संजीव कुमार आदि भी उपस्थित थे। सुरेश कुमार खन्ना ने अपने संबोधन में कहा कि 26 जनवरी, 1950 को संविधान हमारे देश में लागू हुआ, लेकिन संविधान सभा द्वारा 26 नवंबर, 1949 को ही संविधान अंगीकृत कर लिया गया था। 2015 से पहले संविधान दिवस मनाने के संबंध में कोई विचार नहीं किया, परंतु भारत के प्रधानमंत्री धन्यवाद के पात्र हैं, पूरे देश में 'संविधान दिवस' के अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम के रूप में मनाए जाने के लिए प्रेरित किया।

अमेरिकन कंपनियां यूपी में नौ सेक्टर में करेंगी निवेश

■ लखनऊ

प्रदेश में बड़े पैमाने पर इन्वेस्टमेंट के लिए अमेरिकी कंपनियों में उत्सुकता बढ़ने लगी है। प्रदेश के कुल 9 सेक्टर ऐसे हैं, जहां अमेरिकी कंपनियों की दिलचस्पी ज्यादा है। इसमें आईटी से लेकर कृषि उद्योग तक अमेरिकी कंपनियों के टॉप चार्ट में हैं। जीआईएस-2023 की नोडल एजेंसी इन्वेस्ट यूपी के मुताबिक प्रदेश में भारी निवेश के लिए अमेरिकी कंपनियों पर विशेष फोकस है। सरकार बड़ी संख्या में अमेरिकी कंपनियों को यूपीजीआईएस 2023 के लिए निमंत्रण भेज चुकी है। इसके अलावा अमेरिका के विभिन्न व्यापारिक संगठनों से भी सरकार के अधिकारी लगातार संपर्क में हैं, जहां से काफी उत्साहवर्धक रिस्पॉन्स मिले हैं। अमेरिकी कंपनियों की ओर से जिन सेक्टर्स में विशेष रुचि दिखाई गयी है उनमें आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स, कृषि और खाद्य प्रसंस्करण, रक्षा और एयरोस्पेस, फार्मास्युटिकल और चिकित्सा उपकरण, ऊर्जा, रिटेल और ऑटोमोबाइल। इसके अलावा बड़ी संख्या में वेंचर कैपिटलिस्ट भी यूपी में निवेश को इच्छुक हैं। यूपी में सर्वाधिक 90 लाख से भी ज्यादा एमएसएमई क्लस्टर हैं, जहां निवेश के लिए अमेरिकन वेंचर कैपिटलिस्ट्स के साथ सरकार के स्तर से लगातार संपर्क साधा जा रहा है। सरकार को उम्मीद है कि प्रदेश के स्टार्टअप्स में अमेरिकी निवेशकों की हिस्सेदारी होने से यूपी में यूनिकॉर्न की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि होगी। साथ ही राज्य से मेधा के पलायन को रोकने में भी काफी मदद मिलेगी। इसमें एप्पल, माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन, अल्फाबेट (गूगल), अमेजॉन, मेटा, वीज़ा, इंटेल, सिस्को, ऑरेकल और अडोबी शामिल हैं। इसमें आर्चर डेनियल्स मिडलैंड (एडीएम), सिजेन्टा, ब्यूरो वेरिटाज़, कोर्टेवा एग्रीसाइंस, न्यूट्रीन, इंडिगो और पॉयनियर शामिल हैं। इसमें बीएई सिस्टम, सफरॉन एसए, रायथॉन, नॉथ्रीप ग्रुम्मैन, जीई एविएशन, जनरल डायनेमिक्स कॉर्पोरेशन, लॉकहीड मार्टिन कॉर्पोरेशन, यूनाइटेड टेक्नोलॉजी कॉर्पोरेशन (यूटीसी), एयरबस एसई और दि बोइंग कंपनी शामिल हैं। इनमें जॉनसन एंड जॉनसन, फाइजर इंक, मर्क एंड कंपनी, ऐबवाई इंक, ब्रिस्टल मेयर्स स्क्वीब, एब्बोट लैबोरेटरीज़, ऐमगन, गिलीड साइंसेज़, एली लिली एंड कंपनी और बायोजेन शामिल हैं। इसमें एक्सन मोबिल कॉर्पोरेशन, जनरल इलेक्ट्रिक, कॉन्को फिलिप्स, डोमिनियन इनर्जी, ड्यूक इनर्जी कॉर्पोरेशन और दि सदर्न शामिल हैं। इनमें डीसीएम वेंचर, ग्रेलॉक पार्टनर, इनसाइट वेंचर पार्टनर और यूनियन स्क्वायर वेंचर शामिल हैं।

पर्यटन *जुलाई 2017 में 4.60 लाख देसी पर्यटक पहुंचे थे बनारस*

पांच साल में 10 गुना बढ़ गई वाराणसी में पर्यटकों की संख्या

■ वाराणसी/लखनऊ

मोदी-योगी सरकार में बनारस को हजारों करोड़ की विकास परियोजनाओं की सौगात मिल चुकी है। इसके साथ ही यहां की अद्वितीय विरासत को सहेजने-संवारने के कारण देश और दुनिया के लोगों के बीच काशी का आकर्षण पहले से काफी बढ़ गया है। इसका असर यहां पर्यटकों की संख्या में वृद्धि के रुप में दिखने लगा है। भारतीय पर्यटकों के अलावा विदेशी मेहमानों की संख्या भी काशी में तेजी से बढ़ी है। बीते पांच साल से तुलना करें तो वाराणसी में देसी पर्यटकों की संख्या दस गुना तक बढ़ गयी है। पर्यटन विभाग की ओर से जनवरी 2017 से लेकर जुलाई 2022 तक के आंकड़े प्राप्त हुए हैं। इसमें भारतीय पर्यटकों के आगमन में अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज की गयी है। इसके अलावा कोविड महामारी के चलते पिछले दो वर्ष से विदेशी सैलानियों की आवाजाही में ठहराव आ गया था, जिसमें इस साल तेजी से बढ़ोतरी हुई है। पर्यटन उप निदेशक, प्रीति श्रीवास्तव ने बताया कि वर्ष 2022 में महज जुलाई माह में वाराणसी पहुंचने वाले भारतीय पर्यटकों की संख्या 40 लाख 3 हजार 288 है, जो जुलाई 2017 के 4,61,650 के मुकाबले करीब दस गुना ज्यादा है। वहीं विदेशी पर्यटकों की बात करें तो इनकी संख्या में भी कोरोना काल के बाद 174 गुना का इजाफा दर्ज किया गया है। वर्ष 2022 में जुलाई में 12,578 विदेश पर्यटक बनारस पहुंचे, जबकि 2021 में ये संख्या महज 72 थी। इसी साल सावन के महीने में श्रद्धालुओं की रिकॉर्ड आमद वाराणसी में हुई है। पर्यटन विभाग की ओर से अभी केवल जुलाई 2022 तक के आंकड़े जारी किये गये हैं, जबकि इसमें सावन और देव दीपावली के आंकड़े शामिल नहीं हैं। सावन और देव दीपावली में वाराणसी पहुंचने वाले सैलानियों की संख्या रिकॉर्डतोड़ रही हैं। पर्यटन उद्योग से जुड़े व बनारस होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष गोकुल शर्मा का कहना है कि बेहतर कनेक्टिविटी के चलते पर्यटक वाराणसी के साथ ही अयोध्या, विन्ध्याचल और प्रयागराज भी जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि छुट्टियों, पर्वों व त्योहारों में काशी में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने लगी है। टेंट सिटी, रिवीर फ्रंट, नमो घाट जैसी पर्यटन, परिवहन तथा मूलभूत सुविधाओं को मजबूत करने वाली परियोजनाओं के पूरा होने के बाद काशी सहित वाराणसी और मिर्जापुर मंडल में पर्यटन उद्योग को और ऊंचाई मिलेगी। उत्तर प्रदेश को वन ट्रिलियन इकॉनमी बनाने में पर्यटन उद्योग अहम भूमिका अदा करने वाला है। योगी सरकार की ओर से प्रदेश के पर्यटन स्थलों का विकास, कनेक्टिविटी और वहां मूलभूत सुविधाएं तथा बेहतर कानून व्यवस्था देने से प्रदेश में पर्यटकों के लिए अनुकूल माहौल बना गया है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण वाराणसी बनकर उभरा है, जो विश्व के पर्यटन मानचित्र पर तेजी से उभरकर सामने आया है। इसकी वज़ह है वाराणसी का चौतरफ विकास। उन्होंने बताया कि सड़कों और फ्लाईओवर का जाल, सुगम पार्किंग, पर्यटकों के लिए सुविधाएं और सुदृढ़ कानून व्यवस्था। इसके अलावा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वाराणसी और आसपास की मूलभूत सुविधाओं को बेहतर बनाया है, जिससे पर्यटकों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम के लोकार्पण के बाद पर्यटकों की संख्या में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गयी है। इसके अलावा गंगा और घाटों की सफाई, गौतम बुद्ध की उपदेश स्थली सारनाथ का विकास, गंगा में क्रूज़ आदि पर्यटकों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण कारक बनकर सामने आये हैं।

अदार पूनावाला बनकर सीरम इंस्टीट्यूट को लगाया एक करोड़ से ज्यादा का चूना

सात आरोपी गिरफ्तार

मुंबई, (एजेंसी)। पुणे पुलिस ने सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) से धोखाधड़ी के मामले में एक बड़ी कामयाबी हाथ लगने का दावा किया है।

पुलिस ने एसआईआई से एक करोड़ रुपए से ज्यादा की धोखाधड़ी के मामले में सात आरोपियों को गिरफ्तार किया है। दरअसल, सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया या एसआईआई के निदेशकों में से एक सतीश देशपांडे को सितंबर 2022 में किसी ने कंपनी के सीईओ अदार पूनावाला बनकर उन्हें वॉट्सएप पर एक मैसेज भेजा था। इस मैसेज में उन्हें सात अलग-अलग बैंक अकाउंट में पैसे भेजने के लिए कहा गया था।

सतीश देशपांडे ने अदार पूनावाला का मैसेज मानकर उस पर विश्वास कर लिया और बताए गए बैंक अकाउंट में 1 करोड़ रुपए से ज्यादा ट्रांसफर कर दिए। इस घटना के कुछ दिन बाद पता चला कि उनके साथ धोखा किया गया है। इस संबंध में पुलिस में एक शिकायत दर्ज की गई थी और जांच के दौरान पुणे पुलिस ने उन आठ खातों का पता लगाया, जिनमें पैसे ट्रांसफर किए गए थे।

8 बैंक अकाउंट में ट्रांसफर किया गया पैसा : डीसीपी स्मार्टना पाटिल ने कहा कि शिकायत मिलने पर इस मामले की जांच में पता चला है कि जिन सात लोगों के बैंक अकाउंट में पैसा ट्रांसफर किया गया था, उन्हें अब देश के विभिन्न हिस्सों से गिरफ्तार किया गया है। हालांकि, मुख्य आरोपी अभी लापता है। उन्होंने कहा कि इन सभी खातों समेत 40 दूसरे बैंक अकाउंट को जब्त कर लिया गया, जिसमें इन आठ खातों से पैसों को ट्रांसफर किया गया था। डीसीपी पाटिल ने बताया कि पुलिस ने इन बैंक अकाउंट्स में 13 लाख रुपये भी फ्रीज कर दिए हैं।

पुलिस को मुख्य सरगना की तलाश

पुलिस ने कहा कि पुणे सिटी पुलिस की साइबर यूनिट ने सीईओ अदार पूनावाला बनकर सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया को धोखा देने के मामले में शामिल 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इस मामले में अब तक कुल 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। आरोपी बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश के रहने वाले हैं और बीटेक व बीएससी स्नातक हैं। उनमें से एक कॉमर्शियल बैंक में काम करता है। हालांकि, मुख्य आरोपी लापता है। पुलिस मामले जुड़े मुख्य आरोपी की तलाश में जुटी हुई है। इसके लिए एक विशेष टीम अलग-अलग जगहों पर छापेमारी भी कर रही है, साथ ही पुलिस गिरफ्तार किए गए आरोपियों से पूछताछ कर जल्द ही मुख्य आरोपी को अरेस्ट करने का दावा कर रही है।

नासा के ओरियन अंतरिक्ष यान ने चंद्रमा की कक्षा में किया प्रवेश

वाशिंगटन, (एजेंसी)। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा (नासा) का ओरियन कैप्सूल अंतरिक्ष यान शुक्रवार को चंद्रमा की कक्षा में स्थापित कर दिया गया। अधिकारियों ने कहा कि चंद्रमा मिशन के शुरुआती देरी के बाद अब यह सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा कि अंतरिक्ष यान के फ्लोरिडा से चंद्रमा के लिए उड़ान भरने के एक हफ्ते बाद, हजारों मील की दूरी तय करने के बाद चंद्रमा की कक्षा में स्थापित हो गया है।

बनाएगा नया रिकॉर्ड

नासा के मुताबिक, कैप्सूल और इसमें रखी तीन परीक्षण डमी ने प्रक्षेपण के एक हफ्ते से ज्यादा समय बाद चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश किया है। यह लगभग एक हफ्ते तक इस व्यापक लेकिन स्थिर कक्षा में रहेगा। यह अंतरिक्ष यान आने वाले वर्षों में अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर ले जाएगा। रिपोर्ट के अनुसार, ओरियन कैप्सूल शुक्रवार तक पृथ्वी से तकरीबन 380000 किलोमीटर की दूरी पर था और आने वाले कुछ दिन में इसके करीब 432000 किलोमीटर की अधिकतम दूरी पर पहुंच जाने की उम्मीद है। इसके साथ ही ये लोगों को ले जाने के लिए बनाए गए कैप्सूल द्वारा तय की दूरी का नया रिकॉर्ड बनाएगा।

उड़ान नियंत्रक करेंगे प्रमुख प्रणालियों की निगरानी: इससे पहले साल 1972 में आखिरी अपोलो मिशन के बाद से चंद्रमा की सतह पर पैर रखने वाला यह पहला अंतरिक्ष यान है। इस यान में बिना चालक दल के साथ तीन परीक्षण डमी को भी रखा गया है, जिसका मकसद यह सुनिश्चित करना है कि यान उड़ान के लिए सुरक्षित है। नासा ने कहा ने कहा कि कक्षा इतनी दूर है कि ओरियन चंद्रमा से लगभग 40000 मील ऊपर उड़ान भरेगा। इसके अलावा उड़ान नियंत्रक चंद्रमा की कक्षा में प्रमुख प्रणालियों की निगरानी करेंगे और अंतरिक्ष के वातावरण का परीक्षण करेंगे। चंद्रमा के चारों ओर आधी परिक्रमा पूरी करने में ओरियन को लगभग एक हफ्ते का टाइम लगेगा।

असम ने लोगों के मेघालय जाने पर जारी रखी 'पाबंदी'

सात जिलों में इंटरनेट सेवा पर रोक की अवधि बढ़ाई

गुवाहाटी/शिलांग, (एजेंसी)। अंतर-राज्यीय सीमा पर विवादित इलाके में हुई हिंसा में 6 लोगों की मौत के बाद असम ने शनिवार को लगातार पांचवें दिन लोगों और निजी वाहनों के मेघालय जाने पर पाबंदी जारी रखी। इस हिंसा में छह लोगों की मौत हो गई थी। दूसरी तरफ मेघालय ने प्रदेश के सात प्रभावित जिलों में इंटरनेट सेवा पर रोक शनिवार सुबह साढ़े 10 बजे से अगले 48 घंटे के लिए बढ़ा दी। मेघालय के हिंसा प्रभावित जिलों में कानून-व्यवस्था की स्थिति हालांकि धीरे-धीरे सामान्य हो रही है। शिलांग में दुकानें और व्यावसायिक प्रतिष्ठान खुल रहे हैं और सड़कों पर यातायात दिखाई दे रहा है।

पुलिस के एक अधिकारी ने कहा कि मेघालय की राजधानी में कोई बड़ी घटना नहीं हुई। पश्चिमी जयंतिया हिल्स जिले में सिर्फ कुछ उपद्रवियों ने सड़क पर टायर जलाए। सुरक्षा बलों की भारी तैनाती के बीच हालांकि विवादित क्षेत्र में सीआरपीसी की धारा 144 के तहत निषेधाज्ञा लागू रही। असम पुलिस ने राज्य के लोगों को कानून-व्यवस्था की स्थिति को देखते हुए मेघालय की यात्रा नहीं करने की सलाह दी है। गौरतलब है कि मंगलवार तड़के अवैध रूप से काटी गई लकड़ियों से लदे एक ट्रक को असम के वन कर्मियों द्वारा रोके जाने के बाद असम-मेघालय सीमा पर मुकरोह गांव में हिंसा हुई थी, जिसमें एक वन रक्षक समेत छह लोगों की मौत हो गई थी।

जोराबाट इलाके और कछार जिले में लगाए बैरिकेड

पुलिस के एक अधिकारी ने कहा कि 'हम असम के लोगों से फिलहाल मेघालय की यात्रा नहीं करने को कह रहे हैं, लेकिन अगर किसी को आपात स्थिति के कारण पड़ोसी राज्य जाना पड़ता है, तो हम उसे मेघालय में पंजीकृत वाहन में जाने के लिए कह रहे हैं।' गुवाहाटी के जोराबाट इलाके और कछार जिले में मंगलवार से बैरिकेड लगाए गए हैं, जो पहाड़ी राज्य के दो मुख्य प्रवेश बिंदु हैं। वाणिज्यिक वाहन हालांकि बिना किसी प्रतिबंध के चलते रहे। असम पेट्रोलियम मजदूर संघ द्वारा टैंकरों और चालक दल पर हमले के डर से असम से ईंधन का परिवहन बृहस्पतिवार को निलंबित कर दिया गया था, लेकिन मेघालय सरकार द्वारा सुरक्षा के आश्वासन के बाद शुक्रवार को इसे फिर से शुरू किया गया।

सोशल मीडिया का किया जा सकता है दुरुपयोग

दूसरी ओर मेघालय सरकार ने पश्चिम और पूर्वी जयंतिया हिल्स, ईस्ट खासी हिल्स, री-भोई, ईस्टर्न वेस्ट खासी हिल्स, वेस्ट खासी हिल्स और साउथ वेस्ट खासी हिल्स में मोबाइल इंटरनेट सेवाओं पर रोक अगले 48 घंटे यानी सोमवार सुबह साढ़े 10 बजे तक के लिए बढ़ा दी। गृह विभाग के प्रधान सचिव शकील अहमद की ओर से सोमवार को जारी अधिसूचना में यह जानकारी दी गई। सरकार ने कहा कि सोशल मीडिया और मैसेजिंग ऐप का दुरुपयोग किया जा सकता है, जिससे कानून व्यवस्था चरमरा सकती है। असम और मेघालय के बीच 884.9 किलोमीटर लंबी अंतर-राज्यीय सीमा से सटे 12 इलाकों में लंबे समय से विवाद है। जिस जगह पर हिंसा हुई वह उन इलाकों में से एक है।

सहारनपुर में डाला इनकम टैक्स की टीम ने डेरा

लगातार तीसरे दिन भी जारी है रेड, निशाने पर हैं कई कारोबारी

सहारनपुर, (एजेंसी)। सहारनपुर के कई प्रमुख कारोबारियों के आवास और प्रतिष्ठानों पर इनकम टैक्स की छापेमारी लगातर तीसरे दिन शनिवार को भी जारी है. 24 नवंबर से चल रही इनकम टैक्स के छापेमारी से पूरे शहर में हड़कंप मचा हुआ है। बता दें कि 24 नवंबर की सुबह करीब 6 बजे इनकम टैक्स की करीब एक दर्जन से अधिक गाड़ियों में इनकम टैक्स के अधिकारियों ने शहर के कई कारोबारियों के अलग-अलग ठिकानों पर छापा मारा। आयकर विभाग की छापे की कार्रवाई से शहर के कारोबारियों में अफरातफरी मची है। जिन कारोबारियों के यहां छापे की कार्रवाई हो रही है, उनमें से कई प्रॉपर्टी डीलिंग का भी काम करते हैं।

इनकम टैक्स विभाग की टीम ने एक ज्वेलर्स के कोर्ट रोड स्थित प्रतिष्ठान और चर्च कंपाउंड स्थित आवास पर रेड की, जिसके बाद कोर्ट रोड स्थित दुकान पर देर रात तक टीम ने छानबीन की। ज्वेलर्स प्रॉपर्टी का भी कारोबार करते है। टीम ने शहर के एक शहद कारोबारी के आवास पर भी छापे की कार्रवाई की। इनकम टैक्स की टीम ने अहमदबाग में एक सीए के आवास पर भी छापा मारा है। इनके अलावा टीम ने हार्डवेयर के कारोबारी के यहां भी रेड की।

शुक्रवार देर रात तक जारी रही रेड

जानकारी के अनुसार रेड करने वाली टीम में गाजियाबाद के अलावा दिल्ली और कानपुर के अधिकारी भी शामिल रहे। टीम इन सभी व्यापारियों से पूछताछ कर रही है। सभी स्थानों पर आयकर विभाग की कार्रवाई देर शाम तक चली। हालांकि टीम में शामिल इनकम टैक्स के अधिकारियों ने कुछ भी बताने से इंकार किया है। वही ये छापेमारी दूसरे दिन यानी 25 नवंबर की देर रात तक जारी रही और सभी अधिकारियों ने पूरी रात इन सभी कारोबारियों के आवासों पर गुजारी। बता दें कि लगातार पिछले 48 घंटे से चल रही कारवाई से शहर में चर्चाओं का माहौल गर्म है।

संगठित और निर्भीक होकर विधि क्षेत्र में कार्य करें अधिवक्ता : सुनील कुमार

प्रयागराज (ब्यूरो)। यूनाइटेड फ्रंट एडवोकेट्स के तत्वावधान में शनिवार को संविधान दिवस पर अधिवक्ताओं की एक गोष्ठी कसारी मसारी स्थित गेस्ट हाउस में हुई। जिसमें सबसे पहले संविधान दिवस की प्रस्तावना का वाचन यूनाइटेड फ्रंट एडवोकेट्स के समस्त पदाधिकारियों द्वारा किया गया।

इस मौके पर अधिवक्ता आरएस चौधरी ने कहा कि भारतीय संविधान विश्व में सबसे बड़ा लिखित संविधान है। संविधान निर्माताओं ने ऐसा इसलिए किया, ताकि संवैधानिक संस्थाएं कानूनी प्रावधानों से शासित हों। अधिवक्ता सुनील कुमार ने कहा कि सभी लोग अपने अधिकार क्षेत्र में रहकर स्वतंत्र और निर्भय होकर काम करें। अधिवक्ताओं को निर्भीक होकर विधि के क्षेत्र में कार्य करना चाहिए। उन्होंने संगठन के बारे में बताने के साथ आगामी कार्यक्रमों को लेकर विस्तार से अपना विषय रखा। अधिवक्ता राजीव शर्मा ने कहा कि अधिवक्ताओं को संगठित होकर कार्य करने की अपील की। इस मौके पर आगामी हाईकोर्ट बार एसोसिएशन चुनाव को लेकर भी सभी अधिवक्ताओं ने मंथन किया। आगामी चुनाव को लेकर अधिवक्ताओं ने रणनीति तैयार की।अधिवक्ता वीएस चौहान ने कहा कि बार एसोसिएशन के चुनाव में नियमित वकालत करने वाले अधिवक्ताओं को चुनकर बार में लाना होगा। उन्होंने कहा कि बार कमजोर होगी तो अधिवक्ताओं की मूल समस्याओं का समाधान संभव नहीं है।

महाप्रबंधक सतीश कुमार ने किया निरंजन पुल का निरीक्षण

प्रयागराज (ब्यूरो)। महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे, सतीश कुमार ने शनिवार को प्रयागराज निरंजन पुल का निरीक्षण किया। इस निरीक्षण के दौरान कुमार ने प्रयागराज यार्ड रीमोडलिंग कार्य का गहनता से निरीक्षण किया, जिससे रामबाग स्टेशन से प्रयागराज तक के आगामी दोहरीकरण के बाद परिचालन में सुविधा हो तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

अधिकारियों के साथ की बैठक

इस अवसर पर प्रयागराज मंडल के संकल्प सभागार में महाप्रबंधक की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ स्टेशन पुनर्विकास कार्य पर परिचर्चा हुई तथा कार्य को सुचारू तथा समय से पूर्ण कराने के लिए निर्देशित किया गया। महाप्रबंधक ने बैठक मे अन्य महत्वपूर्ण विषयों से संबंधित गहन जानकारी ली और आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक मोहित चंद्रा सहित मुख्यालय एवं मंडल के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

संविधान दिवस पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में विचार संगोष्ठी

प्रयागराज (ब्यूरो)। उप शिक्षा निदेशक/प्राचार्य डायट प्रयागराज, राजेंद्र प्रताप के मार्गदर्शन में संविधान दिवस पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मे विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आरंभ वरिष्ठ प्रवक्ता शिवनारायण सिंह, आलोक तिवारी द्वारा संविधान के शिल्पकार डॉ. भीमराव आंबेडकर, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पण के उपरांत हुआ। इस दौरान भाषा प्रतियोगिता, पोस्टर प्रस्तुतिकरण एवं प्रश्नोत्तरी हुई। कार्यशाला में संविधान की गौरवमयी यात्रा, संवैधानिक मूल्यों और आदर्शों को जीवन में उतारने की बात शिवनारायण सिंह द्वारा की गई। कार्यशाला में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं का निर्णय प्रवक्ता अमित सिंह एवं अम्बालिका मिश्रा द्वारा किया गया, जिसमें प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता मे 2022 बैच के वर्ग-अ के प्रशिक्षु प्रथम रहे, भाषण प्रतियोगिता मे वर्ग ब के अवधेश मिश्रा प्रथम, श्रीकान्त यादव द्वितीय एवं वर्ग अ से विकास पाण्डेय, आदर्श संयुक्त रूप से तृतीय स्थान रहे। पोस्टर प्रस्तुतिकरण मे वर्ग अ एवं ब के निरंजना एवं अंजू प्रथम, हेमन्त, स्मृति द्वितीय तथा हरिप्रिया एवं आश्चर्या शुक्ला तृतीय स्थान प्राप्त किया।

आज का इतिहास

- **1095** : पोप अर्बन द्वितीय ने पहले क्रूसेड (धर्मयुद्ध) का उपदेश दिया।
- **1795** : पहले बांग्ला नाटक का मंचन हुआ।
- **1815** : पोलैंड साम्राज्य ने संविधान अपनाया।
- **1895** : अल्फ्रेड नोबेल ने नोबेल पुरस्कार की स्थापना की।
- **1912** : अल्बानिया ने राष्ट्रीय ध्वज अपनाया।
- **1947** : पेरिस में पुलिस ने कम्युनिस्ट समाचार-पत्र के कार्यालय पर कब्जा कर लिया।
- **1953** : अमरीका के ड्रामा लेखक यूजीन ओ नील का निधन हुआ।
- **1967** : फ्रांस के राष्ट्रपति चार्ल्स डी गॉल ने फिर दोहराया कि वह ब्रिटेन की सामूहिक बाजार की कोशिशों का विरोध करेंगे।
- **1975** : गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के सह-संस्थापक रॉस मैक्विर्टर की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक की बेटी अनुष्का सुनक ने किया कुचिपुड़ी नृत्य

लंदन, (एजेंसी)। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक की बेटी अनुष्का सुनक ने शुक्रवार को लंदन में कई बच्चों के साथ कुचिपुड़ी नृत्य का प्रदर्शन किया। नौ वर्षीय अनुष्का का कुचिपुड़ी डांस का ये प्रदर्शन 'रंग'- अंतर्राष्ट्रीय कुचिपुड़ी नृत्य महोत्सव-2022 का एक हिस्सा था। ये नृत्य महोत्सव ब्रिटेन में कुचिपुड़ी नृत्य शैली का सबसे बड़ा उत्सव है, जिसमें कई बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक की कई पीढ़ियां हिस्सा लेती हैं।

इस इंटरनेशनल कुचिपुड़ी नृत्य महोत्सव में 4-85 वर्ष के आयु वर्ग के करीब 100 कलाकारों ने हिस्सा लिया। जिनमें लाइव संगीतकार, बुजुर्ग नृत्य कलाकार (65+ वर्ष के लोगों का नृत्य प्रदर्शन समूह), नृत्य को सीखने में अक्षम व्हीलचेयर वाले डांसर, पोलैंड के अनुदान प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय नटरंग ग्रुप के छात्र भी शामिल थे। इंफोसिस के सह-संस्थापक नारायण मूर्ति की बेटी अनुष्का सुनक की मां अक्षता मूर्ति ने ऋषि सुनक के माता-पिता के साथ इस कुचिपुड़ी नृत्य कार्यक्रम में हिस्सा लिया। गौरतलब है कि ऋषि सुनक यूनाइटेड किंगडम के 57वें प्रधानमंत्री हैं और पीएम का कार्यालय संभालने वाले पहले भारतीय मूल के व्यक्ति हैं। भारतीय मूल के पूर्व चांसलर ने 10 डाउनिंग स्ट्रीट के ऊपर छोटे फ्लैट में वापस जाकर नियम को उलट दिया है, जिसे आमतौर पर चांसलर ऑफ एक्सचेकर के घर के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। सुनक ने टाइम्स अखबार को बताया कि 'हमने सोचा कि यह उनके (चांसलर जेरेमी हंट) के लिए अच्छा होगा कि उनके पास थोड़ी ज्यादा जगह हो, इसलिए मैंने सोचा कि यह करना सही है।' 42 साल की उम्र में ऋषि सुनक 200 वर्षों में सबसे कम उम्र के ब्रिटिश प्रधानमंत्री हैं।

तोकायेव ने कजाख राष्ट्रपति के रूप में ली शपथ

अस्ताना, (एजेंसी)। कजाकिस्तान में हाल में हुए राष्ट्रपति चुनाव में जीत हासिल करने वाले कासिम-जोमार्ट तोकायेव ने देश की जनता के नाम पर शपथ ली और देश के प्रमुख का पद ग्रहण किया।

श्री तोकायेव ने शपथ ग्रहण समारोह के दौरान कहा कि मैं कजाकिस्तान के लोगों की ईमानदारी से सेवा करने, कजाकिस्तान के संविधान और कानूनों का सख्ती से पालन करने, नागरिकों के अधिकारों एवं स्वतंत्रता की गारंटी देने, कजाकिस्तान के राष्ट्रपति के उच्च कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करने की शपथ लेता हूं। इसके अलावा, उन्होंने दावा किया कि पर्यवेक्षकों, विशेषज्ञों और पत्रकारों के अनुसार कजाकिस्तान में राष्ट्रपति चुनाव निष्पक्ष और खुले तौर पर आयोजित किया गया था। कजाख नेता ने कहा कि लोगों की गतिविधि विशेष रूप से अधिक थी। कुछ नागरिक अपने पूरे परिवार के साथ मतदान केंद्रों पर आए। श्री तोकायेव ने कजाख संविधान में संशोधन की भी बात कही जो देश के राष्ट्रपति के चुनाव को सात साल के कार्यकाल के लिए फिर से चुनाव के अधिकार के बिना प्रदान करता है।

वैज्ञानिकों को चीन के चमगादड़ में मिले कोरोना की तरह का वायरस

सावधान! इंसानों में भी नया वायरस फैलने का खतरा

सिडनी, (एजेंसी)। कोरोना वायरस के आतंक से अभी तक दुनिया को आजादी नहीं मिली है। अब भी कई देशों में बड़े पैमाने पर इसके संक्रमण के मामले आ रहे हैं। इस बीच चीन ने पूरी दुनिया के लिए एक बार फिर से खतरे की घंटी बजा दी है। वैज्ञानिकों को चीन के चमगादड़ में एक नया वायरस मिला है। दावा किया किया जा रहा है कि ये कोरोना की तरह ही है। चिंता की बात ये है कि ये वायरस इंसानों में भी फैल सकता है।

ब्रिटिश अखबार मिरर के मुताबिक चीनी और ऑस्ट्रेलियाई वैज्ञानिकों ने लाओस और म्यांमार की सीमा से सटे चीन के युन्नान प्रांत में 149 चमगादड़ों

के सैंपल लिए। जांच के दौरान पता चला कि इसमें पांच ऐसे वायरस हैं जो इंसानों या पशुओं में बीमारी फैला सकता है। इसमें मौजूद बीटीएसवाय2 नाम का एक वायरस एसएआरएस-सीओवी-2 से जुड़ा हुआ है. ये वहीं वायरस है जिससे पूरी दुनिया में कोविड-19 फैला था।

कई वायरस की हुई पहचान

सिडनी विश्वविद्यालय में एक विकासवादी जीवविज्ञानी और वायरोलॉजिस्ट और रिपोर्ट के सह-लेखक प्रोफेसर एडी होम्स ने कहा कि 'इसका मतलब है कि सार्स-सीओवी-2 जैसे वायरस अभी भी चीनी चमगादड़ों में घूम रहे हैं। लिहाजा कोरोना की तरह वायरस फैलने का खतरा बना हुआ है। शोधकर्ताओं ने एक समय में एक ही चमगादड़ को संक्रमित करने वाले कई वायरस की पहचान की है।

नया वायरस कोरोना की तरह करता है हमला

बीटीएसवाय2 में स्पाइक प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी होता है, जो कोविड के समान मानव कोशिकाओं पर हमला करता है, यानी इससे ये साफ है कि ये वायरस इंसानों को संक्रमित कर सकता है। युन्नान प्रांत में कई रोगजनक वायरस पहले ही पाए जा चुके हैं, जिनमें एसएआरएस-सीओवी-2 के करीबी शामिल हैं, जैसे बैट वायरस आरएटीजी1313 और आरपीवायएन0614। इस बात के पहले ही प्रमाण मिल चुके हैं कि एसएआरएस-सीओवी-2 चमगादड़ में उत्पन्न हुआ था, लेकिन यह भी संभावना है कि यह पैंगोलिन, एक पपड़ीदार स्तनपायी के माध्यम से मनुष्यों में फैल सकता है।

सियासत

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान का बड़ा फैसला

पीटीआई के सभी सदस्य देंगे इस्तीफा

रावलपिंडी, (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने शनिवार को रावलपिंडी में रैली के दौरान बड़ी घोषणा की है। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी ने सभी विधानसभाओं से इस्तीफा देने का फैसला किया है। पाक के पूर्व प्रधानमंत्री ने पंजाब और केपीके विधानसभाओं को भंग करने की घोषणा करते हुए कहा कि हमने तय किया है कि हम सभी विधानसभाओं से इस्तीफा देने जा रहे हैं। हम इस व्यवस्था का हिस्सा नहीं रहने जा रहे हैं। इमरान खान ने कहा कि मैं इस देश के लिए खून की आखिरी बूंद तक लडूंगा।

इमरान खान ने आरोप लगाया कि इस महीने की शुरुआत में उनकी हत्या के नाकाम प्रयास में शामिल तीन अपराधी उन्हें फिर से निशाना बनाने की ताक में हैं। रावलपिंडी में अपनी पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ की एक बड़ी रैली को संबोधित करते हुए खान ने कहा कि उनका मौत के साथ करीबी सामना हुआ था और

उन्होंने अपने ऊपर हमले के दौरान गोलियों को सिर के ऊपर से गुजरते हुए देखा था।

कर्बला की लड़ाई याद दिलाई: उन्होंने कर्बला की लड़ाई का जिक्र करते हुए कहा कि डर पूरे देश को गुलाम बना देता है। कर्बला में पैगंबर मोहम्मद के नवासे इमाम हुसैन और उनके परिवार के सदस्यों की हत्या कर दी गई थी, क्योंकि उन्होंने अपने समय के अत्याचारी शासक के खिलाफ आवाज उठाई थी। खान, शनिवार को रावलपिंडी में एक हेलीकॉप्टर से पहुंचे। उनके साथ डॉक्टरों की एक टीम भी थी। पूर्व प्रधानमंत्री खान ने कहा कि जब वह लाहौर से निकल रहे थे तो सभी ने उन्हें सलाह दी कि वह अभी घायल हैं, इसलिए न जाएं, क्योंकि इससे खतरा हो सकता है।

इमरान बोले- जीना चाहते हैं तो मौत का खौफ छोड़ दें

खान ने कहा कि वह इसलिए आगे बढ़े, क्योंकि उन्होंने मौत को करीब से देखा था। उन्होंने कहा कि यदि आप जीना चाहते हैं, तो मौत का खौफ छोड़ दें। खान ने कहा कि राष्ट्र एक निर्णायक बिंदु और चौराहे पर खड़ा है, जिसके सामने दो रास्ते हैं- एक रास्ता दुआओं और महानता का है जबकि दूसरा रास्ता अपमान और विनाश का है। वह देश में जल्द चुनाव की मांग करते हुए लॉन्ग मार्च का नेतृत्व कर रहे हैं।

एक नजर

इक्वाडोर और नीदरलैंड का मैच ड्रॉ

अल रेयान। स्ट्राइकर इनेर वालेंशिया के विश्व कप के तीसरे गोल की मदद से इक्वाडोर ने शुक्रवार को नीदरलैंड को।.। से डॉ पर रोका और इसके साथ ही मेजबान कतर टूर्नामेंट से एक सप्ताह के भीतर ही बाहर हो गया। ग्रुप ए में नीदरलैंड और इक्वाडोर दोनों के चार अंक हो गए और इस मैच से पहले सेनेगल से 3 .। से हारी कतर की टीम खाता भी नहीं खोल सकी है। उसे पहले मैच में इक्वाडोर ने हराया था। नीदरलैंड के लिए छठे ही मिनट में कोडी गाकपो ने गोल किया लेकिन उसके बाद से इक्वाडोर की टीम हावी रही। उसके लिए बराबरी का गोल 49वें मिनट में वालेंशिया ने किया।

पोलैंड ने सउदी अरब को हराया

अल रेयान। आखिरकार रॉबर्ट लेवांडोवस्की ने विश्व कप में गोल अपने नाम किया जिसकी मदद से पोलैंड ने सउदी अरब को 2-0 से हराकर नॉकआउट चरण में प्रवेश की उम्मीदें प्रबल कर ली। लेवांडोवस्की ने 82वें मिनट में गोल किया जिसके बाद उनकी आंखें भर आई। वह बांहे खोलकर किनारे पर गए और बैठ गए। उनके साथी खिलाड़ियों ने उन्हें बधाई दी। उन्होंने उठकर अपना चेहरा पोछा और दर्शकों की ओर चुंबन दिया। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ फॉरवर्ड में से एक लेवांडोवस्की ने 40वें मिनट में पहले गोल में भी सूत्रधार की भूमिका निभाई थी जिसे अंतिम टच पियोत्र जीलिंस्की ने दिया। सउदी अरब को पहले हाफ के आखिर में बराबरी का मौका मिला लेकिन पोलैंड के गोलकीपर वोजसिएज एस ने सलीम अल डासारी की पेनल्टी किक पर गोल नहीं होने दिया। उन्होंने रिबाउंड पर मोहम्मद अल बुराइक का शॉट भी रोका। पोलैंड का सामना अब अर्जेंटीना से होगा जबकि सउदी अरब की टक्कर ग्रुप सी के आखिरी मैच में मेक्सिको से होगी।

आईओए अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ेंगी पी टी उषा

नई दिल्ली। उड़नपरी पी टी उषा ने शनिवार को भारतीय ओलंपिक संघ के अध्यक्ष पद के चुनाव के लिए नामांकन भरने का ऐलान करके सभी को चौंका दिया। चुनाव दस दिसंबर को होंगे। एशियाई खेलों में 400 मीटर बाधा दौड़ में कई स्वर्ण पदक जीत चुकी उषा ने ट्वीट करके यह घोषणा की। उन्होंने लिखा, साथी खिलाड़ियों और राष्ट्रीय महासंघों के समर्थन से मै आईओए अध्यक्ष पद के लिए नामांकन स्वीकार करके और भरकर काफी गौरवान्वित हूं। नामांकन भरने की आखिरी तारीख रविवार है। आईओए चुनाव के लिए निर्वाचन अधिकारी उमेश सिन्हा ने कहा कि शुक्रवार को प्रक्रिया शुरू होने के बाद से अभी तक कोई नामांकन नहीं भरे गए।

भारतीय बल्लेबाजों को बदलना होगा पावरप्ले में खेलने का रवैया

एजेंसी ■ हैमिल्टन

भारतीय टीम जब रविवार को यहां करो या मरो के दूसरे एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में न्यूजीलैंड से भिड़ेगी तो उम्मीद करेगी कि कप्तान शिखर धवन और युवा शुभमन गिल पावरप्ले ओवरों में बेहतर रवैया अपनाएं। सेडोन पार्क तीनों ओर से खुला मैदान है लेकिन न्यूजीलैंड में बल्लेबाजों के लिए सबसे मददगार मैदानों में से एक के रूप में मशहूर है जिसमें बल्लेबाजों को अपने शॉट के लिए उचित रन मिलेंगे। पहले वनडे में धवन (77 गेंद में 72 रन) और गिल (65 गेंद में 50 रन) ने पहले विकेट के लिए 123 रन की भागीदारी निभाई थी लेकिन ईडन पार्क जैसे छोटे मैदान पर सात विकेट पर 306 रन का स्कोर कम से कम 40 रन से कम रहा। गेंदबाजों ने महज 47 ओवर में ए रन गंवा दिए जिससे जिम्मेदारी मुख्य बल्लेबाजों पर ही आ जाती है क्योंकि अगर वाशिंगटन सुंदर ने शानदार योगदान नहीं दिया होता तो भारत 300 रन के आंकड़े तक भी नहीं पहुंच पाता। यह काफी हद तक पहले 10 पावरप्ले ओवरों में भारतीय सलामी बल्लेबाजों के सतर्कता भरे दृष्टिकोण की बदौलत ही हुआ जिसमें जरूरत के मुताबिक रन नहीं बने। मोईन अली ने हाल में एक साक्षात्कार में कहा था कि जो टीमें पहले सफेद गेंद के क्रिकेट में आस्ट्रेलिया के तरीके को अपनाती थीं अब वे इंग्लैंड की ओर देखने लगी हैं जिसने हाल के दिनों में इस प्रारूप में शानदार प्रदर्शन किया है। भारतीय टीम इसी में पिछड़ रही है और ऑकलैंड में टीम पहले पावरप्ले ओवर में केवल 40 रन ही बना सकी। एक और आंकड़े से भारतीय शीर्ष क्रम बल्लेबाजों के सीमित ओवर के प्रारूप में रवैए का पता चलता है (इसमें सिर्फ रोहित शर्मा, केएल राहुल या विराट कोहली ही शामिल नहीं हैं)। धवन ने 77 गेंद में 72 रन बनाए जिसमें 13 चौके जड़े थे। जिससे उन्होंने 13 गेंदों में चौकों से 52 रन जोड़े। जबकि बचे हुए 20 रन के लिए उन्होंने 64 गेंद खेली और इसमें से 44 डॉट गेंद रहीं क्योंकि वह पावरप्ले में रन नहीं बना पा रहे थे। जहां कप्तान एक ओर जूझ रहा था, वहीं गिल ने एक और अर्धशतक जड़कर अपने कुल औसत को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया लेकिन उनकी पारी की रफ्तार भी बहस का विषय है। उन्होंने 65 गेंद में 50 रन बनाए जिसमें तीन छक्के और एक चौका जड़ा था। मतलब चार गेंद में 22 रन बने। उन्होंने बाकी के 28 रन 61 गेंद खेलकर बनाए। पारी की नींव तैयार करने और तेजी से रन जुटाने का काम अंत की ओर छोड़ने के इसी रवैए से भारत ने टी20 विश्व कप गंवा दिया लेकिन हैरानी की बात है कि इस श्रृंखला के लिए वनडे में खिलाड़ियों के बदलने के बावजूद बल्लेबाजी दृष्टिकोण वही पुराना वाला बना हुआ है। पारी का आगाज करने के लिए इतने सारे खिलाड़ी मशक्कत कर रहे हैं तो यह निहायत ही जरूरी है कि खिलाड़ी तेजी से रन जुटाए ताकि 50 ओवर के विश्व कप से तीन या चार महीने पहले नए चयनकर्ता पूल की 20 के करीब छंटनी करें तो रन की संख्या की अनदेखी नहीं की जा सकती। धवन निश्चित रूप से अगले महीने बांग्लादेश में रोहित के साथ पारी का आगाज करेंगे और कोई गारंटी नहीं है कि शुभमन अंतिम एकादश में अपना स्थान बरकरार रख पाएंगे क्योंकि रोहित सलामी बल्लेबाज के तौर पर वापसी करेंगे। केएल राहुल मध्यक्रम में सूर्यकुमार यादव (अगली श्रृंखला के लिए आराम दिए जाने पर) का स्थान ले सकते हैं। टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की तुलना में वनडे में ऋषभ पंत का स्ट्राइक रेट और औसत काफी बेहतर है लेकिन इस श्रृंखला के उप कप्तान को और अधिक निरंतर रहने की जरूरत है ताकि विकेटकीपिंग के लिए संजू सैमसन और ईशान किशन से आगे रह सकें जो निश्चित रूप से उनके करीब हैं।

टीमें इस प्रकार हैं :

भारत: शिखर धवन (कप्तान), शुभमन गिल, सूर्यकुमार यादव, श्रेयस अय्यर, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), संजू सैमसन (विकेटकीपर), दीपक हुड्डा, शाहबाज अहमद, वाशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल, दीपक चाहर, अर्शदीप सिंह, शार्दुल ठाकुर और उमरान मलिक।

न्यूजीलैंड: केन विलियमसन (कप्तान), फिन एलेन, डेविन कॉनवे, टॉम लैथम, डेरिल मिशेल, ग्लेन फिलिप्स, माइकल ब्रेसवेल, टिम साउदी, मैट हेनरी, एडम मिल्ने, जिमी नीशाम, मिशेल सैंटनर और लॉकी फर्ग्यूसन।

मैच भारतीय समयानुसार सुबह सात बजे शुरू होगा।

मेजबान कतर की विश्व कप टीम का शो खत्म

एजेंसी ■ दोहा

मेजबान कतर का फीफा विश्व कप में सफर खाड़ी देश में फुटबॉल के सबसे बड़े टूर्नामेंट को लांच करने के एक हफ्ते के अंदर ही खत्म हो गया। कतर को शुक्रवार को विश्व कप में सेनेगल से।-3 की हार से लगातार दूसरी पराजय झेलनी पड़ी और उसकी टूर्नामेंट से बाहर होने की पुष्टि कुछ घंटों बाद ही हो गई जब नीदरलैंड और इक्वाडोर ने ग्रुप ए के एक अन्य मैच में।-। से ड्रा खेला। इससे कतर विश्व कप के 92 वर्ष के इतिहास में इतनी जल्दी बाहर होने वाला पहला मेजबान देश बन गया। कतर अंतिम 16 के लिए क्वालीफाई नहीं कर सकता, भले ही नीदरलैंड के खिलाफ ग्रुप के अंतिम मैच का नतीजा कुछ भी हो। दक्षिण अफ्रीका 2010 में ग्रुप चरण से ही बाहर होने वाली एक अन्य मेजबान टीम रही है लेकिन वह कम से कम एक जीत और एक ड्रा खेलने में सफल रही थी। कतर के कोच फेलिक्स सांचेज ने अपनी टीम के आधिकारिक रूप से बाहर होने से पहले कहा, अगर आपने इस टूर्नामेंट में हमारे बहुत आगे तक पहुंचने की उम्मीद की थी

शॉर्ट न्यूज

डी ब्रुइन और बेल्जियम को मिलेगा विश्वकप में प्रभाव छोड़ने का दूसरा मौका

दोहा। बेल्जियम के स्टार मिडफील्डर केविन डी ब्रुइन जानते हैं कि उन्होंने और उनकी टीम ने पिछले मैच में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया था जिसकी भरपाई वह विश्वकप में मोरक्को के खिलाफ रविवार को होने वाले दूसरे मैच में पूरी करना चाहेंगे। डी ब्रुइन को पिछले मैच में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया था लेकिन उन्होंने तब कहा था, मैं नहीं जानता कि मुझे यह ट्रॉफी क्यों दी गई है। हो सकता है कि मेरी ख्याति के कारण ऐसा किया गया हो। बेल्जियम ने अपने पहले मैच में कनाडा को।-0 से हराया लेकिन उसकी टीम किसी भी समय प्रभाव छोड़ने में नाकाम रही। अब बेल्जियम को मोरक्को के खिलाफ रविवार को यह साबित करना होगा कि आखिर वह विश्व में ब्राजील के बाद दूसरे नंबर की टीम क्यों है। बेल्जियम को उसके स्टार खिलाड़ियों के कारण खिताब का प्रबल दावेदार माना जा रहा है। उसकी टीम में कुछ ऐसे खिलाड़ी हैं जो 30 वर्ष से अधिक के हैं और उनका यह आखिरी विश्वकप हो सकता है। इनमें डी ब्रुइन, एडेन हैजार्ड, एक्सल विटसेल, जान वर्टोंघेन, टोबी एल्डरविएरल्ड और गोलकीपर थिबाउट कर्टोइस शामिल हैं। ए सभी खिलाड़ी अब आगामी मैचों में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहेंगे। कनाडा के खिलाफ प्रदर्शन को कोच रहते हुए टीम का सबसे खराब मैच करार देने वाले बेल्जियम के कोच रॉबर्टो मार्टिनेज मोरक्को के खिलाफ कुछ नए चेहरों को मैदान में उतार सकते हैं। इनमें स्टार स्ट्राइकर रोमेलु लुकाकु भी शामिल है जो चोटिल होने के कारण कनाडा के खिलाफ मैच में नहीं खेल पाए थे। मोरक्को ने अपने पहले मैच में 2018 में उपविजेता रही क्रोएशियाई टीम के खिलाफ गोल रहित ड्रा खेला था जो उसके कोच वालिद रेगरागुई के लिए उत्साहजनक शुरूआत रही थी। टीम ने इस मैच में अपनी रक्षा पंक्ति की मजबूती दिखाई थी और बेल्जियम के खिलाफ वह अपने इसी प्रदर्शन को दोहराने की कोशिश करेंगे।

विश्वनाथ, वंशज और देविका को विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक

नई दिल्ली। भारतीय मुक्केबाज विश्वनाथ सुरेश, वंशज और देविका घोरपड़े ने स्पेन के ला नुसिया में चल रही आईबीए युवा पुरुष और महिला विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीते। चेन्नई में जन्में विश्वनाथ ने इस प्रतिष्ठित चैंपियनशिप में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाया। उन्होंने पुरुषों के 48 किग्रा भार वर्ग के फाइनल में फिलीपींस के रोनेल सुयोम को हराकर सोने का तमगा हासिल किया। इसके बाद रिंग पर उतरी भावना शर्मा को महिलाओं के 48 किग्रा भार वर्ग में उज्बेकिस्तान की गुलसेवर गनीवा से 0-5 से हार के कारण रजत पदक से संतोष करना पड़ा। आशीष (54 किग्रा) रजत पदक हासिल करने वाले अन्य भारतीय थे। वह जापानी मुक्केबाज युता साकाई से।-4 से

हार गए। पुणे की रहने वाली देविका ने महिलाओं के 52 किग्रा फाइनल में इंग्लैंड की लॉरेन मैकी को हराकर भारत के खाते में दूसरा स्वर्ण पदक जोड़ा। युवा एशियाई चैंपियन वंशज ने भारत के लिए तीसरा स्वर्ण पदक हासिल किया। सोनीपत के रहने वाले इस मुक्केबाज ने पुरुषों के 63.5 किग्रा भार वर्ग के फाइनल में जॉर्जिया के देमूर कजाया को आसानी से हराया। भारत 11 पदकों के साथ इस प्रतियोगिता में शीर्ष पर है। उसके बाद उज्बेकिस्तान (10), आयरलैंड (सात) और कजाकिस्तान (सात) का का नंबर आता है। इस साल चैंपियनशिप में 73 देशों के लगभग 600 मुक्केबाजों ने भाग लिया। भारत ने महिला वर्ग में आठ पदक जीते जो कि रिकॉर्ड है। रवीना (63 किग्रा) और कीर्ति (81 किग्रा से अधिक) प्रतियोगिता के आखिरी दिन महिला वर्ग के फाइनल में भारत के खाते में दो और स्वर्ण पदक जोड़ सकती हैं। रवीना और कीर्ति क्रमशः नीदरलैंड की मेगन डेक्लेर और आयरलैंड की एलिजाबेथ डी आर्सी से भिड़ेंगी।

अमेरिका ने फिर इंग्लैंड को हताश किया, गोलरहित ड्रॉ पर रोका

एजेंसी ■ अल खोर (कतर)

अमेरिका ने फीफा विश्व कप में शनिवार को 0-0 से ड्रा खेलकर फिर इंग्लैंड को जीत दर्ज करने से महरूम कर दिया। कतर में शुरूआती मैच में ईरान पर 6-2 की बड़ी जीत से प्रबल दावेदार के दर्जे को सही साबित करने वाली इंग्लैंड को अब भी अमेरिका के खिलाफ पहली जीत का इंतजार है। इंग्लैंड के समर्थक इस ड्रा से काफी निराश थे और मैदान में हूटिंग कर रहे थे। तीन बार बार दोनों टीमें फुटबॉल के इस बड़े मंच पर एक दूसरे के सामने हुई हैं और हर बार अमेरिकी टीम इंग्लैंड के फुटबॉल प्रेमियों को निराश करती रही है। इंग्लैंड के कोच गैरेथ साउथगेट ने अपने खिलाड़ियों को अमेरिका के उस रिकॉर्ड की याद दिलाई थी जिसमें 1950 में प्रतिद्वंद्वी टीम ने।-0 से जीत हासिल की थी और 2010 में।-। से ड्रा खेला था। पर खिलाड़ी ग्रेग बेरहाल्टर की युवा और ऊर्जा से भरी टीम के खिलाफ जोशिला प्रदर्शन नहीं कर सके।

इंग्लैंड के कप्तान और 2018 विश्व कप के गोल्डन बूट विजेता हैरी केन का मैच में प्रदर्शन फीका रहा और वह स्टॉपेज-टाइम में हेडर से गोल करने के करीब पहुंचे थे लेकिन असफल रहे। वह अब तक इस टूर्नामेंट में एक भी गोल नहीं कर सके हैं। उन्होंने कहा, यह निश्चित रूप से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं था। हमने दो या तीन मौके मिले थे लेकिन हम गोल नहीं कर सके। ग्रुप बी में इंग्लैंड चार अंक के साथ शीर्ष पर है जबकि अमेरिका दो अंक से तीसरे स्थान पर है। अमेरिका ने वेल्स के खिलाफ अपने पहले मैच के शानदार प्रदर्शन को जारी रखा। इंग्लैंड की टीम खुद को भाग्यशाली समझ सकती है कि पहले हाफ में क्रिश्चियन पुलिसिच का बाएं पैर से लगा शॉट लगाकर क्रासबार हिट करके निकल गया।

डेविस कप : क्रोएशिया को 2-1 से हराकर आस्ट्रेलिया फाइनल में

एजेंसी ■ मलागा (स्पेन)

आस्ट्रेलिया ने क्रोएशिया को 2-। से हराकर 19 साल में पहली बार डेविस कप फाइनल में प्रवेश किया। आस्ट्रेलिया ने अपना 28वां और अंतिम खिताब 2003 में जीता था। लेटन हेविट की टीम शुक्रवार को पहला एकल गंवाने के बाद वापसी करने में सफल रही। फिर आस्ट्रेलिया की युगल जोड़ी ने निर्णायक मुकाबले में एक सेट से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए जीत हासिल की।

आस्ट्रेलिया के लिए 1999 से 2018 तक रिकॉर्ड 43 डेविस कप मुकाबले खेल चुके हेविट ने कहा, मुझे बहुत गर्व है। आस्ट्रेलिया का इस प्रतियोगिता में वास्तव में शानदार इतिहास है। बार्ना कोरिच ने थानासी कोकिनाकिस को 6-4, 6-3 को हराकर क्रोएशिया को आगे कर दिया था। लेकिन एलेक्स डि मिनॉर ने मारिन सिलिच को 6-2, 6-2 से हराकर अपनी टीम को बराबरी पर ला दिया। जिससे युगल मुकाबला निर्णायक हो गया। जोर्डन थॉम्पसन और मैक्स पुर्सेल की जोड़ी ने निकोला मेकटिच और माटे पाविच की जोड़ी को 6-7, 7-5, 6-4 से हराकर अपनी टीम की सेमीफाइनल जीत सुनिश्चित की। डि मिनॉर ने कहा, टीम यही होती है जो कभी हार नहीं मानने वाला इरादा रखती है।

स्पेन के खिलाफ उम्मीदें जीवंत रखने उतरेगा जर्मनी

एजेंसी ■ दोहा

अप्रैल में जब विश्वकप के ड्रा डाले गए थे तो सभी की निगाहें अल बायत स्टेडियम में जर्मनी और स्पेन के बीच होने वाले मुकाबले पर टिकी थी। इन दो पूर्व विश्व चैंपियन के बीच होने वाला यह मुकाबला आठ महीने बाद और अधिक महत्वपूर्ण बन गया है। इन दोनों को खिताब का प्रबल दावेदार माना जा रहा था लेकिन जर्मनी पहले मैच में जापान से हार के कारण बाहर होने के कगार पर खड़ा है। उसे अपनी उम्मीदें जीवंत रखने के लिए रविवार को स्पेन पर हर हाल में जीत दर्ज करनी होगी। स्पेन से हारने पर जर्मनी को लगातार दूसरे विश्वकप में पहले दौर में ही बोरिया बिस्तर समेटना पड़ सकता है। जर्मनी की हार तथा जापान और कोस्टारिका के बीच मैच कम से कम ड्रॉ होने पर चार बार का चैंपियन बाहर हो जाएगा। दूसरी तरफ स्पेन नॉकआउट में अपनी जगह सुरक्षित करना चाहेगा। उसने अपने पहले मैच में कोस्टारिका को 7-0 से हराया था। जर्मनी के लिए संकेत उत्साहजनक नहीं है। उसने स्पेन के खिलाफ जो आखिरी मैच दो साल पहले नेशंस लीग में खेला था उसमें उसे 6-0 से हार का सामना करना पड़ा था।

जापान की निगाहें कोस्टारिका पर जीत से नॉकआउट में पहुंचने पर

एजेंसी ■ दोहा (कतर)

फीफा विश्व कप के शुरूआती मुकाबले में चार बार की चैम्पियन जर्मनी पर उलटफेर भरी जीत दर्ज करने के बाद जापान की निगाहें ग्रुप ई में कोस्टा रिका के खिलाफ जीत दर्ज कर नॉकआउट चरण में जगह बनाने पर लगी होंगी। जापान की इस जीत की तुलना इंग्लैंड में 2015 रग्बी विश्व कप में जापान की दक्षिण अफ्रीका पर 34-32 की उलटफेर भरी जीत से की जा रही है। जर्मनी जैसी शीर्ष टीम के खिलाफ अंडरडॉग (छुपा रूस्तम) के तौर पर उतरा जापान कोस्टा रिका के खिलाफ प्रबल दावेदार होगा और इसमें जीत उसे एक मैच रहते नॉकआउट चरण में पहुंचा देगी। कोस्टा रिका को शुरूआती मैच में स्पेन से 0-7 से हार मिली थी जिससे रविवार को जापान से हार उसे टूर्नामेंट से बाहर कर देगी। कोस्टा रिका को अपने अंतिम मैच में जर्मनी से भिड़ना है और जापान का सामना स्पेन से होगा। पांच लाख के करीब लोगों की आबादी वाला कोस्टा रिका अपने छठे विश्व कप में खेल रहा है। मध्य अमेरिका का यह छोटा सा देश ब्राजील में 2014 में क्वार्टरफाइनल तक पहुंचा था। वहीं जापान की टीम कभी भी विश्व कप के क्वार्टरफाइनल में नहीं पहुंची है जिससे इस बार वह ऐसा करने के लिए प्रतिबद्ध होगी। टीम लगातार सातवीं बार विश्व कप में खेल रही है और वह तीन बार राउंड 16 तक पहुंची है जिसमें 2018 में रूस का विश्व कप भी शामिल है।

जापान के कोच हाजिमे मोरियासू इस बार टीम को क्वार्टरफाइनल तक पहुंचाने के बारे में बात कर रहे हैं। स्थानापन्न रित्सु दोआन और ताकुमा असानो ने जर्मनी के खिलाफ अंत में गोल दागे थे, ए दोनों जर्मनी की बुंदेसलीगा में खेलते हैं।

हॉकी रीड ने कहा, मैच का अंत काफी निराशाजनक था जबकि इससे पहले यह शायद काफी अच्छा प्रदर्शन था।

आकाशदीप की हैट्रिक के बावजूद आस्ट्रेलिया से पहले मैच में 4-5 से हारा भारत

एजेंसी ■ एडीलेड

आकाशदीप सिंह की हैट्रिक भी भारतीय पुरूष हॉकी टीम के काम नहीं आ सकी जिसे शनिवार को यहां अंतिम मिनट में दो गोल गंवाने के कारण पांच मैचों की श्रृंखला के पहले बड़े स्कोर वाले टेस्ट मैच में आस्ट्रेलिया से 4-5 से हार का सामना करना पड़ा। आकाशदीप सिंह (10वें, 27वें और 59वें मिनट) ने तीन गोल दागे जबकि कप्तान हरमनप्रीत सिंह (31वें मिनट) ने पेनल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील किया। आस्ट्रेलिया के लिए लाचलान शार्प (पांचवें), नाथन इफरॉम्स (21वें), टॉम क्रेग (41वें) और ब्लेक गोवर्स (57वें और 60वें) ने गोल दागे। गोवर्स ने मैच के अंत में पेनल्टी कॉर्नर से दो गोल किए। भारतीय मुख्य कोच ग्राहम रीड मैच के अंतिम चरण में अपनी टीम के प्रदर्शन से निराश थे। रीड ने कहा, मैच का अंत काफी निराशाजनक था जबकि इससे पहले यह शायद काफी अच्छा प्रदर्शन था। हमने कुछ चरण में विशेषकर दो क्वार्टर में निराशाजनक प्रदर्शन किया लेकिन मुझे लगता है कि हमने काफी अच्छी वापसी की लेकिन दुर्भाग्य से हमने फिर अंत में बढ़त (आस्ट्रेलिया को) दे दी। हमें इसमें ही अब बेहतर होना होगा। उन्होंने कहा, अब चुनौती है कि मिलकर अच्छा प्रदर्शन करें। इस दौरे के उद्देश्यों में से एक है निरंतरता बनाना और कल हमारे लिए यही चुनौती होगी। श्रृंखला का दूसरा मैच रविवार को खेला जाएगा। आस्ट्रेलिया ने तेज शुरूआत की और पांचवें ही मिनट में बढ़त बना ली जब शार्प ने पहले ही प्रयास में भारतीय गोलकीपर पीआर श्रीजेश को छकाकर गोल दागा। भारतीय टीम ने भी तुरंत इसका जवाब दिया जिसमें अमित रोहिदास ने बाईं ओर से शानदार मूव बनाया लेकिन आस्ट्रेलियाई रक्षण द्वारा गेंद को सर्कल के अंदर ही रोक दिया गया।

आकाशदीप ने फिर 11वें मिनट में भारत को बराबरी पर ला दिया जब हार्दिक सिंह ने उनके लिए शानदार मौका बनाया। दूसरे क्वार्टर के छह मिनट बाद आस्ट्रेलिया ने फिर अपनी बढ़त कायम कर ली जिसमें भारतीयों के खराब रक्षण का हाथ रहा। भारतीय डिफेंडर एक क्रास को रोकने में असफल रहे और इफरॉम्स ने इसे चतुराई से डिफ्लेक्ट किया और गेंद नेट में पहुंच गई। आकाशदीप फिर भारत के बचाव में आए और उन्होंने 27वें मिनट में तेज रिवर्स हिट से स्कोर 2-2 से बराबर कर दिया। हाफ टाइम से तुरंत पहले आस्ट्रेलिया को एक पेनल्टी कॉर्नर मिला लेकिन भारत के दूसरे गोलकीपर कृष्ण बहादुर पाठक काफी सतर्क थे और उन्होंने खतरे को टाल दिया। छोर बदलने के एक मिनट बाद ही हरमनप्रीत ने पेनल्टी कॉर्नर से गोल कर भारत को मैच में पहली बार आगे कर दिया। भारतीयों ने लगातार पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए लेकिन टीम दोनों मौके गंवा बैठी। मैच के 41वें मिनट में आस्ट्रेलिया ने एक और पेनल्टी कॉर्नर हासिल किया जिस पर क्रेग ने रिबाउंड पर गोल दागा जबकि श्रीजेश ने पहली ड्रैग फ्लिक का बचाव किया था। घरेलू टीम ने लगातार दबदबा बनाए रखा और कुछ पेनल्टी कॉर्नर भी हासिल किए लेकिन इनमें गोल नहीं कर पाई।

विश्व टीम शतरंज : भारत कांस्य पदक के प्लेऑफ में स्पेन से हारा

यरूशलम। भारत को शनिवार को यहां फिडे विश्व टीम शतरंज चैम्पियनशिप में दो दौर के कांस्य पदक प्लेऑफ के टाई रहने के बाद स्पेन से टाईब्रेक में।-3 से हार का सामना करना पड़ा। दोनों दौर में टीमों ने 2-2 से ड्रा खेला। लेकिन जेमी सांतोस लातासा और डेविड एंटन गुईजारो ने क्रमशः विदित संतोष गुजराती और निहाल सरीन को ब्लिट्ज टाई ब्रेक में हराकर स्पेन को बढ़त दिलाई। अन्य बाजियों में एस एल नारायणन ने एलेक्सेई शिरोव से ड्रा खेला और अभिजीत गुप्ता ने मिगुएल सांतोज रूईज से अंक बांटे। इसेस स्पेन ने शनिवार को 3-। के अंतर से जीत दर्ज की। पहले दौर में गुजराती ने सांतोस लातासा से जबकि सरीन ने गुईजारो से अंक बांटे। नारायणन और दानिल युफा तथा गुप्ता और सांतोस रूईज के बीच मुकाबले भी ड्रा रहे।

दलित साहित्य

दलित समाज की आवाज अब सुनी जा रही है

दलित समाज को अपने लेखन का केंद्र बनाने वाले और पश्चिम बंगाल में दलित साहित्य के अगुवा लेखक मनोरंजन ब्यापारी का कहना है कि दलितों को लेकर समाज की सोच में बदलाव आया है और अब उनकी आवाज सुनी जा रही है। असम, लखनऊ, दिल्ली और इलाहाबाद की सड़कों पर एक जमाने में रिक्शा चलाकर पेट भरने वाले मनोरंजन ब्यापारी पश्चिम बंगाल के प्रारंभिक दलित लेखकों के बीच एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। रिक्शाचालक से विधानसभा सदस्य बनने और वर्ष 2022 के प्रतिष्ठित जेसीबी साहित्य पुरस्कार के लिए शीर्ष पांच लेखकों में चुने जाने को वह दलित समाज के उत्थान के रूप में देखते हैं।

मनोरंजन ब्यापारी ने कहा, समाज की सोच में व्यापक बदलाव हुआ है। अब दलितों की आवाज सुनी जा रही है। यही कारण है कि मुझ जैसा निपट गंवार, देहाती दलित लेखक, साहित्य के ऐसे राष्ट्रीय मंच तक पहुंच पाने में सफल हुआ है। उनके बांग्ला भाषा में लिखे गए उपन्यास ईमान को वर्ष 2022 के जेसीबी साहित्य पुरस्कार के शीर्ष पांच दावेदारों में शामिल किया गया था। पच्चीस लाख रुपए की धनराशि वाले इस पुरस्कार की घोषणा पिछले दिनों दिल्ली में आयोजित एक समारोह में की गई। यद्यपि, वह पुरस्कार नहीं जीत पाए, लेकिन इस मंच पर पहुंचने को वह दलित समुदाय को समाज में मिल रही पहचान और सम्मान के रूप में देखते हैं। उन्होंने कहा, शॉर्टलिस्ट होना ही मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। दलित समाज उनके लेखन का केंद्र बिंदु रहा है। पुरस्कार समारोह से इतर उन्होंने बातचीत में कहा, भद्र लोक कहे जाने वाले पश्चिम बंगाल में दलितों को बहुत उत्पीड़न झेलना पड़ा है। मैं जन्म से दलित हूं और केवल एक दलित ही सामाजिक ताकतों द्वारा कुचले जाने के दर्द को महसूस कर सकता है। वह कहते हैं कि दलित साहित्य को दलित जीवन पर ही आधारित होना चाहिए।

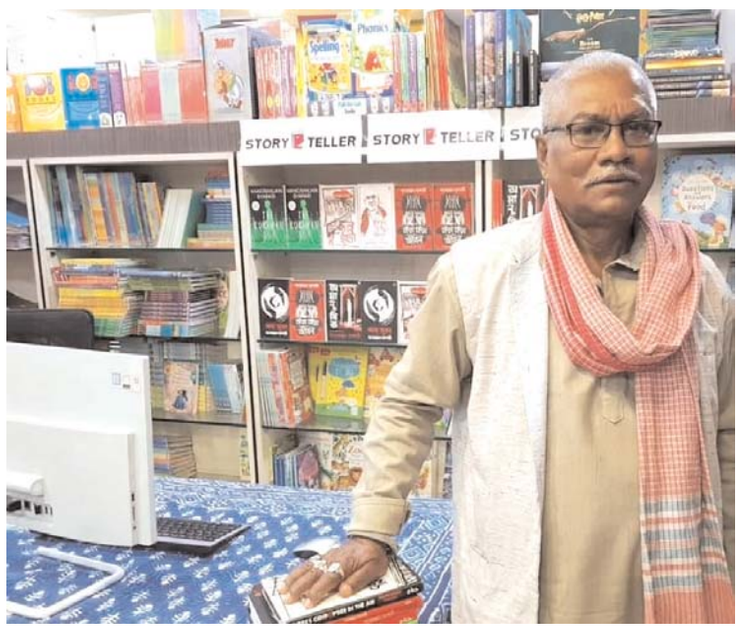

दलित साहित्य के समक्ष मौजूद मुद्दों पर मनोरंजन ब्यापारी ने कहा, इज्जत, सम्मान और बराबरी का दर्जा सबसे प्रमुख मुद्दा है। और ये न केवल दलित लेखक को, या दलित साहित्य को, बल्कि पूरे दलित समाज को मिलना चाहिए।

पश्चिम बंगाल अकादमी से 2014 में सुप्रभा मजूमदार पुरस्कार और 2015 में शर्मिला घोष स्मृति पुरस्कार से सम्मानित हो चुके मनोरंजन ब्यापारी का अपना जीवन किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं है। वह बताते हैं कि रिक्शा चलाने के दौरान वह संयोग से प्रतिष्ठित लेखिका महाश्वेता देवी के संपर्क में आए और उन्होंने ही उनको अपनी पत्रिका बर्तिका में लिखने को कहा और यहीं से उनकी किस्मत का चक्का एक अलग ही दिशा में घूम गया। हालांकि, उन्हें सबसे पहले पहचान क्या बंगाल में दलित लेखन है शीर्षक से एक लेख इकॉनोमिक एंड पॉलिटिकल वीकली में प्रकाशित होने के बाद मिली।

उन्नीस सौ पचास (1950) में बांग्लादेश(तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान) के बारिसाल में नामशूद्र जाति में पैदा ब्यापारी जब तीन साल के थे, तो उनका परिवार पश्चिम बंगाल में आकर बस गया था। पहले इनका परिवार बाकुंड़ा जिले में शिरोमणिपुर शरणार्थी शिविर में आकर रहा, लेकिन बाद में उन्हें दक्षिण 24 परगना के घोलाडोलटाला शरणार्थी शिविर में भेज दिया गया। हालांकि, मनोरंजन 14 साल की उम्र में ही घर छोड़कर चले गए और असम, लखनऊदिल्ली और इलाहाबाद की सड़कों पर रिक्शा खींच कर अपना गुजारा किया।

दंडकारण्य में नक्सलियों के साथ रहने के बाद वह 1973 में कोलकाता आ बसे। नक्सलियों से संपर्कों के कारण उन्हें जेल की सजा भुगतनी पड़ी और यहीं उन्होंने पढ़ना-लिखना सीखा। मजदूर नेता शंकर गुहा नियोगी के करीबी संपर्क में रह चुके मनोरंजन बताते हैं कि उनका उपन्यास ईमान जेल प्रवास के दौरान संपर्क में आए एक कैदी की कहानी है, जो अपनी मां को सजा होने के कारण बहुत छुटपन में उसके साथ जेल चला जाता है, लेकिन मां के मरने के बाद जब उसे जेल से बाहर भेजा जाता है तो वह बाहर की दुनिया की अराजकता देखकर घबरा जाता है और जेल में लौटना चाहता है।

ईमान का अनुवाद अरूणव सिन्हा ने किया है। उनकी बंगाली में लिखी गई और अंग्रेजी में अनूदित आत्मकथा इंटेरोगेटिंग माई चांडाल लाइफ को 2019 में द हिंदू लिटरेरी प्राइज प्रदान किया गया था। वर्ष 2022 का जेसीबी साहित्य पुरस्कार उर्दू लेखक खालिद जावेद को उनके उपन्यास द पैराडाइज ऑफ फूड के लिए प्रदान किया गया। पुरस्कार की दौड़ में शामिल अन्य रचनाओं में बुकर पुरस्कार विजेता गीतांजलि श्री का उपन्यास द टूम्ब आफ सैंड भी शामिल था।

स्मृतिशेष

लेखन से जुड़ी हस्तियों ने मिडलैंड बुक शॉप के संस्थापक मिर्जा यासीन बेग को याद किया

हैदराबाद के सुल्तान बाजार में किताबों की अपनी दुकान बंद कर 1970 में दिल्ली आए बेग ने राष्ट्रीय राजधानी के कनॉट प्लेस में एक छोटी गुमटी से काम शुरू किया, जो एक फूलवाले की थी।

मिडलैंड बुक शॉप के संस्थापक मिर्जा यासीन बेग को लेखन से जुड़े लोगों ने याद करते हुए उन्हें एक विद्वान, दिल्ली का प्रिय पुस्तक विक्रेता और एक पुस्तक प्रेमी बताया। बेग का बृहस्पतिवार को निधन हो गया था। वह 94 वर्ष के थे। हैदराबाद के सुल्तान बाजार में किताबों की अपनी दुकान बंद कर 1970 में यहां आए बेग ने राष्ट्रीय राजधानी के कनॉट प्लेस में एक छोटी गुमटी से काम शुरू किया, जो एक फूलवाले की थी। पुस्तकों और पुस्तक प्रेमियों के प्रति उनके प्रेम को लेखक-इतिहासकार पुष्पेश पंत ने बड़े गौर से देखा था जो उस समय कॉलेज के छात्र थे। पंत ने कहा, मैं फुटपाथ पर पसंदीदा किताबें खोजता था। बेग ने जनपथ पर फुटपाथ पर पुरानी किताबें बेचना शुरू कर दिया था। कभी-कभी मेरे पास कुछ पैसे होते थे लेकिन अक्सर मेरे पास पैसे नहीं होते थे और वह कहते थे, किताब ले लो। उन दिनों पेपरबैक की कीमत लगभग 2-2.5 रुपए होती थी और मैं उन्हें 25 पैसे, 50 पैसे, जो कुछ भी मेरे पास होते थे, दे देता था और बाकी का भुगतान बाद में करता था। उन्होंने कहा कि लगभग 50 साल पहले एक उदार पुस्तक विक्रेता के साथ एक युवा छात्र का जुड़ाव हुआ था और बाद में यह एक पारिवारिक संबंध बन गया था। उन्होंने कहा कि इसके बाद उनके बेटे और बेटी ने बेग के बेटों और पोतों से किताबें खरीदीं। उन्होंने बताया लेकिन वह कहते थे कि किताब ले जाओ और पढ़ कर लौटा देना। कुछ तो लौटाते थे लेकिन कुछ किताब ले कर नदारद हो जाते थे। फिर भी बेग की दयालुता और विनम्रता कम नहीं हुई। ऐसे लोग बिरले ही होते हैं। बेग ने पिछले कुछ वर्षों में दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में किताबों की चार दुकान खोली थीं, जिन्हें अब उनके बेटे और पोते चला रहे हैं। जबकि वह अरबिंदो मार्केट स्थित दुकान पर नियमित रूप से जाते थे।

लेखक राणा सफवी ने कहा, मिर्जा साहब ने किताबों की खरीदारी को एक व्यक्तिगत अनुभव बना दिया है। उन्होंने कहा, उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्एक ग्राहक को उनकी व्यक्तिगत रुचियों को पूरा करने वाली पुस्तकें दिखाई जाएं। बेग को याद करते हुए, फिल्म निर्माता एवं लेखक सोहेल हाशमी ने कहा, उस सज्जन में कोई अलग विशेषता थी - जिस तरह से उन्होंने किताबों को संभाला, जिस तरह से उन्होंने उन्हें उठाया। आप जानते हैं कि उन्हें किताबों से प्यार था। वह अन्य पुस्तक विक्रेताओं की तरह नहीं थे। लेखक विलियम डेलरिम्पल कहते हैं कि शानदार, करिश्माई व्यक्तित्व वाले बेग लेखकों को हमेशा स्वागत करते थे। पंत के अनुसार, बेग पाठकों की बेहद कद्र करते थे और उनकी दुकान में बैठ कर किताबें आराम से पढ़ी जा सकती थीं।

लेखक अमीश त्रिपाठी ने सोशल मीडिया पर बेग को श्रद्धांजलि देते हुए लिखा कि उन्हें जब सबसे ज्यादा सहयोग की जरूरत थी तब बेग ने उन्हें पूरा सहयोग दिया। लेखिका नमिता गोखले ने उन्हें किताबों की दुकान की आत्मा बताया वहीं मृणाल पांडे ने कहा कि उनकी विरासत बेहद समृद्ध है। बेग के पार्थिव शरीर को शुक्रवार को निजामुद्दीन के पंज पीरन कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक किया गया। उनके परिवार में उनकी पत्नी, पांच बेटियां और चार बेटे हैं।

लोक परंपरा

अपने लोकगीतों को विश्व पटल पर ले जाने की तैयारी कर रहा है बिहार

बिहार सरकार प्रदेश के लोकगीतों यथा झिझिया, हुरका, मगही झूमर और कजरी के साथ-साथ मिथिला के समा-चकवा उत्सव का जादू फिर से बिखेरने के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) के साथ मिलकर इन्हें विश्व पटल पर ले जाने की तैयारी कर रही है। आईसीसीआर के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करने के कुछ दिनों बाद बिहार सरकार के कला और संस्कृति विभाग ने आईसीसीआर के क्षितिज श्रृंखला कार्यक्रम (एचएसपी) के हिस्से के तौर पर प्रदर्शन के लिए प्रसिद्ध लोक नर्तकों, गायकों और कलाकारों को विदेश भेजने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। एमओयू के अनुसार आईसीसीआर में राज्य के कलाकारों की भागीदारी से बिहार को भारत और विदेशों में अपने कला रूपों, प्रतिभा को बढ़ावा देने में सहायता करेगा।

बिहार के कला, संस्कृति और युवा विभाग के अतिरिक्त सचिव दीपक आनंद ने बताया कि आईसीसीआर विदेशों में प्रमुख अंतरराष्ट्रीय त्योहारों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए राज्य सांस्कृतिक मंडलियों के दौरे की सुविधा भी प्रदान करेगा। उन्होंने कहा, झिझिया, हुरका, मगही झूमर, कजरी, मिथिला के समा-चकवा उत्सव आदि का प्रदर्शन करने वाले लोक कलाकारों का चयन किया जाएगा और उन्हें एचएसपी कार्यक्रम के तहत प्रदर्शन के लिए विदेश भेजा जाएगा। आनंद ने कहा कि इसके अलावा कजरी, झरनी नृत्य और सोहर खेलावाना बिदेसिया गाने के लोक कलाकारों, मंडलियों को भी प्राथमिकता दी जाएगी।

उन्होंने कहा, बिहार के पास दुनिया को दिखाने के लिए बहुत कुछ है। दुनिया के सबसे पुराने क्षेत्रों में से एक होने के नाते बिहार अपनी अद्भुत प्रोफ़ाइल बनाए रखता है। राज्य के लोक गीत और नृत्य भारत के बाहर काफी लोकप्रिय हैं। उन्होंने बताया, झिझिया एक प्रार्थना नृत्य है जिसकी उत्पत्ति बिहार के कोशी क्षेत्र में हुई और सूखे के दौरान किया जाता है। मगही झूमर नृत्य आमतौर पर युगल के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जहां पुरुष एवं महिला नर्तक राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में पति और पत्नी की भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि मिथिला क्षेत्र का प्रसिद्ध समा-चकवा एकता का पर्व है और आमतौर पर छठ पूजा की रात से शुरू होने वाला यह उत्सव काफी लोकप्रिय है।

आनंद ने कहा कि इसके अलावा बिदेसिया बिहार का एक और लोक प्रदर्शन है जो भारत के बाहर भी बहुत लोकप्रिय है। उन्होंने कहा, साहित्यिक, बौद्धिक और शैक्षणिक क्षेत्रों, मूर्तिकला, व्यंजन, वस्त्र, हस्तशिल्प और वास्तुकला के अन्य क्षेत्रों में नई युवा प्रतिभाओं सहित उत्कृष्ट सांस्कृतिक समूहों एवं कलाकारों की पहचान करने में आईसीसीआर की सहायता करना भी समझौता ज्ञापन का हिस्सा है। आनंद ने कहा कि बिहार में राज्य पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए विदेशी छात्रों के अध्ययन शिविरों और पर्यटन की सुविधा भी समझौता ज्ञापन का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि इससे बिहार (भारत) और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध और आपसी समझ मजबूत होगी।

पुस्तक

'किसान आंदोलन ग्राउंड जीरो' मौजूदा दौर का अहम दस्तावेज

युवा पत्रकार मनदीप पुनिया की किताब का प्रेस क्लब में हुआ लोकार्पण

राजकमल प्रकाशन के उपक्रम 'सार्थक' ने प्रकाशित की है 'किसान आन्दोलन : ग्राउंड जीरो 2020-21'

यह पिछले दिनों हुए ऐतिहासिक किसान आंदोलन के दस्तावेजीकरण का पहला प्रयास है। यह फील्ड रिपोर्टिंग का नायाब नमूना है,मनदीप नौजवान और बेबाक पत्रकार हैं, उन्होंने इस किताब में किसान आंदोलन की डेली डायरी लिखी है।यह किताब हमारे दौर का अहम दस्तावेज है, किसान आंदोलन ऑर्गेनिक आंदोलन था, किसी सियासी पार्टी में यह आंदोलन पैदा करने की कूवत नहीं थी, यह आम जनता ने खड़ा किया था। यह कहना था लेखक मनदीप पुनिया की किताब 'किसान आन्दोलन ग्राउंड जीरो 2020-21' के लोकार्पण पर उपस्थित वक्ताओं का।

इस देशव्यापी और देश के इतिहास के सबसे सफल आन्दोलन की निष्पक्ष भाव से पड़ताल करती लेखक मनदीप पुनिया की किताब 'किसान आन्दोलन ग्राउंड जीरो 2020-21' का लोकार्पण प्रेस क्लब ऑफ़ इंडिया में गुरूवार शाम को हुआ। इस मौके पर वक्ताओं में प्रो मनोज कुमार झा-राज्यसभा सदस्य, प्रो.आनंद प्रधान, एवं डॉ. नवशरण कौर-समाजशात्री-सामाजिक आदि मौजूद रहे। इस मौके पर बोलते हुए प्रो. आनंद प्रधान ने कहा, यह पिछले दिनों हुए ऐतिहासिक किसान आंदोलन के दासतावेजीकरण का पहला प्रयास है जो दूसरों को भी प्रेरित करेगा। पुनिया ने जिस हरियाणवी की छौंक वाली जीवंत भाषा में यह किताब लिखी है वह हिंदी की परिधि का विस्तार करती है। फणीश्वरनाथ रेणु की याद दिलाती है, यह फील्ड रिपोर्टिंग का नायाब नमूना है। मनदीप ने अपनी जमीनी रिपोर्टिंग के जरिये न केवल देश दुनिया को भारतीय किसानों की समस्याओं से, उनके संघर्ष से अवगत कराया है, बल्कि पत्रकारिता में व्याप्त मौजूदा जड़ता को तोड़ती है और जनांदोलनों से जोड़कर उसको नया तेवर और अर्थवत्ता प्रदान करती है।जब आज के समय में पत्रकारिता सिर्फ 200-300 शब्दों के बीच में सिमट के रह गयी है ऐसे समय में मनदीप पुनिया ने धैर्य रखकर विस्तार से एक इतनी लंबी किताब लिख डाली है।

डॉ. नवशरण कौर ने कहा, मनदीप नौजवान और बेबाक पत्रकार हैं। उन्होंने इस किताब में किसान आंदोलन की डेली डायरी लिखी है, उन्होंने जमीनी रिपोर्टिंग की है। यह गौर करना चाहिए कि मनदीप ने किनकी तरफ खड़े होकर यह रिपोर्ताज लिखा है, इस किताब से उन्होंने अपेक्षाएं बढ़ा दी है।

किसान आंदोलन में अनेक संगठन शामिल थे, उनके बीच मतभेद भी थे पर उन्होंने तमाम मुश्किलों के बीच एकता बनाये रखी, इसको रेखांकित किया जाना चाहिए। किसान जत्थेबंदियों का लंबा इतिहास है, वे आज भी संघर्षरत हैं, उसमें बुजुर्ग से लेकर युवा सभी सक्रिय रहे हैं। उनको विभाजित करके नहीं देखा जाना चाहिए। मनदीप ने बहुत मेहनत से यह किताब लिखी है, उन्होंने ग्राउंड रिपोर्ट लिखी है। उम्मीद है वे यह भी लिखेंगे कि जिस ग्राउंड की रिपोर्ट उन्होंने दी वह ग्राउंड किस तरह तैयार हुई। यह सिक्खों का आंदोलन नहीं था,यह देश के उन किसानों का आंदोलन था जो अपने हक के लिये लड़ रहे थे।

प्रो. मनोज कुमार झा ने कहा, मनदीप ने जो देखा वह लिखा है। मैं राजकमल प्रकाशन समूह को भी धन्यवाद देता हूं कि वह ऐसे दौर में ऐसे विषयों पर लगातार किताबें छाप रहे हैं जब यह खासा जोखिम भरा हो गया है। यह किताब हमारे दौर का अहम दस्तावेज है। किसान आंदोलन ऑर्गेनिक आंदोलन था, किसी सियासी पार्टी में यह आंदोलन पैदा करने की कूवत नहीं थी, यह आम जनता ने खड़ा किया था। किसान आंदोलन ने सत्ता के शीर्ष पर बैठे बहुमत का दम्भ रखने वालों को झटका दिया। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में विपक्ष सिर्फ सदन में ही नहीं होता है, जब जरूरत महसूस होगी वह आपको सड़क पर भी दिखेगा और ऐतिहासिक किसान आंदोलन इसका उदाहरण है। इसके बाद उन्होंने तीन कृषि कानूनों के पारित होने के दिन सदन के माहौल को याद किया। आखिर में उन्होंने कहा कि बहुत अच्छा होता अगर हम संसद की इमारत के अंदर ही देश की सभी समस्याओं का हल ढूंढ़ पाते, पर अब यह संभव नहीं रह गया है।

लेखक मनदीप पुनिया ने कहा, यह किताब इसलिए लिखनी शुरू कि ताकि किसानों का सरकार के प्रति गुस्सा, उनके नेताओं की सरकार के साथ इंटरेक्शन, सरकार का उनके प्रति रवैया और खुद किसानों की किसान नेताओं के साथ इंटरेक्शन को समझा जा सके. यह एक रिपोर्ताज है, जिसमें मैंने किसान आंदोलन की शुरुआत से लेकर आखिर तक, हर जरूरी पहलू को कवर करने की कोशिश की है।

इस अवसर पर अपने विचार रखते राजकमल प्रकाशन समूह के अध्यक्ष अशोक महेश्वरी ने कहा, समाज लगातार बदल रहा है. हरेक बदलाव के साथ कई सवालों के जवाब मिल जाते हैं तो कुछ नए सवाल, कुछ नए मुद्दे सामने आ जाते हैं. ऐसी हलचलों से, ऐसे मुद्दों से अपने पाठकों को अवगत कराना हम जरूरी समझते हैं. समाज की लोकतांत्रिक बुनियाद की मजबूती का संकेत उसमें होने वाले में बहस मुबाहिसों से मिलता है. बहस मुवाहिसे बेहतर समाज के लिए आवश्यक हैं। इन्हीं सोच के कारण हमने सार्थक से मनदीप पुनिया की यह किताब छापी. 2020-21 का किसान आंदोलन आजादी के बाद की सबसे अहम घटनाओं में से एक साबित हुआ। ऐसी किसी भी महत्वपूर्ण परिघटना के बारे में पाठकों को जानकारी देना हमारी प्राथमिकता में रहा है। अपने 75 साल की यात्रा में राजकमल प्रकाशन ने अपनी प्राथमिकता से कभी किनारा नहीं किया। मनदीप की किताब का प्रकाशन इसका नवीनतम प्रमाण है।

किताब के बारे में

लेखक मनदीप पुनिया की यह किताब पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, छतीसगढ़ और करीब पूरे देश के किसानों द्वारा मुख्य रूप से 2020 में भारतीय संसद द्वारा पारित तीन कृषि अधिनियमों के विरुद्ध चल रहे विरोध की गहन पड़ताल करती है। क्या था किसान आन्दोलन, जिसकी धमक दिल्ली और देश ही नहीं, विदेशों तक महसूस की गई। कैसे वह शुरू हुआ, कैसे वह आगे बढ़ा, और कैसे वह जीता! कैसे पूर्ण बहुमत के शिखर पर फूली बैठी सरकार को उसने झुकने पर मजबूर किया! यह किताब इन सभी सवालों का जवाब देती है।

कला प्रदर्शनी

कला प्रेमियों के लिए एकल प्रदर्शनी गेजिंग थ्रू द पैरलैक्स

ललित कला अकादमी में एकल कला प्रदर्शनी गेजिंग थ्रू द पैरलैक्स के जरिए मुंबई की कलाकार सुस्मिता शर्मा कला प्रेमियों का ध्यान आकर्षित कर रही हैं। अकादमी में उनके 55 कार्यों का प्रदर्शन किया जा रहा है। शर्मा ने कहा, मुझे ग्राफिक प्रिंट-मेकिंग माध्यम के साथ काम करना अच्छा लगता है। रूप के तत्वों के रूप में भावनात्मक रेखाएं और उन्नयन, बनावट और रंग मेरी अभिव्यक्ति के लिए सबसे गूढ़ और संतोषजनक हो जाते हैं।

शर्मा का मानना है कि प्रिंट बनाने की कला को मुख्यधारा की कला की दुनिया में अभी तक उसकी वाजिब पहचान नहीं मिली है।अपने काम के बारे में सुस्मिता ने कहा, गेज़िंग थ्रू द पैरलैक्स लोगों और घटनाओं के कई अस्तित्वों में मेरी खोज है। यह प्रदर्शनी 22 नवंबर को शुरू हुई और सोमवार तक चलेगी।

कला सम्मान

असम के पारंपरिक कला रूपों के प्रतिपादक समेत अन्य कलाकार किए जाएंगे सम्मानित

असम के पारंपरिक नृत्य और नाट्य विधाओं के अनुभवी, युवा कलाकारों से लेकर विभिन्न क्षेत्रों के कलाकारों को संगीत नाटक अकादमी द्वारा सम्मानित किया जा रहा है। असम के सोलह कलाकारों को शुक्रवार को परफॉर्मिंग आर्ट्स के लिए संगीत नाटक अकादमी द्वारा घोषित विभिन्न श्रेणियों के पुरस्कारों के लिए नामित किया गया है। सत्रिया नृत्य प्रतिपादक रंजुमोई सैकिया, अभिनेता प्रांजल सैकिया और रंगमंच निर्देशक अबिनाश सरमा को 2019 के संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार के लिए नामित किया गया है। इसी श्रेणी में वर्ष 2021 के लिए राज्य के पारंपरिक नाटक अंकिया भौना में योगदान के लिए गुनीद्र नाथ ओझा को सम्मानित किया गया है। बिहू गीतों और इतिहास के लिए प्रसन्ना गोगोई को लोक संगीत और नृत्य श्रेणी में 2021 के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वर्ष 1952 से प्रदान किए जाने वाले अकादमी पुरस्कारों में एक ताम्रपत्र और अंगवस्त्रम के अलावा एक लाख रुपए की राशि होती है। राष्ट्रपति एक विशेष अलंकरण समारोह में कलाकारों को सम्मानित करेंगी। राज्य के छह कलाकारों को उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार के लिए नामित किया गया है, जिसे 2006 में 40 साल से कम उम्र के कलाकारों के लिए शुरू किया गया था।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार द्वारा राज तरूण आफसेट, एलजीएफ 5-14, अंसल सिटी सेंटर, निकट यूपी प्रेस क्लब, हजरतगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा ग्राम भुसना, पोस्ट भुसना, तहसील महमूदाबाद जनपद सीतापुर (उ0प्र0) से प्रकाशित। **सम्पादक : अशोक कुमार (मो. 9651086162) उप सम्पादक : प्रमोद कुमार शुक्ल (मो. 9450497420)**। इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.वी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न सभी विवाद सीतापुर न्यायालय के आधीन होंगे।